आज़ाद हिन्द फ़ौज

INA

रामशङ्कर त्रिपाठी

प्रकाशक
लोकमान्य कार्य्यालय
१६० हरीसन रोड
कलकत्ता।

मूल्य ३)

मुद्रक
शशिभूषण मिश्र
हिन्दुस्थान प्रेस
७ शम्भूमल्लिक लेन
कलकत्ता।

भूमिका

विदेशी शासन से भारत को मुक्त करने के लिये हमारे देशवासियों ने सर्व प्रथम १८५७ में साम्प्रदायिक भेद-भाव भूलकर सशस्त्र संग्राम किया था। दुर्भाग्यवश उसमें सफलता नहीं मिली। १८८५ से कांग्रेस शान्तिपूर्ण उपायों से देशको स्वाधीन बनाने का आन्दोलन कर रही है। महात्मा गान्धीजी के नेतृत्व में कई बार भारत अहिंसा नीति द्वारा ब्रिटिश साम्राज्य से लड़ चुका है और आज भी हमारा स्वतन्त्रता संग्राम जारी है। यद्यपि इस उपाय से भी अभी तक हम अपने प्यारे देशको स्वाधीन नहीं बना सके। द्वितीय विश्व महायुद्ध में नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने अपने अन्य सहयोगियों के साथ आजाद हिन्द सेना का निर्माण किया और १९४३ के २१ अक्तूबर को प्राथमिक आजाद हिन्द सरकार की स्थापना कर ब्रिटिश साम्राज्य के पंजे से भारत को मुक्त करने के लिये सशस्त्र संग्राम छेड़ा। यद्यपि यह प्रयत्न भी सफल नहीं हो सका, किन्तु फिर भी अनेक दृष्टियों से यह अभिनव था। इसमें पूर्व एशियाके सभी भारतीयों और जापान द्वारा युद्ध बन्दी बनाये गये भारतीय सैनिकों की पर्याप्त संख्या का पूरा सहयोग था। साम्प्रदायिक एकता के बिचार से तो यह संगठन अद्भुत था। इसमे हिन्दू-मुसलमान ईसाई सिख और पारसी आदि सभी

सम्प्रदायों के लोग केवल भारतीय के रूप में शामिल थे। और तो और नेताजीकी आजाद हिन्द फौजमें एक ऐंग्लोइण्डियन बटालियन भी थी, जिसके अध्यक्ष कर्नल स्ट्रेसी थे। बताया जाता है कि "आत्मसमर्पण के उपरान्त एक ब्रिटिश जेनरल ने कर्नल स्ट्रेसीसे पूछा कि आप में तो ब्रिटिश रक्त है, आपने इस सेनामे शामिल होना क्यों स्वीकार किया ? इसपर कर्नल स्ट्रेसीने उत्तर दिया कि मैं भारत में पैदा हुआ हूं और वहीं मुझे मरना है। मेरे पिता भारतीय थे और माता अंग्रेज। पुत्रमें पिता के ही रक्त की प्रधानता होती है। भारत के सभी ऐंग्लो-इण्डियन अपने को भारतीय मानते हैं और उसी देशको अपनी मातृभूमि मानते हैं। मैंने जो कुछ किया है अपने साम्प्रदाय की भावनाओं का सम्मान करके ही।" ब्रिटिश जेनरल यह सुनकर चुप हो रहा। फौजी नौकरी पर जाने से पूर्व कर्नल स्ट्रेसी भारतमें चिकित्सा विभाग में अति उच्च पदपर नियुक्त थे। इस सैनिक संगठन में न खान-पान का प्रश्न था—और न पूजा-अर्चा का। आदि से अन्त तक इसका यह राष्ट्रीय स्वरूप बना रहा। आसाम की एक महती सभा में भाषण देते हुए देशमान्य पण्डित जवाहरलालजी नेहरू ने ठीक ही कहा है कि भारतमे विदेशी शासन में जो साम्प्रदायिक एकता सम्भव नहीं हुई, बाहर आजाद हिन्द सेना ने वह एकता करके सिद्ध कर दिया कि स्वतन्त्र होने पर भारत अनायास इन सब प्रश्नों को सुलझा सकता है। झासी की रानी रेजीमेन्ट और बाल सेना बनाकर नेताजी ने और भी चमत्कार दिखाया। कोमलांगी नारियों ने

भारतीय स्वाधीनता के लिये बन्दूक उठाई और सुकुमार बालकों ने अपने रक्त से स्वाधीनता-देवीका तर्पण किया। आज सारा भारत इस सेना और इसके सेनापति नेताजी के गीत गा रहा है। कांग्रेस इनके छुड़ाने के लिये बड़ा भारी यत्न कर रही है। मुस्लिम लीग, हिन्दू महासभा, अकाली दल तथा देशके सभी राजनीतिक दल आजाद हिन्द सेनाके वीरतापूर्ण कार्यों पर मुग्ध हैं और इस बातमें सब सहमत हैं कि इस वीरसेनाके सब सैनिक और सेनानी जिनका दिल्लीके लाल किले तथा अन्य फौजी अदालतोंके समक्ष विचार हो रहा है; अवश्य छोड़ दिये जायं। अबतक ३ फौजी अदालतें बन चुकी हैं, जिनमें एकमें कर्नल शाहनवाज, कैप्टेन सहगल और कैप्टेन ढिल्लन का प्रश्न है। (अब ये तीनों सरदार प्रधान सेनापति द्वारा मुक्त कर दिये गये हैं।) यह मामला समाप्त प्राय है और शीघ्र ही परिणाम घोषित होगा। दूसरी में चित्राल (काश्मीर) के शासकके भाई कैप्टेन बुर्हानुद्दीनपर मामला चल रहा है, और तीसरमें कैप्टेन सिघारा सिंह आदिका विचार हो रहा है। जर्मनी में जो आजाद हिन्द सेना बनी थी, उसके कुछ सैनिक तो बहादुरगढ़ कैम्पमें लाकर रखे गये हैं और कुछ यूरोप से लाये जानेवाले हैं। इनपर भी मामला चलाये जाने की सम्भावना है। यद्यपि भारत के उपमन्त्री मि० हेंडर्सन ने खुलासा कहा है कि आजाद हिन्द सैनिकों पर सम्राट के विरुद्ध युद्ध छेड़नेके कारण मामला नहीं चल रहा है। उन पर और भी अभियोग हैं, किन्तु भारत के सरकारी रुख और कार्यों को

देखते हुए मि० हेंडर्सन की उक्ति पर विश्वास करना कठिन है। बकाक में सहस्रों आजाद हिन्द सैनिक पड़े हुए हैं, किन्तु उन्हें भारत आनेकी सुविधा नहीं मिल रही है। छूटे हुए हजारों आजाद सैनिकों के रुपये—जो विविध फण्डों से उनको मिले हैं, सरकार ने जब्त कर लिये हैं। यू० पी० के गवर्नर सर मारिस हैलेट खुल्लम खुल्ला इन सैनिकों को देशद्रोही कह चुके हैं और उनके आदेश से प्रान्त भरकी पुलिस को सूचित किया गया है कि आजाद सैनिक जापानी साम्राज्यवाद के समर्थक हैं। ये भविष्य मे बड़ा उत्पात कर सकते हैं। अतः छूटे हुए आजाद सैनिकों की सूची बनायी जाय और उनपर निगाह रखी जाय। ऐंग्लो-इण्डियन पत्र अभी तक इस सेनाको देशद्रोही सिद्ध करनेमें लगे हैं। फिर भी जब कांग्रेस और समस्त देशवासी इनके साथ हैं, तो अच्छे ही परिणाम की आशा है। हमारे पाठक इन सबका पूरा विवरण अगले पृष्ठोंमें पढ़ेंगे। मैंने अङ्ग्रेजी, बंगला, मराठी, गुजराती और हिन्दी के विविध पत्रों और 'जय हिन्द' डायरी से इसका संग्रह और सम्पादन किया है। मैं इन सबके सम्पादकोंका हृदय से कृतज्ञ हूं। इस पुस्तक के चित्र प्राप्त करने में बंगाल आटोटाइप कं० के श्री० ए० के० सेनगुप्त तथा लेखन और मुद्रण कार्यमें लोकमान्यके श्रीकृष्णकान्त मिश्रसे बडी सहायता मिली है। मैं इन सब मित्रोंको हृदयसे धन्यवाद देता हूं। आजाद हिन्द सेना, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस तथा उनके युद्ध, शासन और संगठन आदि सभी विषयों पर राष्ट्रीय दृष्टिकोण से प्रकाश

डालने का यत्न किया गया है। फिर भी मैं दावा नहीं कर सकता कि इसके संग्रह और सम्पादन में मुझसे कोई भूल नहीं हुई। मैं जो कुछ अपने पाठकों से कहना चाहता हूं, वह यह है कि हिन्दी साहित्य को अपनी समझ और शक्ति के अनुसार मैंने भारतीय स्वाधीनता के लिये जूझने वाले वीरोंकी अनुपम गाथा प्रामाणिक रूपमें देने की चेष्टा की हैं। फिर भी यह इतिहास है अतः इसमें राजनीतिक दृष्टि से अहिंसा और हिंसा का और कोई अर्थ ढूंढ़ना उचित न होगा।

आशा है, हिन्दी माता अपने तुच्छ पुत्रको यह क्षुद्र किन्तु महान् गौरव से परिपूर्ण प्रेम-भेंट स्वीकार करेगी।

जय हिन्द

लोकमान्य, कलकत्ता
१८-१२-४५

—रामशङ्कर त्रिपाठी

विषय सूची



आज़ाद हिन्द फौज के प्रधान सेनापति
नेताजी श्री० सुभाषचन्द्र बोस

भारत में राष्ट्रीय सेना

दिल्ली स्टेशन का दृश्य है। जेलसे बाहर आने के बाद ही पण्डित जवाहरलालजी नेहरू को शिमला सम्मेलन के सम्बन्ध मे शिमला जाना पडा। गाडी बदलने के लिये पण्डितजी जब दिल्ली स्टेशन पर उतरे तो सहसा "जै हिन्द" के घोष से स्टेशन गूंज उठा। पण्डितजी ने देखा कि फौजियों की स्पेशल ट्रेन में बैठे सिपाही यह नारे लगा रहे हैं और समूची गाड़ी पर सुभाषबोस जिन्दाबाद और महात्मा गाधी तथा पं० जवाहरलाल जिन्दाबाद के नारे लिखे हुए हैं। भारतीय जनता के स्वर को सदैव कान लगा कर सुनने वाले जवाहरलाल के लिये सुभाष बोस की भारतीय राष्ट्रीय सेना की यह पहली गूञ्ज थी। शिमला सम्मेलन काल में भी पण्डित जवाहरलाल बहुत लोगों से मिले। भारतीय राष्ट्रीय सेना के

लिये उनकी खोज चलती रही। पञ्जाब के बड़े-बड़े मुसलमान जमींदार घरानों के कई लोग भी पण्डितजी से मिले। यह वे लोग थे जिनके लड़के भारतीय राष्ट्रीय सेना के ऊंचे अफसर हैं। यह भी मालूम हुआ कि अफसर श्रेणी में ५० प्रतिशत से अधिक मुसलमान हैं। परिस्थितियों की जानकारी ने पण्डितजी को भारतीय राष्ट्रीय सेना के सैनिकों के भाग्य के लिये उद्विग्न कर दिया। उन्होंने देखा कि इस सेना के खड़ी होने का कारण था भारत की स्वतन्त्रता प्राप्त करने की उनकी प्रबल इच्छा। भले ही वे जापानियों द्वारा भ्रान्त हो गये हों पर उनकी सच्ची भावनाओं पर सन्देह करना भारी भूल का काम होगा।

उस समय जापान पर न तो ऐटम बम गिरा था और न रूस ने ही जापान पर आक्रमण किया था। आशा थी कि जापान को हराने में अभी वर्ष दो वर्ष और लगेंगे। इसीलिये तत्काल पण्डित जवाहरलाल ने इस सम्बन्ध में कोई वक्तव्य नहीं दिया। उनका विचार था कि ऐसे वक्तव्य से भ्रांति पैदा हो सकती है। सम्पूर्ण भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन एवं महात्मा गांधी तथा पण्डित जवाहरलाल को करोड़ों रुपये खर्च कर विदेशों में जापान का पक्षपाती कहकर बदनाम करने का चर्चिल-एमरी का घृणित प्रयत्न हो चुका था अतः वास्तविक घटनाओं से अनभिज्ञ अमेरिका तथा दूसरे देशों की जनता सम्भवतः भारतीय राष्ट्रीय सेना के सम्बन्ध में पण्डित जवाहरलाल द्वारा इस अवसर पर

दिये गये वक्तव्य का गलत अर्थ लगाती, इसीलिये पण्डित जी चुप रहे।

पर पण्डितजी की खोज चलती रही। इसी बीच अमेरिका एवं चीन के भारत स्थिति उच्च अधिकारी भी पण्डितजी से मिलने आये, साथ ही उनके हाथ में भारतीय राष्ट्रीय सेना के मुख-पत्र "*आजाद हिन्द*" की प्रतियां भी पड़ीं। यह पत्र हिन्दी, उर्दू तथा रोमन में निकलता था। इस पत्र से उपयुक्त सेनाके वास्तविक दृष्टिकोणका पता लगता है। नेहरूजी को "*आजाद हिन्द*" की जो प्रतियां मिली हैं उनमें एक शब्द भी जापानी साम्राज्यवाद के पक्ष मे नहीं कहा गया है। सारा पत्र भारतीय स्वतंत्रता के लिये लड़े जाने वाले युद्ध के सैनिकों, भारत को स्वतंत्रता और पारस्परिक प्रेमकी भावनाओं से ओत-प्रोत है। इस पत्र मे सिंगापुर में भारतीयों की एक विराट सभामें दिये गये सुभाष बाबू के एक भाषण का उल्लेख है। "*गुरूके चरणों पर*" शीर्षक के नीचे महात्मा गांधी का चित्र है और फिर सुभाष बाबू का यह कथन है कि गांधीजी जहा भी हों, वे जो भी सोचते हों और मेरी वाणी उन तक पहुंचे या न पहुंचे पर मैं स्पष्ट घोषित करता हू कि वे हमारे गुरू हैं, हम उनके शिष्य हैं। उन्होंने जिस भारतीय स्वातंत्र्य संग्राम का सूत्रपात किया है हम उसी

स्वतंत्रता के लिये लड रहे है ओर अन्तिम श्वास तक लडते रहेंगे।

जापानी युद्ध समाप्त होनेके वाद, जो ऐटम वम और सोवियट-रूस के आक्रमण के कारण अनुमान से पहले ही समाप्त हो गया, पण्डित जवाहरलाल ने भारतीम राष्ट्रीय सेना के सम्बन्ध में अपना वक्तव्य दिया। इनकी आवाजको सारे देशने उठा लिया। सव पत्रों ने उनका समर्थन किया। पण्डित हृदयनाथ कुञ्जरू और सर तेज बहादुर सप्रू जैसे लिबरलों ने भी न केवल पण्डित जवाहरलाल के विचारों का समर्थन किया वरन् वे तो और भी आगे वढ़ गये। उन्हों ने चीन की नानकिंग स्थिति गुडिया सरकार की १० लाख चीनी सेना की ओर ध्यान दिलाया जो पहले मार्शल च्यांगकाई-शेक की सेनाओं के विरुद्ध लड रही थी पर जिसे युद्धोपरान्त मार्शल च्यांग ने अपनी कुओमिंगटांग सेना मे सम्मिलित कर लिया। मि० जिन्नासे करांची मे जव भारतीय राष्ट्रीय सेना के सम्वन्ध मे पहले राय मागी गयी तो वे चुप रहे। परन्तु जव उनको ज्ञात हुआ कि इस सेना के ५० प्रतिशत से अधिक अफसर मुसलमान है और पञ्जाब के नवाबी घरानों के हैं तो वे भी चुप न रह सके और उन्हों ने भी इस सेना के पक्ष मे वक्तव्य दिया। हिन्दू महा-सभा और शिरोमणि गुरुद्वारा कमेटी के अकाली दल ने भी भारतीय राष्ट्रीय सेना का समर्थन किया। हां, वेसुरा अलाप तो

केवल कम्युनिस्टोंका है पर वे तो आज राष्ट्रीय आन्दोलनसे दूध की मक्खी के समान बाहर कर दिये गये हैं और उनके मतका कोई मूल्य नहीं रह गया है।

सम्पूर्ण देशमें जब राष्ट्रीय सेनाके प्रति इस भांति गम्भीर सहानुभूति प्रकट की जा रही थी उसी समय भारत सरकारने उक्त सेना के अधिकारियों पर ममेला चलाने और कानून के अनुसार दण्ड देनेके लिये कोर्ट मार्शल नियुक्त करनेकी घोषणा की। साथ ही सरकारने यह भी स्पष्ट कर दिया कि बदला लेनेकी भावनासे कोई कार्य नहीं किया जायगा। सैनिकों को आत्म रक्षाका अवसर दिया जायगा और उनके प्रति उदारता का व्यवहार किया जायगा। इसपर ३१ अगस्त को श्रीनगर (काश्मीर) से एक वक्तव्य प्रकाशित कर राष्ट्रपति आजादने भारत सरकारकी इस घोषणाका घोर विरोध किया। राष्ट्रपति ने स्पष्ट शब्दों मे घोषित किया कि "*सरकार को उक्त सेना या उसके नेताओं पर मुकदमा चलानेका कोई अधिकार नहीं है। उक्त सेना धुरी राष्ट्रोंके हितके लिये न बनी और न लड़ी। फिर जब युद्धरत धुरी राष्ट्रोंकी सेनाओं तक को अन्तर्राष्ट्रीय कानून की सुविधाएं दी जाती हैं,—तब विदेशी शक्ति द्वारा शासित देशके नागरिक उससे कम के अधिकारी नहीं*

हैं। भारतीय जनता अपने इन सुपुत्रों को कठोर दण्ड दिया जाना कभी सहन नहीं कर सकेगी। सरकार को स्मरण रखना चाहिये कि उस समयकी परिस्थितियां असाधारण थीं।"

भारत सरकार की ओर से इसके उत्तर में कहा गया कि अन्तर्राष्ट्रीय विधानके अनुसार स्वाधीन भारत सेनाके सदस्योंको युद्धरत सेनाकी अवस्थामे नहीं माना जा सकता, क्योंकि राज-भक्तिकी शपथ लेनेके बाद भी वे शत्रु से मिल गये अत: वे विद्रोही और विश्वासघातक हैं। इसीलिये कानून के अनुसार उनपर कार्यवाही अवश्य की जायगी, फिर भी उनके साथ यथासम्भव उदारताका व्यवहार किया जायगा। लाहौर हाई-के भूतपूर्व जज कुंवर दिलीप सिंहने 'ट्रिब्यूनमें' एक लेख प्रका-शित कर सरकार के इस निर्णय का प्रभावशाली खण्डन किया और अन्तराष्ट्रीय विधान का प्रमाण देकर बतलाया कि आजाद हिन्द फौजके सदस्य न विद्रोही हैं,—और न विश्वास-घातक। वे तो फ्रासके मार्क्विस पार्टी के (इस दलके सदस्योंने गत महायुद्ध में जर्मन अधिकारियोंसे फ्रासको स्वाधीन बनाने के लिये युद्ध किया था) सदस्योंकी भाँति ही स्वीकार करने योग्य हैं। मेरा मत है कि भारत के प्रत्येक राजनीतिक दलका यह पवित्र कर्त्तव्य है कि इस सेनाके प्रश्नको अपने हाथमे ले और ब्रिटिश सरकार को न्याय करनेके लिये वाध्य करे। प्रयाग

विश्वविद्यालके ला-रीडर श्री० के० भट्टाचार्यने पं० जवाहरलाल के एक प्रश्न के उत्तर मे कहा कि यह सेना जापानियों की देखरेखमे नहीं अपितु उस अस्थायी-स्वाधीन भारत सरकार के तत्वावधानमे बनी थी जिसे संसारके जर्मनी, जापान और इटली आदि ६ स्वतन्त्र राष्ट्रोंकी स्वीकृति प्राप्त थी। अतः स्पष्ट है कि यह सेना विद्रोही या विश्वासघाती नहीं अपितु शत्रु सेना स्वीकार की जानी चाहिये। गत महायुद्ध में चेकोस्लोवाकियाके नागरिकोंकी स्वतन्त्रता को मित्रराष्ट्रोंने स्वीकार किया था, यद्यपि उस समय भी चेकोस्लोवाकिया आस्ट्रिया के अधीन था। उसी सिद्धान्त से इन भारतीय नागरिकों की स्वाधीनता स्वीकार करनी होगी।

कलकत्ता हाईकोर्टके एडवोकेट श्री जे० एन० घोष, एम० ए० बी० एल० ने *"अन्तर्राष्ट्रीय विधान और आजाद हिन्द फौज"* नामक विस्तृत लेखमें अकाट्य प्रमाणोंसे यह सिद्ध कर दिया कि इस सेनाके सैनिक विद्रोही नहीं अपितु युद्धरत-राष्ट्र के सैनिक हैं और उसी प्रकार का व्यवहार इन्हें मिलना उचित है। ब्रिटिश पार्लमिन्ट के सदस्य मि० आर० सोरेन्सेनने इस प्रश्न पर अपना मत देते हुए कहा कि *'मेरी धारणा में राष्ट्रीय सेनामें सम्मिलित होनेवाले नागरिकों को क्विसलिंग (नार्वेके देशद्रोही का नाम) समझना भूल है। जो इस सेना की नीति*

को सर्वथा अस्वीकार करते है वे भी उसे किसलिंग या देशद्रोही माननेको प्रस्तुत नहीं है।" इण्डिपेन्डेन्ट लेबर पार्टीके नेता मि० एफ० ब्रोकवे ने कहा कि "इन सैनिकों पर मामला चलाना भारी भूल है। उनके कार्योंके सम्बन्धमें हम चाहे जो मत रखें; पर उनका उद्देश्य अपने देशको स्वाधीन बनाना था। उनके विरुद्ध कार्यवाही करना ब्रिटेन और भारतके बीच की खाई को और चौड़ा करना है।" पार्लमेंटके श्रमिक सदस्य मि० विलियम कोवेने भी इसी मतका समर्थन किया। लन्दनके बड़े बड़े कानून विशेषज्ञोंने यह मत प्रकट किया है कि इस सेनाके सैनिको ने सम्राटकी राजभक्ति की शपथ त्यागकर स्वतन्त्र भारतकी सरकारके जिसे जापान आदि राष्ट्र स्वीकार कर चुके थे, आनुगत्य की शपथ ली थी। यह स्मरण रखना चाहिये कि ब्रिटिश गवर्नमेंट जापान की सरकार को स्वीकार करती रही है अत नैतिक और अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण से वे अपने देशकी स्वाधीनताके लिये लड़ रहे थे, न कि धुरी राष्ट्रोंकी लूटमे साझेदारी के लिये। यह सर्वसम्मत सिद्धान्त है कि अपने देशको स्वतन्त्र बनानेके लिये लड़ना उत्तम कार्य है, साथ ही प्रत्येक व्यक्ति का नैतिक उत्तरदायित्व भी है। उनकी नीतिका विरोध किया जा सकता है परन्तु उन्हे देशद्रोही कदापि नहीं कहा जा सकता।

सर स्टेफार्ड क्रिप्स, भारतके भूतपूर्व उपसचिव लार्ड लिस्टोवल और दक्षिण-पूर्वी एशियाके प्रधान सेनाध्यक्ष लार्ड लुइस माउन्ट बेटन आदि,—विश्वस्त सूत्र से ज्ञात हुआ है कि इन सैनिकों के उद्देशको स्वीकार कर चुके है, पर उन्होंने यह कहा है कि यदि कोई व्यक्ति सर्वसम्मत सभ्य जीवन के सिद्धान्तों के प्रतिकूल अत्याचार करे तो उसे दण्ड दिया जा सकता है। ब्रिटिश लेबर पार्टी के अध्यक्ष प्रो० एच० जे० लास्कीने—जो लण्डन विश्व-विद्यालयमे राजनीति विज्ञान के अध्यापक भी है, कहा कि,—*लार्ड लुइस माउन्ट बेटन के इस मत से मैं सहमत हूं कि भारतीय राष्ट्रीय सेना से सम्बन्धित व्यक्ति मुक्त कर दिये जायें। मुझे आशा है कि हम कोई ऐसा कार्य नहीं करेंगे जिससे युद्धोत्तर भारत के साथ हमारी उलझन और बढ़ जाय।*

देश और विदेशके महान व्यक्ति और कानून विशेषज्ञ जहां इस प्रकारकी घोषणाएं कर रहे थे—वहा भारत सरकार कोर्ट मार्शल द्वारा इस सेनाके नेताओ पर मुकदमा चलाने के लिये कटिबद्ध थी,—अत: आवश्यकता यह जान पड़ी कि भारतके इन वीर सुपूतो की रक्षा के लिये कुछ विशेष प्रयत्न किया जाय। १७ सितम्बर को पूनामे यूनाइटेड प्रेस के प्रतिनिधिसे इसी प्रश्न पर बातचीत करते हुए पं० जवाहरलालजीने कहा "*भारतके* बहु-

संख्यक नर-नारी स्वाधीन भारत सेना के नेताओं, पुरुषों और स्त्रियों के जो इस समय भारत और विदेशों की जेलों में बन्द है, भाग्यके सम्बन्धमें चिन्तित है। यह स्मरण रखने योग्य है कि इस सेना में केवल ब्रिटिश भारतीय सेना के ही सैनिक सम्मिलित नहीं हैं;—अपितु बर्मा, मलाया और स्याममें स्थिति भारतीय नागरिक भी भर्ती हुए है। इसके प्रति किसी प्रकारका दुर्व्यवहार असह्य होगा।" पं० नेहरु और राष्ट्रपति आजाद आदिके प्रयत्नोंका परिणाम यह हुआ कि आल इण्डिया कांग्रेस कमेटीने इस सेनाका प्रश्न अपने हाथमे लिया—और सितम्बर की २२-२३-२४ तारीखों में बम्बई में उसका जो अधिवेशन हुआ था, उसमे इस आशयका प्रस्ताव स्वीकृत हुआ:—

"अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटीने उद्वेगके साथ यह सुना है कि सन् १९४२ मे मलाया और बर्मा में जो स्वाधीन भारत सेना बनी थी उसके बहुसंख्यक अधिकारी और नर-नारियों के अतिरिक्त पश्चिमी मोर्चे के कुछ भारतीय सैनिक भी सरकारके निर्णयकी प्रतीक्षामे भारत और विदेशोंकी जेलोंमें बन्द है। जिस समय यह सेना संगठित की गयी थी उस समय और उसके पश्चात् भारत, मलाया, बर्मा और दूसरे स्थानोंमे जो अवस्था थी, उसपर और सेनाके घोषित उद्देशोंपर विचार कर इन अफसरों और

नर-नारियोंके साथ युद्धरत सैनिकों और युद्ध बन्दियोंकी भांति व्यवहार करना और युद्धके अन्त मे उन्हें छोड़ देना उचित था। अस्तु, और सुदूर व्यापी कारणों पर ध्यान देकर तथा युद्ध बन्द हो गया है इस बात पर विचार कर आल इण्डिया काग्रेस कमेटी दृढ़ता के साथ यह मत घोषित करती है कि भारतकी स्वाधीनता के लिये (चाहे कैसे ही भ्रान्त पथसे क्यों न हो) यत्न करने के अपराधमे यदि इन अफसरों और नर-नारियोंको दण्ड दिया जायगा तो वह बडी शोचनीय घटना होगी। स्वाधीन और नवीन भारत निर्माणके महान् कार्य में उनसे वास्तविक सहायता प्राप्त हो सकती है। इस बीचमें वे बहुत अधिक कष्ट भोग चुके है। इसके ऊपर भी यदि उन्हें और दण्ड दिया जायगा तो न केवल वह अयुक्त होगा अपितु असंख्य घरोंमे और सम्पूर्णरूप से भारतीयोंके हृदयमे पीडा उत्पन्न होगी और इससे भारत और ब्रिटेन की खाई और भी चौडी हो जायगी। अत· अखिल भारतीय काग्रेस पूर्णरूपसे विश्वास करती है कि इस सेनाके अफसरों और नर-नारियों को छोड दिया जायगा। आल इण्डिया कांग्रेस यह भी आशा करती है कि मलाया, बर्मा तथा अन्य स्थानों के जिन असामरिक नागरिकोंने भारतीय स्वाधीनता संघ में सहयोग दिया है उन्हे भी किसी प्रकार परेशान नहीं किया जायगा और न कोई दण्ड ही दिया जायगा। अखिल भारतीय कांग्रेस यह भी आशा करती है कि युद्ध सम्बन्धी किसी भी

प्रसङ्ग में यदि किसी भारतीय सैनिक या भारतीय नागरिक को फांसी का दण्ड दिया गया होगा तो वह कार्यरूप में परिणत नहीं किया जायगा।"

पण्डित नेहरूने उक्त प्रस्ताव उपस्थित करनेके साथ ही यह भी घोषित किया कि कांग्रेस इस सेनाके लिये एक रक्षा-समिति गठित कर रहा है जिसके सदस्य हैं:—सर तेजबहादुर सप्रू, श्री भूलाभाई देसाई, डा० के० एन० काटजू, श्री जवाहरलाल नेहरू, श्री रघुनन्दन शरण और श्री आसफअली (संयोजक)। बम्बई में ही २४ सितम्बर को श्री भूलाभाई देसाईके निवास स्थान पर उक्त रक्षा समितिकी प्रारम्भिक बैठक हुई जिसमें रक्षा व्यवस्था पर विचार किया गया। २७ सितम्बर को नयी दिल्ली से एक वक्तव्य प्रकाशित कर श्री आसफअली (संयोजक) ने बतलाया कि भारत सरकार के हाथोंमें आजाद हिन्द सेना के लगभग ३०००० (तीस सहस्र) सैनिक हैं। श्री शरच्चन्द्र बसुके सुपुत्र श्री अमियनाथ बोस का कथन है कि राष्ट्रीय सेना की संख्या प्रायः १॥। लाख है जिसमें भारत केवल २० (बीस) हो सहस्र लाये गये हैं। भारत सरकार ने २० नवम्बर को एक विज्ञप्ति द्वारा इस सेना की संख्या १॥ लाख नहीं लगभग ४३ हजार बतलाई है किन्तु आजाद हिन्द सेना से सम्बन्धित व्यक्ति इसे ४० हजार कहते हैं। इस प्रकार आजाद हिन्द सेना के अधिकारियों और नर-नारियों के बचावके लिये कांग्रेस

ने जो प्रचण्ड आन्दोलन प्रारम्भ किया,—हम पहले ही कह आये हैं देशकी समान्य जनता पर उसका प्रचण्ड प्रभाव पड़ा, और अखिल भारतीय हिन्दू महासभा, अकाली पार्टी तथा मुस्लिम लीग जैसी संस्थाओं ने भी अपने ढङ्ग पर उक्त आन्दोलन का समर्थन प्रारम्भ किया। लीग और शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटीने भी रक्षा समितियां स्थापित की, पर लोगोको यह देखकर विस्मित होना पड़ा कि आजाद हिन्द सेनाके अधिकाश अफसरोने साम्प्रदायिक आधार पर अपना बचाव करना स्वीकार नहीं किया।

फौजी अदालत गठन

इधर भारत सरकार ने कोट मार्शल निर्माण कर उनके सदस्यों की नामावली घोपित कर दी। कोर्ट मार्शल (फौजी अदालत या सैनिक न्यायालय) के सदस्यों के नाम ये हैं :—

प्रेसिडेण्ट मेजर जनरल ए० बी० बाक्सलैंड सी० बी० ओ० बी० ई० (सदस्य) ब्रिगेडियर, ए० जे० एच० बोरक लेफ्टिनेन्ट कर्नल सी० आर० स्काट, लेफ्टिनेन्ट टो० आई० स्टीवेन्सन सी० आई० ई० एम० बी० ई० एम० सी०, लेफ्टिनेन्ट कर्नल नासिर अली खां, मेजर बी० प्रीतम सिंह आई० ए० सी० और मेजर बनवारीलाल।

कोर्ट मार्शल का निर्माण कैसे होता है? अभियुक्तों के अधिकार क्या है और अदालत मृत्यु का दण्ड कब दे सकती है, इन सब पर संक्षेप में यहां प्रकाश डाला जाता है। यह सब

ज्ञातव्य विवरण भारतीय फौजी क़ानून से लिया गया है। कानून के अनुसार अदालत मौत की सजा तब तक नहीं दे सकती, जब तक कि अदालत के दो तिहाई सदस्य उसके पक्ष में न हों। अदालत के ७ सदस्यों मे से ३ सदस्य यदि मौत की सजा के विपक्ष में हों तो अभियुक्त को यह सजा न दी जा सकेगी। भारतके फौजी कानून की दफा ५४ के मातहत भारत के प्रधान सेनापति के वारण्ट द्वारा अधिकृत एक अफसर फौजी अदालत का आयोजन करता है।

कम से कम ५ सदस्य—(फौजी कानून दफा ५७) फौजी अदालत मे कम-से-कम ५ ब्रिटिश व भारतीय कमीशनशुदा अफसर होने चाहिये। प्रत्येक अफसर ३ या उससे अधिक वर्षों तक कमीशनशुदा नौकरी कर चुका हो। (फौजी कानून रूल २६) कुछ परिस्थितियों में किसी अफसर को फौजी अदालतका अध्यक्ष भी नहीं बनाया जा सकता। उदाहरणार्थ जो मामला अदालत में पेश होना हो, उसकी जाच के लिये नियुक्त कोर्ट में यदि कोई अफसर सदस्य हो तो वह अदालत का अध्यक्ष नहीं हो सकता।

अभियुक्तों को आपत्ति का हक़—(फौजी कानून रूल २३ जी०) अभियुक्त को पहिले से ही यह जानने का अधिकार है कि फौजी अदालत में कौन-कौन से अफसर होंगे। अदालत द्वारा

शपथ लेने से पूर्व अभियुक्त अदालत के एक अथवा एक से अधिक सदस्यों के सम्बन्धमें आपत्ति उठा सकता है। फौजी क़ानून के रूल ३४ के अनुसार व्यक्ति गत शत्रुता व पक्षपात के आधार पर अदालत के किसी भी अफसर के खिलाफ आपत्ति की जा सकती है। यदि कोई अफसर अदालत के सामने पेश होने वाले मामले के सम्बन्ध मे अपनी राय प्रकट कर चुका हो अथवा अपनी राय बता चुका हो तो उसके सम्बन्धमें भी आपत्ति की जा सकती है। इन आपत्तियोंका निर्णय गुणोंके आधार पर किया जाता है। किन्तु फौजी अदालतों का आम रिवाज यह है कि यदि कोई आरोप स्पष्टतया निराधार न हो तो जिस अफसर के विरुद्ध आपत्ति की गयी हो उसे स्वयं अलग होने की प्रार्थना करनी चाहिये और उसकी यह प्रार्थना मंजूर कर ली जानी चाहिये।

प्रधान कौन ?—(फौजी कानून दफा ७७ रूल ३५) आपत्तियों का निर्णय करनेके बाद स्थापित अदालत का सर्वोच्च सदस्य अदालतका प्रधान होता है। उसके बाद वे अदालत के शेष सदस्य और जज-एडवोकेट शपथ लेते हैं।

जज-एडवोकेट—(फौजी कानून रूल ६०१) जज एडवोकेट का मुख्य काम मुकदमे के समय पैदा होने वाले कानून व प्रक्रिया सम्बन्धी मामलों पर अदालत को सलाह देना है, मुक़-

दमे की समाप्ति पर शहादत को संक्षेप मे पेश करना तथा कानून की दृष्टि से मामले के सम्बन्धमे अपनी सम्मति प्रकट करना है। जज-एडवोकेट को एकदम निष्पक्ष होना चाहिये। उसकी स्थित जूरी के सामने पेश मामले मे जज के समान होती है। हाँ, इतना फर्क जरूर होता है कि जज-एडवोकेट सिर्फ कानूनी बातों पर अपनी सलाह दे सकता है, अन्तिम निर्णय नहीं।

अभियोक्ता अफसर—(फौजी कानून, रूल ३३, रूल २२ (बी) रूल ८१) फौजी अदालतके संयोजक जिस फौजी अफसर को अभियोक्ता नियुक्त कर दें, वही इस्तगासे की कार्यवाही पेश करता है। अभियुक्त की प्रार्थना पर संयोजक एक और फौजी अफसर को प्रतिवादी अफसर नियुक्त कर सकता है। अभियोक्ता अथवा प्रतिवादी अफसर का वकील आदि होना आवश्यक नहीं। लेकिन यदि अभियोक्ता वकील हो तो प्रतिवादी अफसर भी वकील होना चाहिये।

वकील—(फौजी कानून रूल ८२) इस्तगासे व अभियुक्तों दोनों की ओर से वकील भी रखे जा सकते है।

अदालत के नियम—(फौजी कानून रूल ५०) फौजी अदालत की प्रक्रिया और शहादतके नियम वही होते हैं, जो समूचे विश्व की ब्रिटिश अदालतोंमें प्रचलित हैं। अभियोक्ता को इस्तगासे के गवाहों से जिरह करने का पूर्ण अधिकार है।

उसे अपनी सफाई के लिये गवाह पेश करनेका भी हक होगा।' जबतक अभियुक्त का दोष साबित नहीं हो जाता तबतक उसे निर्दोष समझा जायगा। उसके दोषी होने अथवा न होने का निर्णय शहादतों के आधार पर होगा।

अभियुक्त शपथ नहीं लेता—भारत की अदालतों मे प्रचलित नियमों के अनुसार फौजी अदालतमें भी एक अभियुक्त शपथ ग्रहण पूर्वक गवाही नहीं दे सकता। अतएव उससे जिरह भी नहीं की जा सकती। लेकिन अपनी सफाई के लिये उसे लिखित अथवा मौखिक बयान देने का पूर्ण अधिकार है। इस्तगासे व सफाई पक्ष दोनों की शहादतें समाप्त होने के बाद दोनों पक्षोंकी ओर से अन्तिम भाषण होते हैं। अभियुक्त की ओरसे सबसे अन्तमे भाषण होता है, बशर्ते कि उसने सचाइयों को साबित करने के लिये गवाह तलब न किये हों। इसके बाद जज एडवोकेट संक्षेपमें अपना कथन पेश कर देते हैं।

नतीजों पर विचार—(फौजी कानून रूल ५३) इसके बाद अदालत की कार्यवाही समाप्त हो जाती है और अबतक के नतीजों पर विचार किया जाता है। नतीजा दर्ज कर लिया जाता है, घोषित नहीं, फिर चाहे वह नतीजा एक अथवा समस्त अभियोगोंमे निर्दोष होनेके सम्बन्ध मे ही क्यों न हो। इसके बाद अदालत फिर बैठती है और यदि नतीजा यह हो कि

अभियुक्त दोषी है तो अदालत अभियुक्त के अवतक के चाल-चलनके सम्वन्धमे शहादत लेती है। फिर अभियुक्त अथवा उसके वकील अदालतमे अपील कर सकते है कि सजा कम कर दी जाय।

सजा—अन्त में अदालत के बन्द कमरे मे सजा सुना दी जाती है।

अदालत में मत—(फौजी कानून रूल ७३) अदालत में मत मौखिक लिये जाते हैं। सबसे छोटा सदस्य सबसे पहिले और वडा सदस्य सबसे अन्तमे मत देता है।

अन्तिम निर्णय वहुमत से—नतीजे व सजा के सम्बन्ध में अदालतके निर्णय बहुमतसे होगे। यदि मत समान—समान हों तो इसका लाभ अभियुक्त को होता है।

मौत की सजा—तबतक नहीं दी जा सकती, जबतक कि अदालतके दो तिहाई सदस्य उसके पक्षमें न हों। इसका अभिप्राय यह है कि यदि किसी फौजी अदालतमे सात सदस्य हैं तो कमसे कम पाँच सदस्यों के मत मौतकी सजाके पक्षमे आने चाहिये। इस तरह अल्पसंख्यक तीन सदस्य ४ बहुसंख्यक सदस्योंके निर्णय को रद्द कर सकते हैं।

क्षमा की सिफारिश—(फौजी कानून रूल ५५) अभियुक्त पर फर्द जुर्म लगानेवाला अथवा सजा देनेवाली अदालत

क्षमा करने की सिफारिश पर विचार कर सकती है। क्षमा करने की सिफारिश करने अथवा न करनेके सम्बन्धमें अदालत के सदस्यों के जितने वोट हों उन्हे कार्यवाही मे दर्ज किया जायगा।

सजा की पुष्टि—अदालतका निर्णय अथवा उसके द्वारा दी गयी सजा तबतक कानूनी नहीं होगी जबतक कि उसकी पुष्टि नहीं हो जाती। अदालतके संयोजक अफसरको पुष्टि करनेका अधिकार होता है लेकिन भारत के प्रधान सेनापति जसे उच्च अफसर पर पुष्टि करनेका मामला छोडा जा सकता है। पुष्टि की सूचना अभियुक्त को दे दी जाती है। यदि उसपर फर्द जुर्म लगा दिया जाय तो उसे अपनी दरख्वास्त आगे पेश करनेका पूरा अधिकार है।

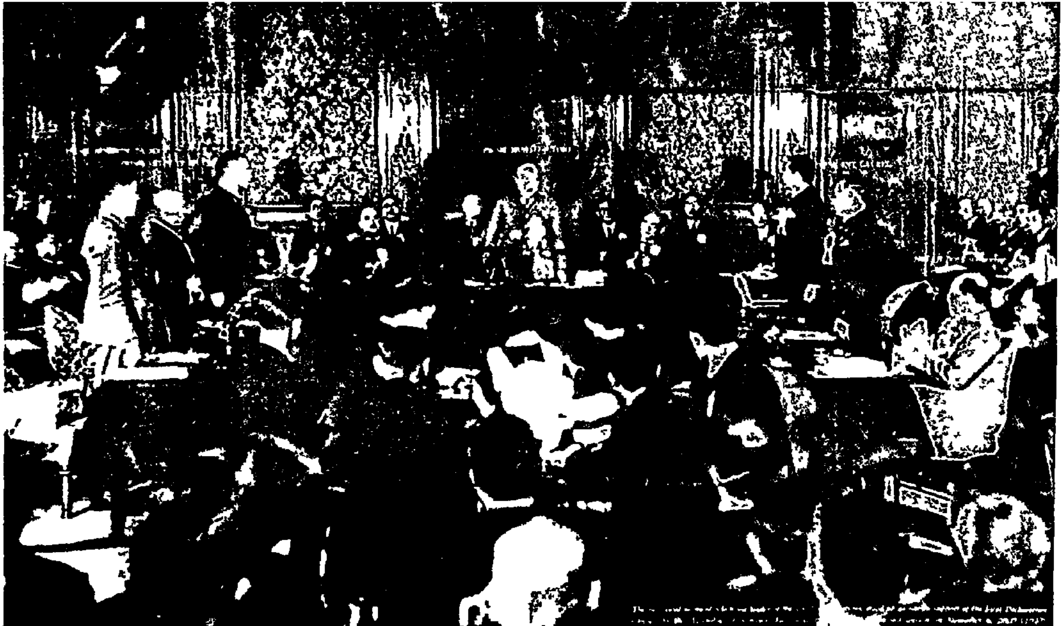
भारत सरकार को दरख्वास्त—यदि अभियुक्त कमीशनशुदा अफसर होगा तो उसे अपनी दरख्वास्त भारत सरकार अर्थात् वायसरायके पास भेजनी होगी। उन्हें ही दी गयी सजा को कम करने, बदलने अथवा अभियुक्त को क्षमा करने का अधिकार है।

आज़ाद सेना कैसे बनी ?

सात दिसम्बर १६४१ दक्षिण पूर्व-एशिया के इतिहास में विशेष महत्व रखता है। इसी दिन जापान ने पर्लहारबर, मलाया और डच ईस्ट इण्डीज पर एक साथ आक्रमण कर दिया था। जापान के इस आक्रमण को रोकने की चर्चा बहुत दिनों से चल रही थी। अमरीका, ब्रिटेन, चीन और डच सरकारों ने सम्मिलित रूपसे ए. बी. सी. डी. मोर्चे का निर्माण किया था। इस मोर्चे के प्रधान सेनापति सर रावर्ट ब्रूक पोफम थे जिन्होंने बारम्बार विश्वको यह विश्वास दिलाया था कि उनका मोर्चा अभेद्य है। यदि जापानी भूलकर भी आक्रमण करेंगे तो एक ही दो सप्ताह में उनके दांत खट्टे कर दिये जायंगे। किन्तु विश्व को यह देखकर चकित रह जाना पड़ा कि जापानी आक्रमणकारियों के सम्मुख यह मोर्चा कुछ भी



नेताजी सिंगापुर में सहयोगियों को परामर्श दे रहे हैं ।



पूर्व एशिया के भारतीयों को संगठित होने के लिये मेजर फुजिवारा की अपील ।

चमत्कार न दिखा सका और आक्रमणके प्रायः २ मास बाद ही अर्थात् १६४२ की १५ फरवरी को ब्रिटिश साम्राज्यका अजेय दुर्ग सिंगापुर जापानियों के हाथ आ गया। सिंगापुर पर आक्रमणके समय वहां १५००० ब्रिटिश, १३ हजार आस्ट्रेलियन और ३२ हजार भारतीय सेना थी। यह सब मलाया के ५० लाख निवासियों समेत जापानियों के अधिकार मे आ गयी। मलाया मे भारतीयों की संख्या लगभग ३ लाख थी। १७ फरवरी को जापानी सेना के प्रमुख केन्द्र से मेजर फुजीवारा ने सिंगापुर के प्रमुख भारतीयो को बुलाया। उन्होने उपस्थित जनताको यह बतलाया कि इंगलैंड की सैनिक शक्ति को घातक प्रहार लग चुका है। भारतीयोंके लिये अपने देशकी स्वतन्त्रता प्राप्त करनेका यह सुनहरा अवसर है और जापान सब प्रकार से उनकी सहायताके लिये प्रस्तुत हैं। उन्होंने फिर कहा—जापान, मलायामे भारतीयोंको चाहे वे ब्रिटिश साम्राज्य के नागरिक हैं: फिर भी अपना मित्र मानता है, किन्तु शर्त यह है कि उन्हें ब्रिटिश नागरिकताका त्याग करना पड़ेगा। फुजीवाराने सुझाया, यदि भारतीय अपना स्वाधीनता संघ स्थापित कर लें तो वे उसे सब प्रकार की सुविधा देनेके लिये प्रस्तुत हैं। भारतीयोंने फुजीवारा की बातों पर पूरा विश्वास नहीं किया, क्योंकि उन्हें अभी तक ब्रिटिशों के लौट आनेका भय बना था। फिर भी उन लोगों ने फुजीवारा के सुझाव पर विचार कर उत्तर देनेका

निश्चय किया और कहा कि मलाया के सेन्ट्रल इण्डियन एसो-सियेशनके सभापति श्री एन० राघवनको परामर्श के लिये आमंत्रित किया जाय। इसी बीच सिंगापुरके भारतीयों को टोकियोसे श्री रासविहारी बोसका निमन्त्रण मिला।

मार्च की २८ से ३० तारीख तक टोकियो में जापान, चीन मलाया और थाईलैंडके भारतीयों का सम्मेलन श्री० रासविहारी बोस की अध्यक्षता में हुआ। इस कान्फ्रेन्स में विमान द्वारा जानेवाले भारतीयों को दुर्घटनाका शिकार होना पडा जिससे प्रसिद्ध स्वामी सत्यानन्दपुरी का देहावसान हो गया। आप स्वाधीनता आन्दोलन के अच्छे कर्मी थे। इस विमान दुर्घटना का जो समाचार रायटरने उस समय भारत और विदेशों में भेजा था उसमे देश गौरव श्री सुभाषचन्द्र बोसके निधन की बात कही गयी थी। भारत मे इस समाचार से सर्वत्र शोक छा गया था। महात्मा गाधी तथा पण्डित मालवीयने शोक सहानुभूति सूचक तार सुभाष बाबू की माताजी के नाम भेजे थे। वास्तव में यह समाचार मिथ्या था क्योंकि उस समय सुभाष बाबू जापान से बहुत दूर बर्लिन में बैठे हुए थे। बाद में रायटर ने भी इस समाचार का खण्डन किया था। टोकियो सम्मेलन में इण्डिपेन्डेस लीग या भारतीय स्वतन्त्रता संघ के निर्माण का और उसका उद्देश भारत के लिये विदेशियों के प्रभुत्व, हस्तक्षेप तथा नियन्त्रण से रहित पूर्ण

स्वाधीनता निश्चत किया गया था। आज जिस आज़ाद हिन्द फौज' या स्वतन्त्र भारत सेना का नाम देश विदेश सर्वत्र गूञ्ज रहा है उसके निर्माण का निश्चय भी इसी सम्मेलन में हुआ था। इस काफ्रेंस मे यह भी निश्चय किया गया कि उसी वर्ष के जून मे थाईलैंड की राजधानी बैंकाक मे पूर्व एशिया के समस्त भारतीयों की जो प्राय· ३० लाख हैं; प्रतिनिधि सभा बुलायी जाय। इस निश्चय के अनुसार जून की १४ से २३ तारीख तक पूर्व एशिया के भारतीयों की सभा बैंकाक मे हुई। इस कॉफेन्स मे जावा, सुमात्रा, इन्डुचीन, वोर्नियो, मंचुको, हाङ्काङ्ग, वर्मा, मलाया और जापान से पूरे १०० प्रतिनिधि सम्मिलित हुए थे। कान्फ्रेन्स ने इण्डियन इण्डि-पेन्डेन्स लीग या भारतीय स्वतन्त्रता संघ को सरकारी तौर पर स्वीकृत किया और भारतीय स्वाधीनता का साधन एकता, विश्वास और वलिदान माना गया जिसकी व्याख्या इस प्रकार की गयी :—

एकता—समस्त भारतीयों का एक संस्था के अन्तर्गत संगठन।

विश्वास—भारतीय स्वतंत्रताकी तुरन्त प्राप्ति पर विश्वास।

बलिदान—स्वतन्त्रता के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये आत्म वलिदान।

इस कान्फ्रेन्स ने यह भी निर्णय किया कि भारत एक और अखण्ड है। अतएव हमारा प्रत्येक काम राष्ट्रीय स्वरूपका होना चाहिये। साम्प्रदायिक या धार्मिक आधार पर कोई भी कार्य हानिकर है। संघका कार्यक्रम इण्डियन नेशनल काग्रेस के नियमों के आधार पर रहेगा। भारत का भावी शासन विधान स्वतंत्र रूपसे चुने हुए भारतीय प्रतिनिधियों द्वारा बनाया जायगा। कान्फ्रेन्स ने संघ के अन्तर्गत आजाद हिन्द फौजके संगठन का निश्चय किया और माग की कि स्वाधीन भारत की स्वाधीन राष्ट्रीय सेना को जापानी सेना की बराबरी का अधिकार और दर्जा दिया जाय। यह भी खुलासा किया गया कि इस फौज का उपयोग केवल भारत मे रहने वाले विदेशियों के विरुद्ध और भारतीय राष्ट्रीय स्वाधीनताकी प्राप्ति और रक्षा के लिये ही होगा। किसी भी दूसरे उद्देश से इसका प्रयोग नहीं किया जायगा। संघ की युद्ध परिषद में ५ व्यक्ति थे जिनमें दो आजाद हिन्द फौज के प्रतिनिधि थे। श्री रासबिहारी बोस सर्व प्रथम सभापति और श्री एन० राघवन, के० पी० के मेनन; कैप्टन मोहन सिंह और कर्नल जी० के० गिलानी सदस्य चुने गये। कान्फ्रेन्स ने जापान सरकार से यह माग की कि वह भारत की पूर्ण स्वाधीनता स्वीकार करे और उसपर विदेशियों का राजनैतिक, सैनिक और आर्थिक प्रभाव, नियन्त्रण और हस्तक्षेप न रहे। सम्मेलन ने भारतीय कांग्रेस के तिरंगे झण्डेको अपना झण्डा स्वीकार किया

और अनुरोध किया कि श्री सुभाषचन्द्र बोस को पूर्व एशियामें आने और नेतृत्व करने की सुविधाएं दी जायं।

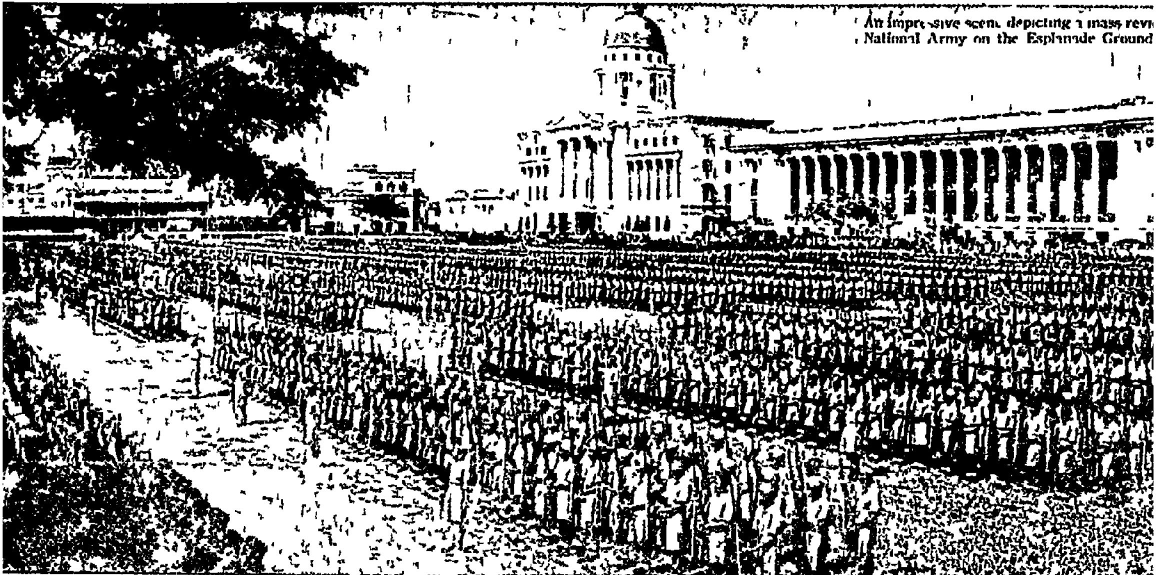
इस सम्मेलन के बाद जहा संघ के सदस्यों की संख्या केवल मलाया मे १ लाख २० हजार हो गयी,—वहां संघकी युद्ध परिषद ने ५६ हजार युद्ध कैदियो मे ५० हजार कैदी आजाद फौज मे भरती किये। इसी बीच जापान के हिकारी किकन जो जापानी सेना का औरों से सम्बन्ध जोड़ने का विभाग है; और स्वाधीनता संघके बीच खटपट पैदा हो गयी क्योंकि किकन भारतीय आन्दोलन का उपयोग जापान के लाभ के लिये करना चाहता था। यह संघर्ष यहां तक बढ़ा कि कर्नलगिलानी और कप्टन मोहन सिंह ब्रिटिशो के गुप्तचर होने के सन्देह मे पकड लिये गये। इसका भारतीयों पर बहुत बुरा प्रभाव पडा और जापानियों का जो जहाज आजाद हिन्द फौज को बर्मा ले जाने के लिये सिंगापुर आया था उसे खाली लौटना पड़ा। यदि जापानियों की वह चेष्टा सफल हो गयी होती तो १९४२ के दिसम्बर मे ही चटगांव और बङ्गाल के दूसरे नगरों पर आक्रमण प्रारम्भ हो गया होता। १९४२ के दिसम्बर मे जो कलकत्ते पर विमान आक्रमण हुआ था उससे स्पष्ट हो जाता है कि जापानी उसी समय बङ्गाल पर आक्रमण के लिये तुले हुए थे। परन्तु जहाज को खाली लौटा कर भारतीय संघने उनके प्रयत्न को विफल

बना दिया। इसी बीच रासबिहारी बोस टोकियो में जनरल तोजो से मिले। जिसका परिणाम यह हुआ कि जापानी सेना और स्वाधीनता संघ का सम्बन्ध पहले की तरह सुधर गया। इसी समय सिंगापुर में यह समाचार फैला कि शीघ्र ही सुभाष बाबू योरप से इस आन्दोलन का नेतृत्व करने आ रहे हैं। संघ की ओर से थाईलैंड की राजधानी बैंकाक मे "आजाद हिन्द" रेडियो की स्थापना की गयी। स्वाधीनता संघ और आजाद हिन्द फौज की गतिविधि पर इस रेडियो स्टेशन से महत्व पूर्ण ब्राडकास्ट हुआ करता था। इस प्रकार ईस्ट एशिया के भारतीयों मे जब एक नयी उमङ्ग और एक नया लहर फैली हुई थी उसी समय अर्थात् १९४३ की २० जून को श्री सुभाष बोस टोकियो पहुंच गये। उनके साथ मिस्टर हसन नाम मुसलिम नवयुवक भी था। टोकियो मे श्री सुभाष बाबू का प्रचण्ड स्वागत हुआ। श्री सुभाष बाबू ने प्रेस को दिये गये एक वक्तव्य में कहा 'गत महायुद्ध मे ब्रिटिशों ने भारतीयों को धोखा दिया था। उसी समय देश वासियों ने निश्चय किया था कि फिर कभी इस प्रकार के धोखे मे नहीं पड़ेगे। गत २० वर्षों से जिस अवसर की हम लोग प्रतीक्षा मे थे वह आ गया है। यह समय भारतीय स्वतन्त्रताका समय है। हम जानते हैं कि भारतको ऐसा सुयोग आगामी १०० वर्षों मे नहीं मिलेगा। अतएव हमे अपना सब कुछ देकर भारतके लिये स्वतन्त्रता प्राप्त करना है और अपनी

शक्ति से ही उसे सुरक्षित रखना है। शत्रु की तलवार का जवाब हमे तलवार से ही देना है और यह तभी सम्भव है जब भारतीय जनता का हृदय त्यागसे प्रज्वलित होगा। अतः हम लोगों को अपनी सम्पूर्ण शक्ति और उत्साहसे भारतके भीतर और वाहर भी भारतीय स्वाधीनता का युद्ध जारी रखना चाहिये। हमे ब्रिटिश साम्राज्यवादके ध्वस होने तक यह संग्राम चलाना है और इस साम्राज्यवाद के विध्वंस पर ही भारत एक स्वतन्त्र राष्ट्र के रूप में प्रकट होगा। इस संग्राममे न पीछे लौटने की कोई जगह है और न ढिलाई करने की। हमे तब तक आगे और आगे वढ़ते रहना है जब तक विजय प्राप्त न हो जाय और स्वतन्त्रता जीत न ली जाय।"

१९४२ की २ जुलाई को श्री सुभाष वाबू सिंगापुर पधारे। उनका यहा पर जबर्दस्त स्वागत किया गया। मानव सागर की तरंगें चारों ओर लहरा रही थीं जिनमे मलाया निवासी भारतीय चीनी और जापानी नर-नारी वालक और वृद्ध भारी संख्या में उपस्थित थे। उनके स्वागतके लिये जो सभा हुई थी, उसमे फूल-मालाओं से सुसज्जित महात्मा गाधी जी का वहुत वडा चित्र रखा हुआ था। चारों ओर तिरंगे झण्डे फहरा रहे थे। सुभाष वावूने यह खुलासा कर दिया कि हम केवल ब्रिटिश साम्राज्य-वाद के ही विरुद्ध नहीं लड रहे है, अपितु हमे जापानी साम्राज्यवाद और स्वदेशी पञ्चम कालम वालों से भी सावधान

रहना है। ३ जुलाई को सुभाष बाबू ने आजाद हिन्द फौज के नेताओं और स्वाधीन भारत संघ के कर्मियों से जो हांगकांग, वर्मा और बोरनियो से आये थे, परामर्श किया। इसके बाद एक दिन विराट सम्मेलन हुआ जिसमें श्री सुभाष बाबू ने भारत की प्राथमिक स्वाधीन सरकार स्थापित करने की घोषणा की। इसका पूरा विवरण आगे के पृष्ठों में दिया गया है। इसी बीच सिंगापुर टाउन हाल के सामने आजाद हिन्द फौज का प्रदर्शन हुआ। एक प्रत्यक्ष दर्शी का कहना है कि जो उत्साह और प्रसन्नता उस समय वहां के भारतीयों मे दिखाई पड रही थी वह अपूर्व थी। नेताजी (सुभाष बाबू) के आगमन का यह प्रभाव हुआ कि भारतीय क्षुद्र ईर्षा-द्वेष और आपसी लागडाट को छोड़कर एक हो गये। यहीं पर भाषण देते हुए नेता जी ने दिल्ली चलो का नारा लगाया था। फिर उन्होंने कहा था—भारत सब प्रकार से स्वाधीनता के लिये प्रस्तुत है किन्तु उसके पास हथियार बन्द सेनाकी कमी है। जार्ज वाशिंगटन अमरीका की स्वाधीनता के लिये लड़े और विजयी हुये, क्योंकि उनके पास सशस्त्र सेना थी। गेरीबाल्डी इटलीको स्वाधीन बना सके क्योंकि उनके पास सशस्त्र स्वयंसेवकों का दल था। आज इण्डियन नेशनल आर्मी या आजाद हिन्द फौज मे सम्मिलित होकर आपको वैसा ही अपूर्व अवसर मिल रहा है। आपको प्रत्येक अवस्थामे राष्ट्रके लिये सब



सिंगापुर टाउन हाल के सम्मुख आज़ाद हिन्द फौज की विराट् रेली ।



जापान के प्रीमियर और युद्ध मन्त्री जनरल तोजो
नेताजी के साथ आज़ाद हिन्द फौज
की सलामी ले रहे हैं ।

प्रकार के बलिदान के हेतु प्रस्तुत रहना चाहिये। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि अन्धेरे और उजाले, शोक और आनन्द कष्ट सहन और विजय सभी अवस्थाओंमें मैं आपके साथ रहूंगा। मैं आपको भूख-प्यास, मुसीबत और मृत्यु के सिवा और कोई वस्तु नहीं दे सकता। हमें इस बात की चिन्ता नहीं कि स्वाधीन भारत को देखने के लिये हममें से कौन जीवित रहेगा। हमारे लिये तो यही बहुत है कि भारत स्वाधीन होगा और हम अपना सर्वस्व उसे स्वाधीन बनाने में बलिदान कर देंगे। इसके दो दिन बाद जापानके प्रधान मन्त्री जनरल तोजोने आजाद हिन्द फौजका जब वह फौजी कूच कर रही थी. नमस्कार ग्रहण किया। नेताजी और जनरल तोजो का एक साथ कन्धे से कन्धा मिला कर चलना एक ऐसा दृश्य था जो वहां उपस्थित भारतीयोंमें एक अमिट छाप छोड़ गया है। चारों ओर भारत का राष्ट्रीय झण्डा फहरा रहा था। पूरे १॥ घण्टे तक जनरल तोजो फौज की कूच देखते और नमस्कार ग्रहण करते रहे।

६ जुलाई को पाडंग के म्युनिसिपल आफिस के सामने विराट रैली हुई थी, जहां लाखों भारतीय एकत्र हुये थे। यहीं पर नेताजी ने स्त्रियों के लिये झांसी की रानी रेजीमेण्ट बनाने की घोषणा की थी और उपस्थित जन समुदाय से कहा था 'पूर्व एशिया मे लगभग २०००००० भारतवासी रहते है। मेरी इनसे ३ लाख सिपाहियों और ३ लाख डालरकी मांग है।' अनन्तर १२ जुलाईको

एक विराट सभाका आयोजन किया गया। सभाके २ घण्टे पहले ही हाल ठसाठस भर गया था और इसमे सम्मिलित होने के लिये १०-१० और १२-१२ मील चलकर स्त्रियां आई थीं। नेता जीने झांसी की रानी रेजीमेण्ड और रेडक्रास यूनिट के लिये रङ्ग-रूटों की माग की। इस सभा में एक गुजराती महिला ने अपने सब जवाहरात, अंगूठिया, हार और चूडिया दे दी थीं जिन्हें बाद को स्त्रियों के कार्य के लिये स्वाधीन भारत संघ के महिला विभाग को समर्पित कर दिया गया। नेताजीने बताया कि महात्मा गांधी ने सन् १९२१ से जो आन्दोलन देश की स्वाधीनता के लिये चलाये हैं उन सबमे हमारी महिलाओने महत्वपूर्ण भाग लिया है। उन्होंने न केवल जुलूस निकालने और पिकेटिंग करनेमे महत्वपूर्ण कार्य किया है बल्कि ब्रिटिश पुलिस के अमानुषी लाठी प्रहार सहने और जेल जाने में भी वे पीछे नहीं रहीं। स्वाधीनता के लिये गुप्त रूपसे जो क्रान्तिकारी आन्दोलन भारत में चलाये गये उनमें भी हमारी बहनों ने पूर्ण सहयोग दिया। इतिहास से भी यही सिद्ध है। सन् १८५७ मे भारत की स्वतन्त्रता का प्रथम युद्ध हुआ था; उसमें झांसी की वीर रानी ने क्या नहीं किया? यही वह रानी थी जिसने नंगी तलवार लेकर और घोड़े पर बैठ कर अपनी फौज का नेतृत्व किया था। हमारे दुर्भाग्य से वह युद्ध मे काम आयीं। वे विफल हो गयीं अर्थात् भारत विफल हो

जाय। परन्तु १८५७ मे इस महान रानीने जो कार्य प्रारम्भ किया था हमे उसे जारी रखना और पूरा करना है। इसलिये स्वाधीनताके इस अन्तिम संग्राम मे हम एक नहीं हजारों लाखों झांसी की रानियां चाहते हैं। आप कितनी बन्दूकें उठायेंगी और कितनी गोलियाँ छोड़ेंगी यह बात उतनी बडी नहीं है। सबसे मुख्य बात तो यह है कि आपके वीरता पूर्ण कार्य्यों का नैतिक प्रभाव है। इन्स-पेक्टरों की शिक्षा के लिये सिंगापुर और पेनाङ्ग मे दो आजाद स्कूल खोले गये जहा नारियों को ट्रेनिंग दी जाती थी। डाक्टर कुमारी लक्ष्मी स्वामीनाथन् झांसी की रानी रेजीमेण्टकी अध्यक्षा बनाई गई। इस रेजीमेण्ट की नारिया लम्बा पाजामा, खाकी कमीज, टोपी और रबड के जूते पहनती थीं।

नेताजी के पास सम्पूर्ण मलाया से भर्ती होने के लिये आवे-दन आ रहे थे। उन्होंने यह नियम बना दिया था कि सेनामें अपनी इच्छा से ही लोग भरती किये जायं। उनपर किसी प्रकार का दवाव न डाला जाय। सुदूर स्थानोंसे धन और वस्तुओंके रूपमे नेताजी के पास उपहार आ रहे थे। १५ अगस्तको सिंगापुर के फरेर पार्क मे उनका भाषण सुनने के लिये जो सभा हुई थी उसमे ३० हजार से भी अधिक व्यक्ति उपस्थित हुए थे, जिसमें बड़ी संख्यामें मुसलमानों की थी। यहीं पर उन्होंने यह घोषित किया था कि फौज का बड़ा हिस्सा यहा से बर्मा भेजा जायगा और वहाँ से भारत।

यहीं पर नेताजी ने फौजका नेतृत्व स्वीकार किया। और इस प्रकार का आदेश जारी करते हुए कहा—"मेरे लिये यह अवसर आनन्द और अभिमान का है। किसी भी भारतवासी के लिये भारत को स्वाधीन बनाने वाली सेना का सेनापति होने की अपेक्षा कोई दूसरा बड़ा मान नहीं हो सकता। मैं अपने को अपने ३८ करोड़ देशवासियोंका सेवक मानता हूं। मैं निश्चय कर चुका हूं कि अपने कर्त्तव्य को इस प्रकार पूरा करूंगा कि जिससे ३८ करोड़ भारतीयोंके स्वार्थ सुरक्षित रहें और प्रत्येक भारतवासी मुझ पर पूरा विश्वास रख सके। शुद्ध राष्ट्रीयता और न्याय के आधार पर ही भारतको स्वाधीन बनाने वाली सेना का निर्माण हो सकता है। आजाद हिन्द फौज को आगामी युद्ध में बड़ा काम करना है। जब हम खड़े होंगे, आजाद हिन्द फौज पहाड़ी चट्टान की तरह खड़ी होगी। और जब हम कूच करेंगे तब आजाद हिन्द फौज स्टीम रोलर की तरह कूच करती होगी 'हमारा कार्य्य सरल नहीं है। युद्ध लम्बा और कठोर होगा। परन्तु अपने लक्ष्यकी महत्तापर हमें अखण्ड विश्वास है। ३८ करोड़ मनुष्यों को जो समूची मानव जाति का पचमांश है स्वाधीन होने का अधिकार है और वे अब स्वाधीनता का मूल्य चुकाने के लिये प्रस्तुत हैं। इसलिये संसारमें अब कोई ऐसी शक्ति नहीं है जो हमको हमारे जन्म सिद्ध अधिकार स्वाधीनता से वंचित रख सके। साथियों, अब हमारा कार्य्य

प्रारम्भ हो चुका है। दिल्ली चलो के नारेके साथ आओ हम लोग तब तक युद्ध जारी रक्खेंगे जब तक नयी दिल्लीके वायसराय भवन पर हमारा राष्ट्रीय झंडा फहराने न लगे और आजाद हिन्द फौज भारतकी राजधानी दिल्ली के पुराने लाल किले के अन्दर अपनी विजय की परेट न कर सके। आजाद हिन्द फौज में भरती होने वाले सदस्य को निम्न प्रतिज्ञा-पत्र पर हस्ताक्षर करना पड़ता था :—

"मैं स्वेच्छा से आजाद हिन्द फौज मे अपना नाम लिखवा रहा हूं। मैं हृदय से अपने आपको भारत की भेंट करता हूं और प्रतिज्ञा करता हू कि मैं अपना जीवन भारत की स्वतन्त्रता के लिये अर्पण कर दूंगा। मौत के खतरे से भी मुझे क्यों न खेलना पड़े, भारत की सेवा तथा भारती स्वातन्त्र्य-आन्दोलन में तन-मन से शरीक होने मे मैं कुछ भी उठा न रखूंगा और इससे मैं किसी व्यक्तिगत लाभ की भी आकाक्षा नहीं रखूंगा।' मैं प्रत्येक भारतीय को जाति व धर्म से ऊपर अपना भाई-बहन समझूंगा।" आजाद सेनाके अफसर पद के अनुसार विभिन्न प्रकार के बिल्ले लगाते थे। अफसर और सैनिक अपनी छाती पर बांई ओर तिरंगे झण्डे का बैज लगाते थे, उनकी टोपियों पर आजाद हिन्द फौज का पीतल का बैज रहता था, बैज पर भारत का मानचित्र और इत्तफाक, इत्तिहाद और कुरबानी ये तीन शब्द खुदे होते थे। आजाद हिन्द सेनाके सैनिकोंको दृढ़ता और समरलिप्सा अत्यन्त प्रबल कही जाती है। यहीं पर "कदम-कदम

आज़ाद हिन्द सरकार

आजाद हिन्द सेना के सम्बन्ध मे अपने पाठकों को संक्षेप मे हम बता चुके हैं। अब जिस स्वतन्त्र भारत की सरकार के अन्तर्गत यह काम कर रही थी, उसका कुछ परिचय देना आवश्यक है। १६४३ के अक्तूबर मे इण्डिपेंडेण्ट लीग ने एक विराट सम्मेलन का आयोजन किया। नेताजी ने लगभग डेढ़ घण्टे तक भाषण कर आजाद हिन्द की अस्थाई सरकार के निर्माण का महत्व बतलाया। यहीं पर उन्होंने परमेश्वर के नाम पर सब लोगों से भारत भक्ति की शपथ ली और कहा "मैं सुभाषचन्द्र बोस भारत और ३८ करोड़ भारतवासियों को स्वतन्त्र करने की शपथ लेता हूं। और अपनी अन्तिम स्वांस तक स्वतन्त्रता के इस पुनीत संग्राम को चलाता रहूंगा। मैं सदैव भारत का सेवक बना रहूंगा और अपने ३८

करोड़ भारतीय भाई बहनों की भलाई में लगा रहूंगा।" इस सभा में आजाद हिन्द फौज के सदस्य, भारतीय नागरिक और कुछ जापानी अफसर शामिल थे। थाइलैण्ड; जावा, सुमात्रा, हिन्द चीन, हांगकांग और मलाया जैसे पूर्वी एशियायी देशों के भारतीय प्रतिनिधि भी इसमे उपस्थित थे। उक्त बैठक मे श्री सुभाषचन्द्र बसु द्वारा नियुक्त मंत्रियो ने स्वतन्त्र भारत सरकार के प्रति ईमानदार रहने की शपथ ग्रहण की। प्रतिनिधि शपथ ग्रहण मे सम्मिलित नहीं हुए परन्तु उन्होने अस्थायी सरकार की घोषणाका प्रसन्नतापूर्वक स्वागत किया। उस बैठकमे लगभग ५००० व्यक्ति उपस्थित थे तदुपरान्त निम्नलिखित घोषणा पढ़ी गयी :—

अस्थायी सरकार की घोषणा—घोषणामे भारतीय नेताओं और सरकार के बीच हुए संघर्ष की चर्चा करते हुए कहा गया है कि "हमारा दुर्भाग्य है कि हमारे पूर्वजों ने आरम्भ मे यह बात महसूस नहीं की कि अंग्रेज सारे भारत के लिये भारी खतरा है और इस लिये उन्होने उनसे संयुक्त होकर मोर्चा नहीं लिया।" घोषणा में भारत के राजनीतिक आन्दोलन की और विशेषतः कांग्रेस के जन्म तथा कार्य की चर्चा करते हुए कहा गया है कि 'कांग्रेस ने १९३७ से १९३९ तक ८ प्रान्तों मे अपने मन्त्रिमण्डलों द्वारा यह बात प्रमाणित कर दी है कि हम अपना शासन कार्य स्वयं ही बड़े मजे में चला सकते है।' फिर बताया गया है कि भारत की स्वतन्त्रता के लिये कैसा कार्य चलाया गया है।

आज़ाद हिन्द सरकार

अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति तथा युद्ध की गति की चर्चा करते हुए उसमे कहा गया कि अब स्वतन्त्रता का ऊषाकाल आ रहा है अतः भारतीयों का कर्त्तव्य है कि वे अपनी अस्थायी सरकार संघटित कर लें और उसके द्वारा अपनी स्वतन्त्रता का अन्तिम युद्ध चलायें। भारत के नेता जेलों मे बन्द हैं अतः भारतीय स्वातन्त्र्य लीग का यह कर्तव्य है कि वह देश और विदेशके सभी भारतीयों की सहायता से आजाद हिन्द की अस्थायी सरकारकी नियुक्ति का तथा अपनी आजाद हिन्द फौज द्वारा भारतका अन्तिम स्वातन्त्र-संग्राम चलानेका कार्य अपने हाथ में ले।'

'आजाद हिन्द की अस्थायी सरकार की स्थापना के उपरांत हम अपनी पूरी जिम्मेदारीके साथ अपने कर्तव्य में प्रवृत्ति होते हैं। ईश्वर से हम प्रार्थना करते हैं कि वह हमे अपनी मातृ भूमि का उद्धार करनेमें सफलता प्रदान करे। हम अपने देशकी स्वतन्त्रता तथा उन्नति के लिए अपने प्राण अर्पण करते हैं। अस्थायी सरकारका कर्त्तव्य होगा कि वह स्वातन्त्र्य-संग्राम चलाये तथा अंग्रेजों और उनके मित्रों को भारत से निकाल बाहर करे। तदुपरान्त अस्थायी सरकार का कर्तव्य होगा कि वह आजाद हिन्द की स्थायी सरकार की स्थापना करे जिसे जनता का पूरा समर्थन प्राप्त हो। ऐसी स्थायी सरकार स्थापित न होने तक यह अस्थायी सरकार ही भारत वासियोंके नाम देशका शासन कार्य चलायेगी।

अस्थायी सरकार को प्रत्येक भारतीय का समर्थन प्राप्त करनेका अधिकार है और वह इसका दावा करती है। वह प्रत्येक नागरिकको धार्मिक स्वतन्त्रता, समान अधिकार और समान अवसर प्रदान करने की गारण्टी देती है। वह देशकी सारी जनता की समृद्धि के लिए प्रत्येक सम्भव उपाय करनेका वचन देती है। ईश्वर के तथा उन पिछली पीढ़ियों के, जिन्होंने सारे भारत को एक राष्ट्र रूप मे गठित किया है तथा उन वीरों के नाम पर जिनकी वीरता और आत्मवलिदान हमारे लिए आदर्श कार्य कर रहा है जनताको उचित है कि वह हमारे झण्डे तले एकत्र हो भारतीय स्वतन्त्रता के लिये अंग्रेजों और उनके सभी मित्रों पर अन्तिम आक्रमण करे और अपना संग्राम उस समय तक जारी रखे जब तक शत्रु भारत भूमि से पूर्णतः निकाल बाहर न किया जाय और भारत पुनः स्वतन्त्र न हो जाय।"

घोषणा पत्र पर अस्थायी सरकार के इन सभी सदस्यों के हस्ताक्षर है—

सुभाषचन्द्र वसु (राज्य के प्रधान, मन्त्री तथा युद्ध और पर राष्ट्र विभाग के मन्त्री)।

कप्तान श्रीमती लक्ष्मी (महिला संघटन)।

एस० ए० ऐयर (प्रचारक और प्रकाशन)।

लेफ्टिनेण्ट कर्नल आइ० ए० सी० चटर्जी (अर्थ)।

आजाद हिन्द सरकार

लेफ्टिनेण्ट कर्नल अजीज अहमद, लेफ्टिनेण्ट कर्नल गुलजार सिंह, लेफ्टिनेण्ट कर्नल जे० के० भोंसले, लेफ्टिनेण्ट कर्नल आइ० एम० एस० भगत, लेफ्टिनेण्ट कर्नल एम० जेड० केनी, लेफ्टिनेण्ट कर्नल ए० डी० लोकनाथन्, लेफ्टिनेण्ट कर्नल ईसान कादिर, लेफ्टिनेण्ट कर्नल शाहनवाज (सेना के प्रतिनिधि)।

ए० एम० सहाय मन्त्री (मन्त्री का पद)।

रासबिहारी वसु (प्रधान परामर्शदाता) करीमगनी, दीनानाथ दास, डी० एम खां, ए० यलप्पा, जे० थिवी, सरदार ईश्वर सिंह (परामर्शदाता)।

ए० ए० सरकार (कानूनी परामर्शदाता)।

अस्थायी सरकारकी गजट—सरकारी नियुक्तियों के सम्बन्ध में सूचना अस्थायी सरकार द्वारा प्रकाशित गजट मे रहती थी। सेना में नियुक्ति की सूचना 'आजाद हिन्द फौज गजट' में प्रकाशित होती थी। आजाद हिन्द फौज और जापानी दोनों सेनाएं दो मित्र सेनाओं की तरफ कार्य करती थीं।

आजाद हिन्द दल—श्री कादिर आजाद हिन्द दल के नेता थे। इस दल का उद्देश्य उन क्षेत्रों पर शासन करना था जिनपर आजाद हिन्द फौज का कब्जा हो जाता था। इसमे नागरिक अधिकारी थे, जिन्हें सिंगापुर और रंगूनमें मुल्की शासनकी शिक्षा

मिली थी। लेफ्टिनेण्ट कर्नल चटर्जी आजाद हिन्द सरकार द्वारा अधिकृत प्रदेशों के गवर्नर बनाये गये थ।

सुभाष बाबू ने यहाँ स्पष्ट कर दिया कि यदि स्वाधीन भारत की सरकार भारत के अन्दर बनती और वह सरकार स्वतन्त्रता का अन्तिम संग्राम छेडती तो बहुत ही अच्छा होता, परन्तु इस समय भारत की जेसी अवस्था है और जिस प्रकार वहाँ के सभी प्रमुख-नेता जेलों मे हैं। उस समय भारतकी सीमा के अन्दर इस प्रकार की सरकार को बनाने की आशा व्यर्थ है। परन्तु इसमे कुछ भी सन्देह नहीं है कि ज्यों ही हमारी सेना भारतकी सामामे घुसेगी और भारतीय भूमि पर राष्ट्रीय पताका फहरायेगी त्योंही भारत मे वास्तविक क्रान्ति प्रारम्भ हो जायगी। ऐसी क्रान्ति जो भारत मे ब्रिटिश शासन का अन्त कर देगी। राष्ट्रीय सेना के संगठन ने पूर्वी एशिया के भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन को वास्तविकता और गम्भीरता प्रदान की है। यदि यह सेना संगठित न हुई होती तो पूर्वी एशिया मे स्वाधीनता संघ केवल प्रचार का यन्त्र बना रहता। राष्ट्रीय सेना के निर्माण के साथ साथ यह सम्भव और आवश्यक है कि स्वाधीन भारत की अस्थायी सरकार का निर्माण किया जाय। इसका निर्माण कर एक ओर जहाँ हम भारतीय परिस्थिति का सामना कर रहे हैं वहाँ दूसरी ओर इतिहासके पद-चिन्हों का भी अनुसरण कर

रहे है। १६१६ में आइरिश लोगों ने अपनी प्राथमिक स्वाधीन सरकार बनाई थी। चेकों ने गत महायुद्ध में यही किया था— तुर्कों ने मुस्तफा कमाल के नेतृत्व मे अनाटोलिया मे अपनी प्राथमिक सरकार बनाई थी। प्राथमिक सरकार प्रत्येक भारतीय को धार्मिक स्वतन्त्रता और प्रत्येक नागरिक को समान अधिकार तथा सुविधा देनेका वचन देती है। कांफ्रेंस में सहस्रों भारतीयों ने सम्मिलित कंठ से गाया—

शुभ सुख चैन की वर्षा बरसे, भारत भाग है जागा।
पञ्जाब सिन्ध गुजरात मराठा, द्राविड़ उत्कल बंगा॥
चञ्चल सागर विन्ध्य हिमालय नीला जमना गंगा।
तेरे नित गुन गाये।
तुझ से जीवन पाये॥
सब तन पाये आशा,
सूरज बनकर जगमें चमके भारत नाम सुभागा॥
जय हो! जय हो! जय हो! जय हो!
जय हो! जय हो! जय हो! जय हो!
सबके दिल में प्रीत बसाये तेरी मीठी बानी।
हर सूबे के रहने वाले हर मजहब के प्रानी॥

सब भेद व फर्क मिटा के।
सब गोद में तेरी आके।
गूंथेंगे प्रेम की माला।
सूरज वनके जगमें चमके भारत नाम सुभागा।
जय हो! जय हो! जय हो! जय हो!
जय हो! जय हो! जय हो! जय हो!
सुवह सवेरे पंछि पखेरू तेरे ही गुन गायें।
वास भरी भर पूर हवाएं जीवन में ऋतु लायें।
सब मिलकर हिन्द पुकारे।
जय आजाद हिन्द के नारे।
प्यारा देश हमारा।
सूरज वनके जग में चमके भारत नाम सुभागा।
जय हो! जय हो! जय हो! जय हो!
जय हो! जय हो! जय हो! जय हो!
भारत नाम सुभागा।

अक्तूबर की २३ तारीख को जापान सरकार ने आजाद सरकार को स्वीकार कर प्रतिज्ञा की कि प्रत्येक सम्भव सहयोग और समर्थन आजाद हिन्द सरकार को भारत की पूर्ण स्वाधीनता

के युद्ध में दिया जायगा। इसके तीन दिन बाद जर्मन सरकार के वैदेशिक मन्त्री रिवन ट्रापने सरकारी तार द्वारा सूचित किया कि जर्मन सरकार हालमे ही स्थापित स्वाधीन भारत की प्राथमिक सरकारको स्वीकार करती है। इसी प्रकार स्वतन्त्र बर्मा, स्वतन्त्र फिलीपाइन्स, क्रोटिया, इटली, चीन और मंचुकोने भी इस सरकारको स्वीकार कर लिया। आयरलैंडके प्रजातन्त्रियोंने नेताजी के पास बधाईका सन्देश भेजा। उससे वे अत्यधिक प्रसन्न हुए। नवम्बरके प्रथम सप्ताहमे वृहत्तर पूर्व एशिया सम्मेलनमे (जो टोकियोमे हुआ था) जनरल टोजोने जापान सरकारकी ओरसे घोषणा की; अण्डमान और निकोबार द्वीप समूह आजाद हिन्द सरकारको दिये जाते हैं।

अण्डमान और निकोबार टापुओं के मिलनेपर नेताजी ने हर्ष प्रकट करते हुए एक प्रेस भेंट मे कहा,—भारतीयों के लिये अण्डमान की वापसी पहला स्थान है जो ब्रिटिश जुयेसे स्वतन्त्र किया गया है। इस इलाके पर अधिकार कर आजाद हिन्द सरकार वास्तव मे राष्ट्रीय स्वरूप की बन गयी है। ब्रिटिशों ने इन स्थानों को राजनैतिक कैदियों के कारागार रूप मे बना रखा था जहाँ ब्रिटिश सरकारको पदच्युत करनेके अपराधमें उन्हें आजीवन कालेपानी की सजा मिलती थी। सैकड़ों की संख्या में वे वहीं रखे जाते थे। पेरिस के बैस्टिले जेल की भाति जिसे

फ़्रांस की क्रान्तिमें पहले मुक्त किया गया था और राज बन्दियों को छोड़ा गया था, अण्डमन भो जहा हमारे देश भक्तों को वडो वडो कठिनाइयाँ झेलनो पडी है, पहले छुड़ाया गया है। धोरे धीरे भारतके सभो इलाके स्वतन्त्र बनाये जायंगे परन्तु पहले को पहला महत्व मिलता ही है हमने अण्डमन का नाम "शहीद" और निकोबार को "स्वराज्य" अमर शहोदों को स्मृति में रखा है। आजाद हिन्द सरकार की ओरसे पूर्ण 'स्वराज्य' नामक दैनिक और 'जय हिन्द' नामक पत्र प्रकाशित किये जाते थे।

सेना सम्बन्धी आदेश

भारतीय स्वतन्त्रता संघ के कार्य मे हिन्दू मुसलमान, ईसाई, यहूदी सभो सम्प्रदायों के लोग थे परन्तु उनमे किसी प्रकारका भेद-भाव नहीं था। भोजनके समय शाकाहारी और मासाहारी दोनों हो साथ साथ एक पंक्तिमें बैठते थे। शाकाहारियोंको पहले भोजन परोस जाता था। इसके बाद जो मास चाहते थे उन्हें दिया जाता था। प्रारम्भ में एक बहुत बड़ा प्रश्न था परन्तु बारम्बार सभाओं द्वारा प्रचार और देश-भक्ति पर जोर देकर जनसाधारणको इस प्रकार शिक्षित किया गया कि लोगोंको कोई आपत्ति नहीं रही। कर्नल चटर्जी और श्री रासबिहारी बोसने इस दिशामें विशेष प्रयत्न किया था।

***

दिल्ली चलनेकी तैयारी

आजाद हिन्द सेना और आजाद हिन्द सरकारका विवरण हमारे पाठक ऊपर की पंक्तियों में पढ़ चुके हैं। अब हमें यह देखना है कि आगेकी घटनाओं पर दोनों का क्या प्रभाव पड़ा और नेताजीने 'दिल्ली चलो' का जो नारा लगाया था उसका क्या परिणाम निकला। भिन्न भिन्न देशोंकी स्वतन्त्र सरकारों द्वारा स्वीकृत होनेके पश्चात आजाद हिन्द सरकार की ओरसे अक्टूबर के अन्तिम सप्ताहमें ब्रिटेन और अमरीका के विरुद्ध मन्त्रिमण्डलकी सर्वसम्मति से नेताजीने युद्ध घोषित कर दिया। यह घोषणा पाडंग की सार्वजनिक रेली में नेताजीने की थी। यहां पचास हजार से भी अधिक जनता उपस्थित थी। यहीं फौज ने नेताजी को सलामी दी थी और दिल्ली चलो का नारा दुहराया था। यहीं पर नेताजी ने लोगों

से यह खुलासा पूछा था कि यदि कोई भाई सेना को छोड़ना चाहता हो तो अभी छोड सकता है। परन्तु एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं निकला जो बाहर जाना चाहता हो। नेताजोने घोषित किया कि आजाद हिन्द फौज जब लड़ाई छेड़ेगी तब अपनी ही सरकारके नेतृत्वमे छेड़ेगी और जब यह भारतकी सीमा में प्रविष्ट होगो तब स्वतन्त्र किये हुए इलाकों का शासन अपने आप आजाद हिन्द सरकारके हाथमें आ जायगा। भारत की स्वाधीनता भारतीयोंके प्रयत्न और बलिदान तथा हमारी सेना के ही प्रयत्नोंसे आयेगी। इसके बाद नेताजीने विश्वके समाचार पत्र प्रतिनिधियोंको दिये गये वक्तव्यमे बतलाया कि राष्ट्रीय भारत एक लम्बे अरसे ब्रिटेन के विरुद्ध युद्धरत है। फिर भी चूंकि स्वतन्त्र भारतकी सरकार पहले पहल बनी है, अतः हमारा रुख खुलासा करनेके लिये यह आवश्यक है कि ब्रिटेन और अमरीका के विरुद्ध इस प्रकारकी घोषणा की जाय। यह युद्ध घोषणा केवल प्रचार के लिये नहीं है। अपने कार्यों द्वारा हम सिद्ध करेंगे कि हम जो कहते हैं उसे पूरा भी करते हैं। नेताजीकी इस घोषणा से सर्वत्र उत्साह छा गया था। अब सैनिक नर और नारी छावनियोंमे रहते थे। प्रतिदिन ड्रिल, परेट, भाषण और सैनिक शिक्षा का कार्य चालू था। सबके सब शिक्षक भारतीय थे। जापानी एक भी नहीं था। यह तय हुआ था कि जापान आजाद सेना को अस्त्र-शस्त्र और युद्ध-सामग्रीकी सप्लाई करेगा और आजाद सर-

कार उसके दाम चुकायेगी। कोई-चीज उधार नहीं ली जाती थी। स्वाधीन किये हुए भारतीय इलाकों पर शासन करनेके लिये शासक निर्माण करनेके हेतु एक स्कूल खुला हुआ था। विशेष रूप से सुशिक्षित लोग ही इसमें भर्ती किये जाते थे। इसमें टेकनिकल और शासन सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त करनेवाले अच्छी संख्या में थे। इसका नाम "आजाद हिन्द दल" था। दिसम्बरके प्रथम सप्ताहमे फौज का कुछ हिस्सा उत्तर की ओर कूच करता हुआ रंगून पहुंचा। मलाया इस फौजका मुख्य केन्द्र था। यहाँ सेनाके लिये प्रत्येक भारतीय को शिक्षादी जाती थी। मलायाके कुछ स्थानोंके ६६ प्रतिशत निवासी स्वतन्त्रता संघके प्रतिनिधि बन गये थे। प्रत्येक स्थानमें हिन्दुस्तानी प्रचारके लिये स्कूल खोले गये थे। इधरके निवासियोंमें बड़ी संख्या तामिल लोगोंकी है उनके लिये हिन्दुस्तानी शिक्षाके साथ तामिल शिक्षाका भी प्रबन्ध किया गया था। सुभाष बाबूके इस प्रकार बढ़ते हुए प्रभावसे और सर्वथा राष्ट्रीय आधारपर बनी हुई फौजसे जापानी साम्राज्यवादी प्रसन्न नहीं थे। वे तो नेताजी और इस आन्दोलनको अपनी कठपुतली बनाना चाहते थे। पर जब इसमें उन्हें सफलता न मिली तब फौजको अधिक भर्तीमें वे बाधा डालने लगे। अब तक फौजकी संख्या ४० हजार हो चुकी थी। जापानियोंने यह कहकर कि अब वे और अधिक अस्त्र-शस्त्र और युद्धका सामान नहीं दे सकेंगे। सेनाकी और भरतीको रोक

दिया। नेताजीने एक बालक सेनाका भी निर्माण किया था। रंगूनमें आजाद हिन्द नामक एक बैंक ५० लाख डालरके मूलधन से स्थापित हुआ। बर्मासे ८॥ करोड रुपये एकत्र किये गये। जापानी सिक्कोंकी अपेक्षा इस बैंकके चेकोंका व्यापारी समाज और जनसाधारण में अधिक मान था। इसकी तीन शाखाएं भिन्न भिन्न स्थानोंमें और भी खोली गयी थीं। जो ब्रिटिशोंके पुनः बर्मा अधिकार करने तक काम करती रहीं। रंगून के कुछ प्रमुख व्यवसायियोंने सरकार और फौजके खर्चके लिये २० लाख से अधिक डालर संग्रह करके दिया था। मलाया: बर्मा, थाइलैण्ड जावा, सुमात्रा और बोरनियोंमे फौजकी ट्रेनिंगके लिये सैकडों केन्द्र खोले गये थे। थाइलैण्डके एक ट्रेनिंग केन्द्रमें एक सहस्र व्यक्ति एक साथ शिक्षा पा रहे थे। एक प्रत्यक्ष दर्शीका कथन है कि मैंने फौजी शिक्षाके एक केन्द्रको देखा—जहाँ लगभग ७०० रंगरूट ट्रेनिंग पा रहे थे। यह कल्पना करना कठिन है कि भारतीय क्लर्क और व्यापारी—जिनके पूर्वजोंने गत १०० वर्षोंमे बन्दूक को हाथ तक नहीं लगाया था, सैनिक शिक्षामे इस प्रकार योग्य सिद्ध होंगे। वास्तवमे उत्साह सबसे बड़ी शक्ति है। सितम्बरके अन्तिम सप्ताहमें नेताजीके साथ कुछ लोग रंगूनमें भारतके अन्तिम मुगल बादशाह बहादुरशाहकी समाधि पर श्रद्धा प्रकट करने गये थे। नेताजीने सम्राटके प्रति बड़ी गम्भीर श्रद्धा प्रकट

की और उनकी बनायी हुई एक कविताका मर्म सबको समझाया। कविता यह है:—

गाजियों में बू रहेगी जब तलक ईमान की।
तब तो लण्डन तक चलेगी तेग हिन्दुस्तान की ॥

अफसरोंकी ट्रेनिंगके लिये सिंगापुर और रंगूनमें दो केन्द्र थे। आजाद हिन्द दलकी ट्रेनिंग के लिये पुनर्निर्माण विभाग के अन्तर्गत सिंगापुर और रंगूनमें केन्द्र खोले गये थे। फौजके प्रयत्न से भारतमें स्वतन्त्र होनेवाले इलाकोंका शासन करनेके उद्देश्यसे यहां शिक्षा दी जाती थी। कर्नल चटर्जी आजाद हिन्द सरकार द्वारा स्वतन्त्र बनाये हुए इलाकों के पहले गवर्नर और श्री लोकनाथन शहीद द्वीपके चीफ कमिश्नर नियुक्त किये गये।

ऊपरकी पंक्तियों मे झांसीकी रानी रेजीमेण्टके सम्बन्ध में चर्चा की गयी है। अक्टूबरके अन्तिम सप्ताहमे इस रेजीमेण्टका उद्घाटन नेताजीके हाथों सम्पन्न हुआ। यह दिवस झांसी की रानीका जन्म दिवस था। इस अवसर पर जब नेताजी राष्ट्रीय झण्डा फहरा रहे थे, रेजीमेण्टकी महिलायें कन्धों पर बन्दूकें लिये बड़े ध्यानसे चित्रवत खड़ी थीं। नेताजीने बहनोंको सम्बोधित करते हुए कहा—"इस कैम्पके उद्घाटनसे हमारे इस पूर्व एशियाके इतिहासमे एक नया अध्याय प्रारम्भ हुआ है। भारतका अतीत महान और गौरवयुक्त रहा है। भारत झासीकी रानी जैसी महिमामयी पुत्री कैसे उत्पन्न कर सकता था यदि उसकी परम्परा गौरवमय न होती। पूर्व भारतमें जैसे मैत्रेयी जैसी नारियां मिलती हैं

वैसे ही हम महाराष्ट्रमें अहिल्या बाई, बंगालमें रानी भवानी, और दिल्लीमें रजिया बेगम जैसे उत्साहवर्द्धक उदाहरण पाते हैं। झाँसी की रानीकी चर्चा करते समय हमें यह याद रखना होगा कि उस समय उनकी अवस्था केवल २० वर्ष की थी। आप सहजमें ही कल्पना कर सकती हैं कि २० वर्ष की एक बालिकाके लिये घोड़े पर चढ़ने और समर भूमिमें तलवार चलानेका क्या अर्थ है। आप आसानीसे समझ सकती हैं कि उनमे कितना साहस और उत्साह था। उनके विरुद्ध लड़ने वाले इंगलिश सेनापति ने कहा था कि विद्रोहियों में वे सबसे श्रेष्ठ वीर थीं। पहले उन्होंने झांसी के दुर्ग से युद्ध किया और जब किला घिर गया तब उन्होंने कालपी से लड़ाई की। इस युद्ध भूमि से हटनेके बाद उन्होंने तांतिया टोपीके साथ सन्धि कर ली और ग्वालियर के किले पर अधिकार कर लिया। इस दुर्ग को अपना केन्द्र बनाकर उन्होने संग्राम जारी रखा और यहा आखिरी समर मे युद्ध करते हुए वे स्वर्गवासिनी हुईं। दुर्भाग्यवश झासी की रानी पराजित हुईं पर यह पराजय उनकी नहीं भारतकी पराजय थी। वे गुजर गयीं, पर उनकी आत्मा अमर है। भारत फिर झासी की रानीको उत्पन्न करेगा और विजयकी ओर अग्रसर होगा।"

मलाया, थाइलैंड और बर्माके भिन्न भिन्न स्थानोंमें भर्तीके लिये कई केन्द्र खोले गये थे जिसमें केवल मलायासे १ सहस्र महिलाएं भरती हुईं थीं। इनको नर्सिंग (धात्री शिक्षा) और युद्ध कौशलकी भी शिक्षा दी जाती थी।

—*—

आजादी का युद्ध

दिसम्बर के अन्तिम सप्ताहमें नेताजो शहीद टापूमें पधारे और पोर्ट ब्लेयरमे तिरंगा झण्डा फहराया जहां कि भारतीय क्रान्तिकारियोंको बड़ी बड़ी विपत्तियां और कठिनाइयां सहनी पडी थीं। जनवरीके प्रथम सप्ताहमें फौजका अग्रवर्ती सदर मुकाम रंगून पहुंचाया गया जिससे वह युद्ध क्षेत्रके अधिक निकट रहे। इसका एक कारण यह भी था कि जापानी सेनापति वर्मासे भारत पर शीघ्र ही होने वाले आक्रमणमें इस फौज को सम्मिलित करनेके लिये विशेष इच्छुक नहीं थे। उनका यह विचार था कि पहले उनकी सेना इम्फाल ले ले और तब आजाद सेना उसमें योगदान करने जाय। नेताजीको यह बात बहुत बुरी लगी, और उन्होंने दृढतासे कहा कि आजाद सेना भारत प्रवेशके युद्धमें अवश्य ही आगे रहेगी। फरवरीके पहले

सप्ताहमें अर्थात् ४ फरवरी १९४४ को भारतीय स्वतन्त्रता की लड़ाई छिड़ गयी। जापानियोंने अपनी शक्तिभर आजाद सेना द्वारा जिसकी संख्या युद्ध भूमि मे २० हजारसे कम नहीं थी, एक ही मोर्चेपर पूरी ताकत लगानेमें बाधा डाली, फिर भी १८ मार्चको आजाद फौज भारतीय सीमाको पारकर भीतर दूरतक घुस गयी। कहते हैं कि आजाद सेनाके प्रधान सेनापति कैप्टेन शाहनवाजने भारत भूमि—मनीपुर में सर्वप्रथम तिरंगा झण्डा फहराया था। सीमा पारकर आजाद सैनिकोंने मातृभूमिको साष्टाग नमस्कार किया और भारतकी मिट्टीका चुम्बन किया। वह दृश्य बहुत ही प्रभावोत्पादक रहा होगा, जब सैनिकोंने मातृभूमिकी मिट्टीको हाथमे ले यह शपथ ली होगी कि वे युद्धसे पग पीछे नहीं हटायेंगे और भारतको स्वतंत्र किये विना विश्राम नहीं करेंगे। फौज ने टामू, कोहिमा, पालेल और टिड्डिम तथा मोर्चेके दूसरे स्थानोंपर घोर संग्राम किया और अधिकार कर लिया। साथ ही मनीपुरकी राजधानी इम्फाल को घेर लिया गया। विचार यह था कि वर्षा वहीं बितायी जायगी। परन्तु ठीक समय पर जापानियोंने विमानोंकी सहायता रोक दी अतः इस सेनाको मनीपुरसे लौटना पड़ा। यह पीछे हटना विमानोंकी कमी, खाद्य और सप्लाई तथा अस्त्रोंके अभाव के कारण हुआ। परन्तु एक बात निश्चित रूपसे सिद्ध हो गयी कि उचित साधन मिलनेपर भारतीय सैनिक अपने शत्रुओं

को परास्त कर वाहर निकाल सकते हैं। यहाके पहले ही युद्ध में ब्रिटिश जैसी सुशिक्षित एवं सुसज्जित सेनाको मुंहकी खानी पडी थी। साहस, मजबूती, युद्ध कौशलमें भारतीय सैनिक, जिनमें मजदूर, क्लर्क और व्यापारी अधिक थे,—अद्वितीय सिद्ध हुए। कर्त्तव्य निष्ठा और वीरताके कितने ही सुन्दर उदाहरण उन्होंने छोडे हैं। फटे पुराने कपड़े पहने और अध पेट सिपाहियोंने गोला बारूदकी कमी और हवाई सहायतासे रहित होकर भी पूर्ण रूपसे सुसज्जित ब्रिटिश सेनाको पहली ही लड़ाइयोंमें पछाड़ दिया था। कहा जाता है कि आजाद हिन्द सेना हाथाहाथी युद्धमे अजेय थी। आराकानकी पहाड़ियों और इम्फाल तथा पालेलकी लड़ाइयोंमें इनकी युद्ध शक्ति देखकर विदेशी सेनापति चकित रह जाते थे। आजाद सैनिक और भारतीय तथा ब्रिटिश सैनिकोंमें जहाँ सामना हो रहा था वहा की कुछ घटनाएं बहुत ही रोचक हैं।

गुलामीके घी से आजादी की घास अच्छी !

इम्फाल की युद्ध-भूमि में एक ओर ब्रिटिश सरकार की हुकूमत थी तो दूसरी ओर आजाद हिन्द फौज की। दोनों सेनाओंके वीच अमराईका एक वृक्ष था। उस पर आजाद हिन्द फौज का एक तख्ता लटक रहा था, जिस पर लिखा था—"हमारे साथ आओ और आजादी के लिये लड़ो" इसके उत्तर में दूसरे सैनिकों ने उसी तख्ते पर लिखा—"तुम लोग जापान

के गुलाम हो। तुम लोग रोटी के लिए मरते हो। तुम नमक हराम हो। अगर तुम इधर आ जाओ तो तुमको सब तरहका खाना मिलेगा।"

आजाद हिन्द फौज ने इसका उत्तर इस प्रकार दिया,— "गुलामी के घी और आटेसे आजादी की घास अच्छी है। हम लोग जापान के टुकड़ खोर नहीं हैं। हम तो नेताजी के हुक्म से लडते हैं।" और इसके बाद ही आजाद हिन्द सैनिकोंने निम्न लिखित गीत गाया:—

सिरपर तिरंगा झण्डा जलवा दिखा रहा है —

कौमी तिरंगे झण्डे ऊंचे रहो जहा में
हो तेरी सर बुलंदी ज्यों चांद आसमां में॥

तू मान है हमारा, तू शान है हमारी।
तू जीतका निशा हो, तू जान है हमारी॥

हरइक बशर के लब पै जारी हैं ये दुवाएं।
कौमी तिरंगा झण्डा हम शौकसे उड़ाएं॥

आकाश औ जमींपर हो तेरा बोलवाला।
झुक जाय तेरे आगे हर ताज तख्तवाला॥

हर कौमकी नजरमें तू हो निशां अमनका
हो ऐशसे मुअस्सर सारा तेरा जहा हो।

मुश्ताक वे-नवाबीं खुश होके गा रहा है
सिरपर तिरंगा झण्डा जलवा दिखा रहा है।
कौमी तिरंगे झण्डे ऊंचे रहो जहां में॥

कहते हैं कि इस गीत के बाद ब्रिटिश सेना के भारतीय सिपाही दूसरे मोर्चे पर हटा दिये गये। दूसरी घटना इम्फालके पास की है। पहले के हवाई अड्डे के बहुत समीप आजाद हिन्द सैनिक तथा जापानी सैनिक पहुंच चुके थे। विचार यह था कि रात में विद्युत आक्रमण कर इस पर अधिकार किया जायगा। इस समय आजाद सैनिकों के पास राशन की कमी थी। वे जंगली कंद-मूल फल और फूलों पर निर्वाह कर रहे थे। और इसके साथ उनको कुछ चावल भी दिये जाते थे। हवलदार नवाव खां ने दिल्ली के कोर्ट मार्शल के समक्ष गवाही देये हुए २८ नवम्बर को स्वीकार किया कि "यों तो राशन में चावल, चीनी, नमक और तेल सम्मिलित था। किन्तु मोर्चपर राशनमें अधिकसे अधिक १० से १२ आउंस तक चावल मिलता था; किन्तु निश्चित कुछ भी नहीं था। कभी कभी तो राशन मिलता ही न था और तब सैनिक पास पडोस के जङ्गलों में चले जाते थे और केला तथा जो भी खाने योग्य फल मिलता था खाते थे।" फौज के कमाण्डर ने इस अवस्था में जापानी सेनापति से अनुरोध किया कि वे फौज के एक वक्त के भोजन के लिये जापानी फौज भण्डारसे चावल दिला लें। जापानी सेनापति ने नम्रता से उत्तर दिया है कि इधर भी चावल की कमी है। किन्तु आज रात हम जहा चल रहे हैं वहा पर्याप्त चावल हैं। आजाद फौज का सेनापति इस उत्तर से कुछ खिन्न हुआ

पर उसने प्रतिज्ञा की कि रात होने के पहले ही वह अपने सिपाहियों के लिये आहार अवश्य लायेगा। इसके बाद उसने अपने सैनिकों को एकत्र कर कहा कि अपने पास खाद्य की कमी है। जापानियों से थोड़े भो चावल नहीं मिल सकते। यदि आप लोगों की सम्मति हो तो इसी समय हवाई अड्डे पर आक्रमण कर दें और इन जापानियों को दिखा दें कि हिन्दुस्तानी सिपाही भूखे रहकर भी युद्ध कर सकते हैं। "जय हिन्द" के घोष के साथ सिपाही हवाई अड्डे पर टूट पड़े। यह आक्रमण इतना प्रचण्ड और आशातीत था कि ब्रिटिश सिपाहियों को अपनी शक्ति के संग्रह करने का भी मौका न मिला और हवाई अड्डा आजाद सैनिकों के हाथ मे आ गया।

झासी को रानी रेजीमेण्ट घायलों की मरहम पट्टी और सेवा सुश्रूषा का प्रबन्ध करती थी। परन्तु इतनेसे ही इस दल की नारियों का हृदय संतुष्ट नहीं हुआ। उन्होंने सुभाष बाबू से युद्ध क्षेत्रमें जा कर लड़ने की आज्ञा मागी। इस आवेदन पत्र पर उन लोगोंने अपने-अपने रक्तसे हस्ताक्षर किये थे। जिन्होंने रक्त से हस्ताक्षर किये थे उनमे २ महाराष्ट्र ब्राह्मण, २ बंगाली ब्राह्मण तथा २ गुजराती वैश्य परिवार की बालिकायें थीं। इन्हें बाद को युद्ध क्षेत्रमे जाकर लड़नेको आज्ञा मिली थी और इन्होंने वास्तव में युद्ध क्षेत्रमें अपना जौहर दिखाया भी था।

इस दल की नारियों ने केवल बन्दूकों से ही युद्ध नहीं किया अपितु नङ्गी संगीनों से भी खुलकर लड़ाई की थी।

झांसीकी रानी रेजीमेण्ट तथा बालक सेनाकी चर्चा करते हुए नागपुरके श्री गोविन्दराव किर्डेने—आप आजाद सेनाके सदर मुकाममें काम कर चुके हैं, एक प्रेस वक्तव्यमें हालमें ही कहा है कि बाल सेनाके आत्मघातीदल वर्माके युद्धमे मित्रोंके टैंकों के नीचे अपनी पीठ पर माइन (सुरंग) बांध कर लेट जाते थे और टैंकोंको उड़ा देते थे। झांसीकी रानी रेजीमेन्टकी सदस्याओं ने मौलमीनके निकट मित्र-सेनासे १० घण्टे तक संग्राम किया था और आघात सहन किये थे। मित्र सेनाके पास जहा भारी हथियार और विस्फोटक थे, वहा महिलाओंने केवल राइफलों और बंदूकोंसे युद्ध किया था और मित्र सैनिकोंका अग्रगमन रोका था। यद्यपि अन्तमें उन्हें हटना पड़ा, किन्तु इस युद्धसे उभयपक्ष में उनका यश छा गया और यह सिद्ध हो गया कि रेजीमेन्ट केवल दिखाऊ सेना नहीं थी।

आराकान युद्ध मे आजाद हिन्द फौज ने जो वीरता प्रदर्शित की थी उसके कारण कई योद्धा "सरदारे जंग" और "वीरे हिन्द" तथा "तमगाए शत्रुनाश" के पदक से विभूषित किये गये। कई नारियों को "सेवके हिन्द" के पदक दिये गये। परन्तु इतना सब कुछ होने पर भी आजाद सेना को विफलता

क्यों मिली, इस पर स्वयं नेताजी ने प्रकाश डाला है जो 'जय हिन्द' पुस्तक से यहाँ दिया जाता है :—

"हमने बहुत देर में लड़ाई छेड़ी। वर्षा ऋतु हमारे प्रतिकूल थी। सड़कें पानी से भरी हुई थीं; और प्रवाह के विरुद्ध नदियाँ पार करनी पड़ती थीं। इसके विपरीत शत्रु के पास प्रथम श्रेणी की सड़कें थीं। हमारे सामने एक ही मौका था कि वर्षा के पहले इम्फाल ले लिया जाय परन्तु हवाई सहायता की कमी से ऐसा न हो सका। यदि फरवरी के स्थान पर यह संग्राम जनवरी मे छेड़ा गया होता तो हमें सफलता मिलती। वर्षा के पहले या तो हमारी सेना ने शत्रु को रोका था आगे कदम बढ़ाया। आराकान के मोर्चे और हाका क्षेत्र में हमने शत्रु को रोका और कालादान, टिड्डम, पलेल और कोहिमा में हम आगे बढ़े और यह सब तब हुआ जब हमारे शत्रु संख्या में अधिक थे और उनका युद्ध का सामान तथा राशन भी उत्तम था। वर्षा आते ही हमे इम्फाल पर अपना आम हमला रोकना पड़ा। यान्त्रिक सेना की सहायता से इसी समय शत्रु ने कोहिमा और इम्फाल ले लिया। हमारे सामने अब दो ही उपाय थे। हम या तो विष्णुपुर और पलेल मोर्चे में डटे रहें और शत्रु को आगे बढ़ने न दें अथवा पीछे के सुविधापूर्ण स्थानों में हट जाये। हमारे पास आवागमनके साधनोंकी कमी थीं और कठिन स्थानों में सप्लाई करनेका ढंग दोष पूर्ण था। हमारे

पास प्रथम श्रेणी के प्रकार कार्य की कमी थी। लाउड स्पीकर भी हमें नहीं मिल सके।" अगस्त के तीसरे सप्ताह में सिपह-सालार नेताजीने वर्षा काल भरके लिये आक्रमणमूलक कार्य बन्द करने की आज्ञा दी। इस युद्ध में निम्नलिखित ब्रिगेड लड़े थे:—

सुभाष-गांधी ब्रिगेड—एक डिवीजन मे चार ब्रिगेड रहते थे। इम्फाल व आराकान मोर्चे मे लडनेवाले प्रथम डिवीजनमें निम्न चार ब्रिगेड थे:—*सुभाष ब्रिगेड*—इसके कमाण्डर कर्नल शाहनवाज थे। इनमे कुल ३३०० सैनिक थे। सैनिकों मे अधि-कांश संख्या पठानों, सिखों व सिविल लोगों की थी। *आजाद ब्रिगेड*—इसके कमाण्डर कर्नल गुलमारा सिंह थे। इसमें २८०० सैनिक थे। *गांधी ब्रिगेड*—इसके कमाण्डर कर्नल इनायत क्यानी थे। इसके सैनिकों की संख्या २८०० थी। नेहरू *ब्रिगेड*—इसके कमाण्डर कर्नल गुरुबख्शसिंह ढिल्लन थे। इसमे ३००० सैनिक थे। एक विश्वस्त गैर सरकारी सूत्रसे विदित हुआ है कि आजाद फौजके लगभग ३५०० व्यक्ति हताहत हुए।

नेताजी का परिचय

आजाद सैनिक श्री सुभाष बाबू को नेताजी कहते हैं। इस सेनाके संगठनसे लेकर युद्ध करने तकका संक्षिप्त वर्णन पहलेके पृष्ठोंमें दिया जा चुका है। उसपर और कुछ कहने के पूर्व नेताजी तथा उनके सहायक नेताओंका भी परिचय जान लेना अच्छा रहेगा। निम्नलिखित पंक्तियां सुभाष बाबू के उस भाषण के आधार पर हैं जिसे उन्होंने अपना परिचय देते हुए आजाद हिन्द रेडियो से दिया था। यह बम्बईके फ्री प्रेस जर्नलमें प्रकाशित भी हो चुका है। भाषण इस भांति है:—

"सबसे पहले मैं आपसे अपने बारे में कुछ कहूंगा। मैं चाहता हूं कि आप सब लोग यह जान लें कि मैं क्या हूं और मेरा व्यक्तिगत जीवन क्या है। विश्व-विद्यालय की शिक्षा के बाद १९२१ से मैंने राजनैतिक दुनियां में प्रवेश किया। उस



आराकान मोर्चे में नेताजी



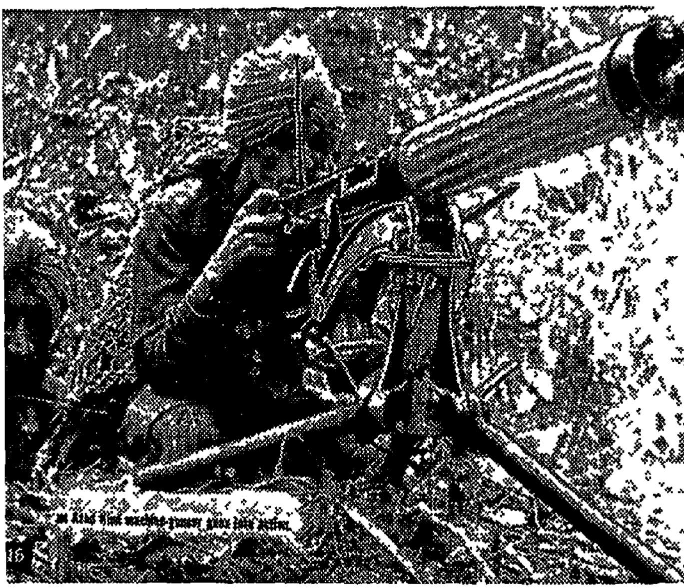
आजाद सेनाका
चिह्न



आजाद सनाकी
मूद्रा (सील)



आजाद सेनाका
बैज



आजाद सैनिकका लक्ष्यवेध

समय सबसे मुख्य सवाल यह था—"गत महायुद्ध मे भारतीयों ने क्या किया, उसका परिणाम क्या हुआ, भविष्य के लिये हमें कौन सा अनुभव मिला और हमने कौन सा पाठ सीखा ?" भारत और इंगलैण्डमे हमें यह अनुभव हुआ कि हमारे नेताओं की नीति गलत थी। किन्तु कार्य करने के लिये हम अपने नेताओं पर ही अवलम्बित थे। हम तरुण और विद्यार्थी वर्ग सम्पूर्ण रूपसे निराश हो गये। एक यही खयाल हमारे मनमे था—"जो गलती हमारे नेताओंने पिछले महायुद्ध मे की वह अब दुहरायी न जाय।" हमने अनुभव किया कि यदि भविष्य मे हम लोगों को अवसर दिया गया तो वह गलती हम नहीं करेंगे।

लड़ाईके बाद का यूरोप—एक बड़ा सवाल और भी था। यूरोपमे लडाईके बाद सन १६१८-१६ के वर्षोंमें बहुत परिवर्तन हुए। नयी सल्तनतें बन रही थीं। चेक जातिके लोग आस्ट्रो-हंगेरियन साम्राज्यसे अलग हो गये। एक दूसरी जाति—पोल जाति—ने अपनी सरकार अलग बना ली। जब मैं यूरोप गया, वहा मुझे दो-तीन भारतीय नेताओंसे मिलनेका अवसर आया। उन लोगोंने मुझे सलाह दी कि यदि मैं अपनी जन्मभूमिके लिये कुछ करना चाहता हूं तो मुझे युद्ध का इतिहास पढ़ना चाहिये। ब्रिटेन के विरुद्ध अपनी लडाईमे तत्कालीन इतिहासके अनुभवोंको उपयोगमे लाना चाहिये। हम लोगोंने सीखना और

समझना शुरू किया। हमने यह जाना कि कुछ चेक नेता किस प्रकार प्रचार कार्य के लिये तथा आस्ट्रिया हंगेरीके दुश्मनों से सहायता प्राप्त करनेके लिये बाहर गये। उन्होंने फ्रांस और ब्रिटेन के साथ सहयोग किया और इन दोनों सरकारोंने चेक नेताओंको मदद दी, और युद्धके बाद स्वतन्त्र सरकारकी स्थापना का उनका हक भी स्वीकार कर लिया। ब्रिटेन और फ्रासने उनके प्रयत्नों में हर तरहकी सहायता देनेका आश्वासन दिया। उन्होंने उचित लगन से अपने कार्य प्रारम्भ कर दिये। अपने देशके बाहरके समस्त चेकों को उन्होंने रंगरूट बनाया। आस्ट्रो-हंगेरियन सेनाके चेक जातिके सैनिक, जो शत्रुओंके हाथों बन्दी हुए, उन्होंने भी चेक नेशनल आर्मी (चेक राष्ट्रीय सेना) को अपनी सेवाएं स्वेच्छासे प्रदान कीं। इन सेनामें २० हजार सिपाही थे। ब्रिटेन और फ्रांससे मिलकर यह सेना आस्ट्रिया हंगरी और जर्मनीसे लडी। पोल जातिके लोगोंने भी ३० हजार की सेना संगठित की और उन्होंने युद्धमे भाग लिया। यह उनका सौभाग्य था कि जर्मनी और उसके साथी हार गये, और युद्धके बाद वे (पोल और जेक जातिके लोग) अपनी सरकार कायम कर सके।

एक ही राहके पथिक—कोई कारण नहीं कि हम उसी रास्ते पर क्यों न चलें और अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियोंका इतिहास पढ़कर, सम्पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त करनेके लिये ब्रिटेनके शत्रुओंके

कंधेसे कंधा मिलाकर युद्ध क्यों न करें। आयरलैंडके लोगोंने भी युद्धसे लाभ उठाया था। सीन-फीन पार्टीकी ३००० सेना थी। देश भरमें उनकी सेनाकी संख्या १० हजार थी। उनकी योजना मे कुछ त्रुटि रह गयी जिससे डब्लिनमे जो विद्रोह उन्होंने उठाया, वह गावोंमें फैल न सका। किसी प्रकार ८ दिन तक उन्होंने डब्लिन नगर पर अधिकार रखा। यह विद्रोह ईस्टरके दिनोंमें शुरू हुआ। अतएव उसका नाम ईस्टर विद्रोह पडा। सन् १९१६ मे वह विद्रोह सफल नहीं हुआ। युद्ध के बाद तत्काल सन् १९१९ में यह फिर भड़का। विद्रोहियों के पास केवल ५ हजार सैनिक थे। इस बार परिणाम भिन्न हुआ। युद्ध समाप्त हो गया था। इन्हें दबाने के लिये इङ्गलैंड से सेना लायी जा सकती थी। तथापि केवल पाँच हजार सैनिकों की यह सेना अपनी लडाई चलाती रही। अन्त मे ब्रिटिश जातिको घुटने टेकने पड़े!

असहयोग—गत महायुद्ध के इतिहास के अध्ययन से प्राप्त अनुभवों के आधार पर सन् १९२१ में हमने भारत मे कार्य आरम्भ किया था। उस समय महात्मा गाधी ने असहयोग आन्दोलन छेड़ दिया था। खिलाफत कमेटी भी कांग्रेस के साथ मिलकर काम कर रही थी। असहयोग आन्दोलन मे हम लोगों ने भी भाग लिया। अंग्रेजों के भयानक दमन के मुकाबले में, राष्ट्र की इज्जत बचाने और अपनी लड़ाई चलाने का

कोई दूसरा जरिया न देखकर हम लोग सन् १९२१ में महात्मा गांधी के अधीन काग्रेस मे शामिल हो गये। हिन्दू और मुसलमान मिल गये थे। किन्तु हम लोग निश्चित रूप से जानते थे कि भद्र अवज्ञा आन्दोलन से भारत को पूर्ण स्व-तन्त्रता नहीं मिल सकती। इस आन्दोलन से जनता मे राज-नैतिक जागृति पैदा हुई। इस आन्दोलन ने जनता को सशस्त्र संघर्षके लिये तैयार कर दिया। यह मेरा व्यक्तिगत मत नहीं, बल्कि उन अनेक तरुणों का मत है जो सन् १९२१ में महात्मा गाँधी से प्रभावित हुए। कुछ तरुण जरूर ऐसे थे जिनका बिश्वास अहिसा मे था, किन्तु उनमे से अधिकाँश हिंसा के जबर्दस्त समर्थक थे।

हिटलर से मुलाकात—सन् १९३३ मे मैं यूरोप गया। वहाँ १९३५ तक ठहरा। यूरोप जाने का मेरा उद्देश्य यह अध्य-यन करना था कि वहाँ अब कौन सी घटना घटने वाली है। यूरोप में रहते हुए मैं बर्लिन गया। वहाँ के कुछ सरकारी कर्मचारियों से परिचय प्राप्त किया और फ्युहर हिटलर से मुलाकात की। मैंने उससे यह साफ-साफ पूछा कि वे कब युद्ध ठानने जा रहे हैं। उन्होने उत्तर दिया कि वे ब्रिटेन से बिलकुल नहीं लड़ना चाहते। उन्हें आशा थी कि ब्रिटेन द्वारा उनकी मागे पूरी कर दी जायेंगी। वे ब्रिटेन से सुलह करने के पक्ष मे थे। किसी कदर उन्होंने भारत की स्वतन्त्रता

के साथ अपनी सहानुभूति प्रकट की। यह सब कहने का अर्थ यह है कि जब मैं यूरोप से लौटा तब आगे होने वाली घटनाओं का विश्वास लिये लौटा। जर्मनी मे जो दल सत्तारूढ़ हुआ, वह सदा लड़ाई के पक्ष मे था। मैं स्पष्ट समझ गया कि ब्रिटेन जर्मनों की मांगे पूरी नहीं करेगा और ज्यों ही ब्रिटेन देख लेगा कि जर्मनों की शक्ति थोड़ी और बढ़ गई है त्यों ही वह नाजियोंसे युद्ध छेड़ देगा। सन् १९३८ में जब मैं यूरोप गया तब मैंने कुछ परिवर्त्तन देखे। जर्मनी समझने लग गया था कि ब्रिटेन उसकी सम्पूर्ण मांगों की पूर्त्ति कभी नहीं करेगा। सन् १९३८ के सितम्बर में, जर्मनों ने सुडेटन जर्मनों का मामला पेश किया। ब्रिटिश प्रधान मन्त्री श्री० चेम्बर लेन हर हिटलर से सुलह करने म्युनिख दौड़े। एक समय था, जब अन्तर्राष्ट्रीय महत्व की समस्त चर्चाएं लन्डन मे हुआ करती थीं। जब मैंने ब्रिटिश प्रधान मन्त्री को अपना देश छोड कर जर्मनी भागते देखा तब यह जाना कि ब्रिटेन कमजोर होता जा रहा है और जर्मनी मजबूत।

युद्धमें सब कुछ उचित ह—तब मैंने यह प्रचार करना शूरू कर दिया कि यूरोप मे युद्ध अवश्यम्भावी है। भारतीयों का कर्त्तव्य है कि वे सावधान रहें तथा ब्रिटेन को अपनी मागे मंजूर करने को विवश करें। और यदि ब्रिटेन अस्वीकार

करे तो भारत लड़ने की तैयारी करे। मैं जनता में होनेवाली अपने प्रचार की प्रतिक्रियाओं को देख रहा था। मैं जानता था कि मुझे जनता का सम्पूर्ण समर्थन प्राप्त है। किन्तु हमारे नेता दूसरी तरह सोच रहे थे—खासकर महात्मा गांधी। उनकी नीति ठहरने और परिणाम देखने की थी। तथापि हम तरुण उनकी इस नीति से विचलित नहीं हुए। हमने दूने वेग से अपना प्रयत्न और प्रचार प्रारम्भ कर दिया। हमलोग भारत की जनता से कह रहे थे कि निकट भविष्य में जो स्वर्ग अवसर उसके हाथ आयगा, उससे वह पूरा लाभ उठावे।

त्रिपुरी कांग्रेस—मार्च १९३९ में भारत की राष्ट्रीय महासभा कांग्रेस का अधिवेशन त्रिपुरी में हुआ। मैंने ६ महीने में भारत को सम्पूर्ण स्वतन्त्रता देने और सरकारको इसकी अन्तिम सूचना देने का प्रस्ताव पेश किया और कहा कि यदि हमारी यह मांग उस अवधि के भीतर पूरी नहीं की जाय तो हमें जो भी शक्ति अपने पास है उसे लेकर ब्रिटेन से युद्ध करने के लिये जनताको तैयार करना चाहिये। ये बातें सूचना के रूप में कही गयी थीं और अगले छः महीनों में युद्ध छिड़ जाने की पूरी जानकारी और अन्तराष्ट्रीय परिस्थिति की गम्भीरता को अच्छी तरह ध्यान में रखते हुए यह प्रस्ताव रखा गया था।

ब्रिटेन को मजबूर किया जाय—जब सन् १९३९ के सितम्बर में यूरोप में युद्ध छिड़ गया तब जनता समझने लगी कि

मार्च में जो कुछ मैंने कहा था वह सही था। उस समय हमारा यह कर्त्तव्य था कि अपनी तमाम शक्तियोंको एकत्रित करके, ब्रिटेन को अपनी मांगोंको मंजूर करने को हम विवश करें और यदि इसमें सफलता न मिले तो हम अपनी मांगों की पूर्त्ति के लिये लडाई छेड़ दें किन्तु हमारे नेताओ के विचार और कार्य इससे भिन्न थे। उनकी यह धारणा थी कि युद्ध कालमें ब्रिटेन कमजोर पड़ जायगा, और भारत से सहायता पानेके लिये वह हमसे समझौता कर लेगा। मैंने, इस धारणा के असंभाव्य दिखानेकी कोशिश की, और कहा कि लड़ाई के समय चाहे ब्रिटेनको जो भी कमजोरी हो, वह भारतमे अपनी शक्ति घटने नहीं देगा। ज्यों-ज्यों वह कमजोर पड़ता जायगा, त्यों-त्यों भारत पर उसकी पकड़ सख्त होती जायगी। भारतके बिना वह युद्धको सफलतासे चला ले जानेमे समर्थ नहीं होगा। और ज्यों-ज्यों कमजोर होता जायगा, त्यों-त्यों वह देश के साधनों का शोषण करता जायगा।

मार्च १९४० मे जब काग्रेसका अधिवेशन जारी था, हमने कदम आगे बढ़ानेकी उम्मीद की। किन्तु गाधीजी अपने पथपर अड़े रहे। वे अब भी प्रतीक्षा करने और परिणाम देखनेकी इच्छा रखते थे। हम अपने मनको इस रूपमे तैयार करने लगे कि चाहे जो हो, हमें अपना आन्दोलन जारी कर देना चाहिये। देशभरमे युद्ध-विरोधी आन्दोलन प्रारम्भ हो गया। आन्दोलन

गहरा होता गया। बहुत लोग जेल गये। इसी बीच मुझे खबर मिली कि चूंकि सरकार कुछ नहीं कर रही है अतएव नवम्बर महीने में महात्मा गांधी स्वयं सत्याग्रह आन्दोलन शुरू करेंगे। मैंने सुख की साँस ली। मैं सोचने लगा—अब तमाम दुनिया जान जायगी कि भारत अपनी स्वतन्त्रता के लिये लड़ रहा है। सब राष्ट्र यह सोचेंगे कि भारत स्वाधीन होने योग्य है। हमें निश्चित रूप से संसार की सहानुभूति प्राप्त होगी। किन्तु मैंने सोचा कि केवल सत्याग्रहके शस्त्रसे हम स्वाधीनता नहीं ले सकेंगे। सत्याग्रहसे सरकार पर दवाव जरूर पड़ेगा और उससे युद्धोद्योगमें बाधा पड़ेगी, किन्तु इतनेसे ही सरकार हमारी मांगों पर ध्यान नहीं देगी। यह मेरा खयाल था। हमलोग विचार कर रहे थे कि करना क्या चाहिये? कौन सा नया ढंग ग्रहण करना चाहिये? बमों और रिवाल्वरों से, नौजवान, जो थोड़ा-बहुत कर सकते थे, वह कर रहे थे। हमलोग इन क्रान्तिकारियों के सम्पर्क में आये। मैं इनकी शक्ति को जानता था। ये लोग ऊंची भावनाओंवाले सच्चे क्रान्तिकारी थे। किन्तु इनकी शक्ति और इनके त्याग हमारी मातृभूमि को पूर्ण स्वाधीन करनेके लिये पर्याप्त नहीं थे।

इतिहास की शिक्षा—तब हमने पुनः इतिहास के पन्ने टटोलने शुरू किये। हमे उनमें अनेक उदाहरण और यथार्थ

पाठ मिले। एक उदाहरण अमरीका का हमारे सामने था। मैंने यह जाना—और इसी निष्कर्ष पर पहुचा भी—कि बिना किसी बाहरी सहायता के, भारत की क्रान्ति सफल नहीं होगी। संयुक्त राज्य (अमरीका) ने फ्रांस से बहुत बड़ी सहायता प्राप्त की थी। दुनिया के इतिहास मे, किसी देश के लिये, अपनी स्वतन्त्रता हासिल करनेके लिये, विश्व के अन्य राष्ट्रों की सहायता लेना, कोई नयी बात नहीं थी। भारत में जो सम्वाद मिलते थे वे तोड मरोड और अधिकतर प्रचारात्मक ढंग के हुआ करते थे। यह करना ब्रिटेन के लिये स्वाभाविक था। भारत मे रहकर बाहर की दुनिया की वस्तु स्थिति समझ लेना सम्भव नहीं था। युद्ध का परिणाम क्या होगा, उसकी समाप्ति किस रूपमे होगी; और अन्त में जीत किसकी होगी? विदेशों में निवास करनेवाले भारतीयों के क्या विचार हैं, भारत की स्वतन्त्रता की लड़ाई के बारे में वे किस विचार-प्रणाली से सोचते हैं, भारतीय स्वतन्त्रता के युद्ध में किस प्रकार उनकी सहायता प्राप्त की जाय, और क्या यह सम्भव है कि वे ब्रिटेन के शत्रुओंसे कुछ ठोस सहायता प्राप्त कर सकें? इन्हीं प्रश्नों ने हमे यह सोचने को बाध्य किया कि हममे से किसी एक को भारत से जाना चाहिये। मैंने कुछ लोगों को विदेशों में भेजने की बात सोची। यह काम बहुत कठिन था। हम लोगों की गति-विधि की भाति इस कार्य पर भो प्रतिबन्ध लगे

हुए थे। मैंने यह सोचा कि किसी ऐसे आदमी को भारत छोड़ना चाहिये जिसे अंग्रेज लोग सचमुच कुछ समझते हों, और भारतीय जनता भी जिसकी बातें ध्यान देकर सुन सकती हो। अन्तमें मैंने स्वयं भारतसे बाहर जानेका निश्चय किया।

अनशन—मैं उस समय जेल में था। जेल से बाहर निकलना कठिन था। जेल से खिसक पडने से ब्रिटिश खुफिया पुलिस के देखते हुए भारत छोड़ना मेरे लिये कठिन हो जाता। अन्त मे मैंने भूख हड़ताल करने की ठानी। यह निर्णय मैंने अपने दिल को इस बात के लिये मजबूत बनाकर किया कि या तो मर जाऊंगा या जेल से बाहर निकल जाऊंगा। जब मेरा यह निर्णय सरकार को बताया गया, तब अफसरी हलकों में एक हलचल मच गयी, क्योकि वे जेल में मेरी मौत देखना नहीं चाहते थे। जेल सुपरिन्टेण्डेन्ट आये और उन्होंने मुझसे भूख हड़ताल न करने की प्रार्थना की। उन्होंने यह तर्क दिया कि यदि सब कैदी भूख हड़ताल करने लग जायं तो बादशाह की सरकार की गति रुद्ध हो जायगी। उन्होंने कहा कि यदि मैं जेलमें मर गया तो इस घटना के लिये मैं ही जिम्मेवार रहूंगा। ६ दिन तक मेरी भूख हड़ताल जारी रही। उन्होंने मुझे जबर्दस्ती खिलाना चाहा किन्तु मैं यतीन्द्रनाथ दासकी भांति मर जानेपर दृढ़ सङ्कल्प था। सात दिन बाद गवर्नमेण्ट हाउस मे एक गुप्त

बैठक हुई। मेरे स्वास्थ्य के विषय में डाक्टरी रिपोर्ट गम्भीर थी अतः वे कुछ करना चाहते थे। एक महीने बाद पुनः गिरफ्तार कर लेनेका विचार करके उन्होंने मुझे जेल से रिहा कर दिया। मुझे ठीक समय यह सूचना मिल गयी। इसी बीच मे मेरे भाग निकलनेकी कुछ व्यवस्था हो गयी और मैं भारतसे विदा हो गया।

अपनी जन्मभूमि को छोड़ने के बाद मुझे अनेक अनुभव हुए। मैं दोनों पक्षों के रेडियो-सम्वाद सुना करता था। जर्मन अधिकारियों द्वारा मुझे यह अधिकार मिल गया कि मैं दुश्मनों का रेडियो सम्वाद सुनूं। यूरोप के समस्त मोरचों और किले-बन्दियों को देखनेका मौका भी मुझे मिल गया। अब सवाल यह था कि ऐसी स्थितिमें भारतके लिये क्या किया जाय? तीन उपाय थे:— (१) युद्ध से अलग और तटस्थ स्थिति में रहना (२) ब्रिटेनके पास जाकर स्वतन्त्रताकी भीख मांगना, और (३) ब्रिटेन के शत्रुओं के साथ मिलकर युद्ध में भाग लेना और स्वतन्त्रता प्राप्त करने की योग्यता प्राप्त करना। ब्रिटेन के शत्रुओं से मिलकर युद्ध करना और ब्रिटिश साम्राज्य के विनाश में भाग लेना ही मुझे ठीक रास्ता मालूम हुआ। भारत की भीतरी अवस्था बहुत चिन्ताजनक थी। भारत में शक्तियां

ब्रिटेन के खिलाफ कुछ कर रही थीं उनका समर्थन करना और उन्हें प्रोत्साहन देना हमारा कर्तव्य था। भारतकी समस्त जनता ब्रिटिश सरकार के खिलाफ थी।" बर्लिन से ही पूर्व एशिया के भारतीयों के आह्वान पर सुभाष बाबू १६४३ की जुलाई में पहले टोकियो फिर वहांसे सिंगापुर आये थे।

पहले के पृष्ठोंमें पाठक देख चुके हैं कि पूर्व एशिया में सुभाष बाबू के नेतृत्वमें भारतीय स्वाधीनताके लिये सैनिक और नागरिक उभय प्रकार का कितना बड़ा संगठन किया गया था। आगे अब यह बतलानेका प्रयत्न किया जायगा कि सुभाष बाबू ब्रिटिश पहरे से निकलकर विदेशोंमे किस प्रकार पहुंचे।

★★
★

भारत के बाहर कैसे निकले ?

ई परिच्छेद में श्री सुभाष बाबू ने भारत से निकल कर बर्लिन पहुंचने की चर्चा की है; किन्तु वे यहाँ से निकले कैसे और जर्मनी मे उनका किस प्रकार स्वागत हुआ इत्यादि बातों पर उन्होंने इस भाषणमें कुछ भी नहीं कहा। अतः इस सम्बन्ध में समाचार पत्रों मे जो कुछ प्रकाशित हुआ है; रोचक होने के कारण उसका सार-भाग यहा दिया जाता है :—

श्री सुभाषचन्द्र बोस २६ जनवरी सन् १९४१ में भारत से एकाएक ब्रिटिश साम्राज्यशाही को आँखों मे धूल झोंक कर कैसे विदेश चले गये यह जानने के लिये भारत सदैव उत्सुक रहा है। बिलकुल सही बात का पता तो लगाना कठिन है; परन्तु सुनी हुई बातों के आधार पर जो संकलन किया गया है उसे हम अपने पाठकों को जानकारी के लिये देते हैं। बिलकुल सही बातों का

पता तो यदि कभी सुभाष बाबू का आत्मचरित निकलेगा तभी चलेगा। सब से पहले देशवासियों को ता० २६ जनवरी सन् ४१ को उनके गायब होने का समाचार मिला। इसके पहले इतना ही प्रकाशित हुआ था कि वे (सुभाष बाबू) बीमार हैं और एकान्त में रहते हैं। उनसे कोई मिल नहीं पाता और उनका भोजन भी दरवाजों के सूराख से ही अन्दर रख दिया जाता है। इसके पहले उन्होंने अलीपुर जेलमे ही अपनी दाढी बढा ली थी। वे शक्ति के साधक थे, और जब कभी उनपर आपत्ति आती थी या कोई नया कार्य प्रारम्भ करते थे तो वे जगद्जननी माता दुर्गा की अर्चना अवश्य करते थे। जेल से जब सरकार ने छोड़ दिया तो उन्होंने फिर माताकी अर्चना प्रारम्भ कर दी।

जेलसे छोड देने पर भी सरकार ने उनके घर पर कडा पहरा बिठला दिया था और वे एक प्रकार से अपने मकान मे ही नजर वन्द कर दिये गये थे। कहा जाता है कि एक दिन एक पठान का रूप धारण कर उन्होंने कभी लारी पर, कभी पैदल, कभी बैलगाडी पर, कभी रेल पर पेशावर से भारत की सीमा पार की और काबुल पहुचे। उन्होंने अपने गले में पट्टी बांध ली थी और अपने को बीमार बतला कर यह कह दिया था कि वे बोल नहीं सकते हैं उनके काफिले में दो-तीन सौ पठान हथियारों से सुसज्जित सम्मिलित थे और वे इस बातके लिये पूरी तरह

से तैयार थे कि यदि आवश्यक हो तो वे प्राणोंकी बाजी लगाकर भी सुभाष बाबूको सरकारी सीमाके पार पहुंचा देंगे। इस तरह वे काबुल पहुंचे।

भारत सरकार का इस आशयका तार जिस समय काबुल पहुंचा कि ऐक भारतीय क्रान्तिकारी सीमा पार करनेकी चेष्टा कर रहा है, उसे गिरफ्तार कर लिया जावे, उस समय सुभाष बाबू वहीं पर एक होटल में थे। एक भारतीय सी० आई० डी० अफसरने उन्हें पकड़ा भी पर उन्होंने अपने पास जो कुछ भी था उसे देकर अपना पिंड छुडाया, और वहीं पर एक भारतीय के गृहमें शरण ली। वहीं से वे जर्मन दूतावाससे अपने को बर्लिन पहुंचाने की बातचीत चलाते रहे।

जर्मनी वाले उन्हें जल्दी से जल्दी बुलाना चाहते थे, किन्तु दिक्कत यह थी कि रूस सुभाष बाबू को अपनी सीमा पार करवा देने के लिये तैयार न था। अन्त मे काबुल मे जर्मन वालों ने एक चाल चली। एक जर्मन यात्री के नाम पास पोर्ट लेकर उसे रोककर उसकी जगह श्री सुभाषचन्द्र बोस को, एक जर्मन वायुयान द्वारा बर्लिन भेजा गया। यह भी कहा गया है कि रास्ते में उन्होंने स्टालिन से भेंट की और उनसे भारतीय स्वतन्त्रता के आन्दोलन मे सहायता करने को कहा जिसे स्टालिन ने अस्वीकार कर दिया।

कहा जाता है कि वरलिन वे मार्चके प्रथम सप्ताह में पहुंचे—फिर तो वर्लिन और इटली से उनके भाषण रेडियो पर होते रहे। वाद में सरकार को सभी वातों का पता लग गया और कहा जाता है कि जिसकी गाड़ी पर सुभाष वावू ने सीमा पार की थी वह गिरफ्तार कर लिया गया और जिस हिन्दुस्तानी मित्र के यहा कावुल मे होटल से भागकर उन्होंने शरण ली थी वह भारतीय भी गिरफ्तार कर लिया गया, और अव तक जेलमें है। नीचे लिखी पंक्तियों से पाठकों को ज्ञात हो जायगा कि जर्मनी मे सुभाष वावू का कैसा स्वागत हुआ था:—

जर्मनी में सुभाष वावू

वर्लिन के एक सुसज्जित होटल में एक अमरीकी पत्रकार ने सुभाष वावू से भेंट की थी। उसने पहले सुभाष को फोन किया, वे उस समय युद्ध समिति से वातें करने में व्यस्त थे। अतः तीन दिन के वाद पत्रकार को उनसे मिलने का अवसर मिला। और उस भेंट का विवरण उसने इस प्रकार अपने पत्र को भेजा था :—

"मैं सुभाष चन्द्र वोस से मिलने गया। मिलने के पहले मुझे जर्मन अंगरक्षकों के सामने वड़ी वड़ी मुसीवतों का सामना करना पडा। बहुत कड़ी जाँच के वाद मुझे जाने दिया गया। वहाँ जाते ही मैं आश्चर्य में पड़ गया। ऐसा मालूम होता था

कि कोई ग्रीक देवता हिन्दुस्तानी पोशाक पहन कर भूल से बीसवीं सदी में आ गया है। बोस हँसे और मुस्कराते हुए उन्होंने मेरा स्वागत किया। ऐसी मीठी हंसी और ऐसा निश्छल स्वागत मैंने अपने जीवन में कभी नहीं पाया था।

"बहुत दिन हुए लास एंजेल्स के एक हिन्दुस्तानी अध्यापक के यहाँ मैंने बुद्ध की प्रस्तर मूर्त्ति देखी थी। मुझे न जाने क्यों मालूम हुआ कि मैं बुद्ध के सामने बैठा हूं। उन्होंने हाथ मिलाया। मुझे अनुभव हुआ जैसे मेरी अंगुलियों की नसों मे हजारों साल पुरानी रहस्यमयी हिन्दुस्तानी संस्कृति का जादू बिजली की तरह भरता जा रहा है।

मुझे ईर्ष्या होती है कि मैं एक हिन्दुस्तानी क्यों न हुआ ? बोस-सा नेता पाकर मुझे सब मिल गया होता।"

बर्लिन और हैम्बर्ग के बीच मे एक छोटे से सैनिक पड़ाव में हिटलर ने सुभाष को आमन्त्रित किया। जब सुभाष हिटलर के पास गये तो हिटलरने खड़े होकर कहा—"मैं योर एक्सीलेन्सी (तत्र भवान) का स्वागत करता हूं।" और उसी दिन शाम को सरकार के परराष्ट्र विभाग ने सुभाषको "फ्यूहरर आफ इण्डिया" अर्थात् भारत नेता की पदवी दी। बर्लिन के पत्रोंमे सुभाष के पूरे चित्र तथा उनकी और हिटलर की भेंट का पूरा विवरण छपा।

कई पत्रोंने उनका जीवन-वृत्तांत छापा और दो पत्रोंने भारत की स्वतन्त्रता के लिये पृथक् प्रयत्न करने पर सुभाष को बधाई दी।

तीसरे दिन वे हैम्बर्ग गये। यद्यपि उनके आगमन का समाचार बहुत ही गुप्त रखा गया था, किन्तु फिर भी न जाने कैसे लोगों को मालूम हो ही गया। उनकी स्पेशल ट्रेन पहुंचने के पहले ही प्लेटफार्म पूरी तरह से भर गया था। ट्रेन रुकते ही हैम्बर्ग के मेयर ने आगे बढ़ कर दरवाज़ा खोला और उनको एक ताज़ा गुलदस्ता भेंट किया

बाहर कार खड़ी थी। स्टार्म ट्रूपर्स का एक पूरा जत्था उनकी रक्षा के लिये आया था। जब वे मोटर पर बैठे तो नाज़ी पार्टी के मन्त्रीने आकर कहा—'क्या आप हमारी पार्टी की सभा में भाषण देंगे ?" सुभाषने क्षणभर सोचा और उसके बाद वह बोले—"नहीं, मैं किसी भी दल विशेष की ओरसे भाषण नहीं कर सकता। फिर भी मुझे जर्मन जनता के सामने भारत की समस्या रखनी है। किन्तु आपकी पार्टी की सभा मे मैं आने में असमर्थ हूं।"

दूसरे दिन हैम्बर्ग कारपोरेशन की ओर से सुभाष का स्वागत किया गया। सारा हैम्बर्ग उमड़ आया था। कारखानें, दूकानें, सड़कें और बन्दरगाहों में बिलकुल सन्नाटा हो गया था। सड़कों पर स्वस्तिक और चर्खावाले तिरंगे झण्डे एक साथ लगे हुए

थे। मंचपर एक बड़ा सा ईगल (जर्मनीके झण्डेका चिह्न) था और उसके ऊपर तिरंगे झण्डे लगे थे। लाउड स्पीकरों पर भी स्वस्तिक और तिरंगे झंडे बने थे। कुछ स्टार्म ट्रूपर्सके स्वयंसेवकोंने टोपियों पर तिरंगे बैज लगा रखे थे। सभा प्रारम्भ होनेके पहले जर्मनीका राष्ट्रीय गान और 'वन्देमातरम्' गाया गया। इसके बाद मेयर ने कहा कि वर्षों पहले सुभाष बाबूको देखा था। तब वे केवल सुभाष थे। आज ये "फ्युहरर आफ इण्डिया" हैं।

सुभाषने उठकर इसका प्रतिवाद किया। मीठे स्वरोंमे उन्होंने कहा—"वर्षों पहले नहीं वरन जन्मसे, वियेना ही मे नहीं वरन हर जगह हर क्षण में केवल आजादी की लड़ाईका एक सिपाही रहा हूं—और वही अब भी हूं—न उससे कम न उससे ज्यादा।"

दूसरे दिन सुभाष वहाँ से एक युद्ध विशेषज्ञ के साथ मोर्चा देखने चले गये। यहा भी श्री सुभाष बाबू ने आजाद हिन्द सरकार और सेनाका निर्माण किया था। हर हिटलर स्वयं उक्त दोनों प्रमुख केन्द्रोंका निरीक्षण करने गये थे। भाषण भी दिया था।

ऊपर कहा जा चुका है कि सुभाष बाबूने पूर्वी एशियाके ढंगपर जर्मनीमें पहले ही आजाद हिंद सेनाका संगठन किया था। लिबिया तथा दूसरे स्थानों पर जो भारतीय सैनिक जर्मनों द्वारा गिरफ्तार

किये गये थे,—वे इसमें शामिल थे। जर्मनी के ड्रेसडेन नामक नगरमें इसका सदर मुकाम था। इसमे १२००० सैनिकोंके ८ बटालियन थे। श्री सुभाष बाबूके साथ हिटलरने इसका निरीक्षण कर नमस्कार ग्रहण किया था। सुभाष बाबू सादी नागरिक पोशाकमें थे। सिरपर काली टोपी सोहती थी। हिटलरने आजाद सैनिकों और जर्मन सिपाहियों की सम्मिलित रेलीमें लगभग १२ मिनट तक भाषण देते हुए कहा:—"जर्मन सिपाहियो और स्वाधीन भारतीयो! मैं स्वतन्त्र भारतीय सरकार के अस्थायी प्रधान हिज एक्सलेन्सी हर सुभाषचन्द्र बोस का स्वागत करता हूं। वे यहां उन स्वाधीन भारतीयों का नेतृत्व करने आये हैं, जो अपने देशको प्यार करते और उसे स्वतन्त्र बनाना चाहते हैं। उन्हें सलाह या आज्ञा देना मेरे लिये उचित नहीं होगा, क्योंकि अब वे एक स्वाधोन सरकारके सैनिक हैं। जर्मन सैनिकों और नागरिको! आपको एक बात याद रखना है। आपके फ्युहरर (अर्थात् मुझ हिटलर) पर ८ करोड जर्मनोंकी हित चिन्ता समर्पित है जब कि हर बोसने ४० करोड भारतीयोंको हित-रक्षाकी शपथ ली है। अत: आप अपने फ्युहररकी भाँति ही इस नयी सरकार और इसके प्रधानके प्रति पूरा सम्मान प्रकट करें और सहयोग दें।" फील्ड मार्शल रोमेलने भी एक बार आजाद हिन्द फौज का निरीक्षण किया था। रोमेलने कहा—मैं इन सिपाहिमों में

हिन्दू मुसलमान को अलग-अलग नहीं पहचान सकता। वास्तव में इनका भोजन, पोशाक, भाषा और आकृति समान थी।" पूर्व एशिया के भारतीयों के अनुरोध पर यहीं से एक सबमेरिन मे बैठकर सुभाष बाबू टोकियो और वहा से सिगापुर गये थे। कहते है कि इस यात्रा मे १ मास लगा था।

गत ११ जनवरी को कराची से ओरियन्ट प्रेस द्वारा यह संवाद प्रकाशित हुआ है कि जर्मनों के साथ सहयोग करनेवाली इस सेना का विचार पृथक् कोर्ट मार्शल द्वारा होगा। ये सैनिक शीघ्र ही विमानों द्वारा यूरोप से भारत लाये जायेंगे।

नेताजी का जादू

पूर्व एशिया के सभी श्रेणी के नरनारी अपने नेताजी का कैसा सम्मान करते थे, और उनका जनता पर कितना प्रभाव था—निम्नलिखित पंक्तियों से इस पर अच्छा प्रकाश पड़ता है। नेताजी का जन्म दिन है। सिङ्गापुर की हिन्दोस्तानी बस्तियों मे उल्लास फूटा पड़ रहा था। प्रभात की परेड से लौटकर आजाद हिन्द सेना के सैनिकों ने अपनी पत्नियो से बताया "आज मध्याह्न में नेताजी का तुलादान होगा।" तुलादान होगा! तिरंगे फूलों के तराजू में एक पलड़े पर सुभाष और दूसरी ओर चांदी, सोना, हीरों का ढेर। तरुणियां अपने इस दीवाने भाई की शोभाशाली मूर्त्ति की कल्पना से पुलकित हो गईं, वृद्धाएं अपनी इस बलिदानी सन्तान की सुषमा के विचार से ही गद्गद् हो गईं—

"और इस अतुल धन राशि का होगा क्या ?" एक युवती ने आश्चर्य से पूछा।

"होगा क्या ? इस सम्पत्ति का कण कण आजादी के मन्दिर की सीढ़ियों पर बिखेर दिया जायगा। इसका जर्रा-जर्रा माता के चरणों पर समर्पित कर दिया जायगा।" सैनिक ने उत्तर दिया। उसकी पत्नी की एक सखी, जापानी महिला, आश्चर्य से बोली "अच्छा। हिन्दोस्तानी ऐसा भी करते हैं। आश्चर्य का देश है भारत। हमारे सम्राट का तुलादान होता है तो उसकी सारी सम्पत्ति राज कोष में चली जाती है।" "नेताजी ने अपना व्यक्तित्व रक्खा ही कहाँ है ? उनका देश ही उनका व्यक्तित्व है, देवी !" सैनिक ने उत्तर दिया।

"हां भारत में ऐसा ही होता रहा है।" जापानी महिला बोली—"मैंने इतिहास में पढ़ा था, देखो वह कौन सा राजकुमार था जो अतुल सम्पत्ति, युवती पत्नी को ठुकरा कर मानवता के कल्याण के लिये चल पडा था—देखो . ..उसका नाम......हां बुद्ध-गौतम बुद्ध।" उसने आदर से सर झुकाते हुए कहा। भारत की परम्परा ही ऐसी रही है।"

तुलादानके लिये प्रभातसे ही युवतियां व्यस्त थीं। मन्त्र-मुग्ध अभिचार संचालित पुतलियों की भाँति वे रेशम के रूमालों में अपने शरीर के स्वर्णभूषणों को समेट रहीं थीं, देश के चरणों में अर्पित करने के लिये।

मध्याह्न होते ही अपने आभूषणों को लेकर तरुणियां, वृद्धायें बालिकायें उस ओर चल दीं जैसे किसी देवता के मन्दिर की ओर सैकड़ों उपासिकाएं पूजा भेंट ले जा रही हों। तुलादान प्रारम्भ हो गया। मलाया में एक बंगाली डाक्टर के परिवार की किशोरियों ने शंख बजाये और एक वृद्धा गुजराती महिला ने आकर तराजू पर अपने जीवन भर की संचित सम्पत्ति सोने की ५ ईंटें रख दीं। और उसके बाद एक-एक कर सोने के भार से पलड़ा भरने लगा। आभूषण, सोनेकी मूर्तिया, फूलदान, सिक्के, किसी वस्तुकी कमी न थी। जीवनके दस बारह वसन्त ही की पुलक का अनुभव करने वाली कुमारिया, प्रणय की लज्जा में लपटी हुई बधुएं, श्वेत केश वाली, स्वर्ग की छाया मे पलने वाली जर्जर वृद्धाएं सभी स्वतन्त्रता की वेदी पर अपनी भेंट चढ़ा रही थीं। पलड़ा भर गया था, मगर वजन अभी पूरा न हुआ था। तुला का दण्ड अभी समतल न हुआ था। शंख बज रहे थे और बाहर जनता "जय हिन्द" "इन्कलाब-ज़िंदाबाद" 'नेताजी चिरजीवी हों' के नारे लगा रही थी। "अभी और स्वर्ण की आवश्यकता है!" पास खड़े हुये एक सैनिक ने कहा!

आस-पास खड़ी हुई स्त्रियों ने अपने कानों के कुण्डल और हाथों की अंगूठियाँ उतार कर चढ़ानी प्रारम्भ कीं। पास खड़ी हुई एक महिला ने अपनी कलाई की सुनहरी रिस्टवाच पलड़े पर

चढ़ा दी। पलड़ा अब भी न झुका—इतने में एक कोने से कुछ सिसकियां सुनाई पड़ीं। कमाण्डर लक्ष्मी बाई और उनकी दो सहायिकायें एक तरुणी को थामे हुये इधर ला रही थीं। वह सिसक रही थी—उसका जूड़ा खुल गया था, आखें इन्दीवर पुष्प की भांति लाल थीं और सूज गयी थीं।

सुभापने प्रश्न दृष्टिसे लक्ष्मी की ओर देखा। "कल समाचार आया है कि इस बहनका पति मोर्चेपर शहीद हो गया!" सुभाष ने टोपी उतार ली—स्त्री आई। रोते हुए उसने सुभाषको नमस्कार किया और उसके बाद सिन्दूर से पुता हुआ अपना सौभाग्य चिन्ह शीशफूल पलड़े पर रख दिया। सभी के नेत्रों में अश्रु डबडबा आये। सुभाषने कहा—"देवता तुम्हारे पदरज के लिये लालायित होंगे, बहन!"

स्वर्ण अब भी पूरा नहीं पड़ा था—इतने में एक जर्जर वृद्धा सीने से एक चित्र चिपकाये हुए आई और खड़ी हो गयी। उसने चित्र उतार कर नीचे रख दिया। एक उभरता हुआ तरुण चेहरे पर फूलों की कोमलता, आंखों में सपनों का जाल, गर्दन में हिमालय का अभिमान।

"यह मेरे एकलौते बेटे का चित्र है नेताजी" वृद्धा ने रुंधे हुए गले से कहा—"युद्ध के पहिले ही सिंगापुर में अंग्रेजों ने इसे फांसी पर चढ़ा दिया था। काश कि विधाताने मेरी कोख

में दूसरा भी फूल दिया होता तो मैं मा के चरणों में चढ़ा देती।" वृद्धा ने चित्र पटक दिया। शीशा चूर चूर हो गया—फोटो निकाल कर हाथ में ले लिया, स्वर्ण-फ्रेम पलड़े पर चढ़ा दिया। तुला समतल हो गयी। सुभाष कांपकर खड़े हो गये।

"कौन कहता है भारत आजाद नहीं होगा? पुत्रहीना मां का वरदान व्यर्थ नहीं जा सकता।" सुभाषने झुककर वृद्धा के पैर छूते हुए कहा—तुलादान पूरा हो गया था। एक दूसरी घटना इस प्रकार है:—

'नेताजी' की मालाका मूल्य—'सर्वस्व'

आजाद हिन्द फौज वाले सुभाष बोस को 'नेताजी' पुकारते थे। उनके भाषण सुननेका उन्हें काफी शौक था। सभामें आने पर उनके गलेमें फूलों का हार डाला जाता था। लेकिन इस हार को सभामें ही नीलाम कर दिया जाता था। एक हार की नीलामीमें एक लाख, दो लाख, तीन लाख, पाँच और सात लख की बोलियां दे दी गयीं। एक पंजाबी बेचैन था। वह बोली दे रहा था। मगर बोलियां उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही थीं। उससे रहा न गया। वह बोल उठा—'मेरी सारा धन सम्पत्ति'। उस हारको उस युवकने झपटकर ले लिया। उसे उसने अपनी आंखों और सिरपर चढ़ाया और छातीसे लगा लिया। अगले दिन उसने अपना सर्वस्व आजाद हिन्द फौज को अर्पित कर दिया। और स्वयं भी सेनामें भर्त्ती हो गया।

धन कैसे आता था ?

धन और उपहार नेताजी के पास सिंगापुरमें निरन्तर पहुंच रहे थे; फिर भी वे इससे सन्तुष्ट नहीं थे। उन्होंने इसके लिये सम्पन्न भारतीय व्यापारियों के पास विशेष अपील की और कहा 'इन स्वयंसेवकोंको देखो, जो आजाद हिन्द फौजमें भरती हुए हैं और आवश्यक ट्रेनिंग प्राप्त कर रहे हैं। वे नहीं जानते कि उनमे कितने स्वाधीन भारतको देखने के लिये जीवित रहेंगे। वे तो एक ही विचार से प्रेरित हो रहे हैं कि देशके लिये उन्हें अपने रक्तका आखिरी बून्द बहाना है। वे तो स्वतन्त्र भारत मे पहुंचने या उसी प्रयत्नमे मार्गमे मर जानेके लिये प्रस्तुत हो रहे हैं। जब आजाद हिन्द सेना या तो विजय या मृत्युके लिये तैयार हो रही है। उस समय कुछ धनिक भाई मुझसे पूछते हैं कि हम उनकी कुल सम्पत्तिका १० या १५ कितना प्रतिशत चाहते हैं। मैं फीसदी पूछनेवालों से जानना चाहता हूं कि क्या मैं अपने सिपाहियोंसे यह कहूं कि युद्धमें अपना १० प्रतिशत रक्तदान करना, बाकी बचा लेना। गरीब स्वेच्छा से और उत्साह के साथ अपना सर्वस्व देनेके लिये आगे आ रहे हैं। साधारण श्रेणीके भारतवासी जैसे जमादार, धोबी, नाई, छोटे दूकानदार और ग्वाले अपने सर्वस्वके साथ आगे बढ़ रहे हैं। उनमें बहु-तेरे अपना सर्वस्व देनेके बाद सिपाहियों मे भरती भी हो रहे

हैं। बहुतसे गरीब अपना नगद पैसा देनेके बाद सेविंग बैंक की कितावें भी दे रहे हैं जिनमें इनकी जीवनभर की कमाई संचित है। क्या मलाया के धनी भारतीयोंमें ऐसे लोग नहीं हैं जो इसी उत्साहसे आगे आयें और कहें यह हमारी बैंककी किताब है। भारतीय स्वाधीनताके प्रयत्नमे इसका प्रयोग किया जाय। मलाया से मैं १० करोड़ रुपये चाहता हूं। मलाया में भारतीयों की जो सम्पत्ति है मेरी माग उसका १० वां हिस्सा है।"

सभाके अन्तमें जब धन संग्रह किया जाने लगा तब देखा गया ७० लाख डालर उसी समय एकत्र हो गये। आगे के चौबीस घण्टे में जो संग्रह हुआ वह सब मिलकर १ करोड़ २० लाख डालर हुआ। १९४३ के अन्त तक ७७२७९४७ डालर एकत्र हुए थे। सिंगापुर का नम्बर सबसे ऊंचा रहा, जहां २९ लाख ९४ हजार डालर एकत्र हुए थे। इसमें उपहारमें मिले हुए जवाहरात और चाँदीकी वस्तुएं सम्मिलित नहीं हैं। इसका मूल्य भी ८८ हजार डालर अंकित किया गया है। आजाद हिन्द फौज के कर्नल का वेतन २५० रुपया प्रतिमास और मेजरको १८५ रुपया। फौजियोंका वेतन आजाद हिन्द सरकार देती थी परन्तु इसके सैनिक क्रान्तिकारी ढंग पर बहुत थोड़े में निर्वाह करते और बची हुई प्रत्येक पाई इण्डिपेण्डेट लीगके फण्डमें दे देते थे।

आजाद बैंक कैसे बनी ?

एक मुस्लिम व्यापारी ने नेताजी को स्वातन्त्र्य युद्ध के लिये नगद, आभूषण और जायदाद कुल १ करोड का दान दिया था। उस भाईको नेताजी ने सेवक-ई-हिन्द का पदक प्रदान किया। ऐसा पदक पाने वालों मे यह प्रथम था। १९४४ के अप्रैल में नेशनल बैंक आफ आजाद हिन्द का निर्माण हुआ। रंगून मे इसका मुख्य केन्द्र था। वहाँ के एक प्रमुख व्यापारी से बात चीत करते हुए नेताजी ने कहा कि बैंकके बिना कोई सरकार चल नहीं सकती। इम्फाल हाथमें आते ही हम अपने नोट जारी करेंगे। और उस समय इस बैंक का मूल्य बहुत बड़ा होगा। व्यापारी ने पूछा कि आप कितने रुपये से इसका प्रारम्भ करेंगे ? नेताजी ने ५० लाख मूलधन बताया। व्यापारी ने मुस्करा कर कहा कि नेताजी, आप सिर्फ इतना ही चाहते हैं ? लीजिये, तीस लाख देना तो मैं अभी स्वीकार कर रहा हूं और शेष बीस लाख एक सप्ताह मे पहुंचा देने की प्रतिज्ञा करता हूं। इसके बाद बैंक खुल गया और कारबार होने लग गया। पचास लाख के शेयर जारी किये गये थे जिनमें पचीस लाख विक्रीत मूलधन था। बर्मा मे प्रचलित रजिष्ट्री कानून के अनुसार यह रजिस्टर्ड कराया गया था। जनताने इसका इतना स्वागत किया और इसकी साख इतनी बढ़ गई कि तीन स्थानोंमें इसकी शाखाएं

खुल गईं और स्थानों में खोलने की मांग थी। मई १९४५ तक इसका कार्य्य होता रहा। रंगून के पतन के बाद भी आजाद बैंक जारी रहा। ब्रिटिश सेनापति ने इसका जारी रखना पहले तो स्वीकार किया था। किन्तु १९ मई १९४५ को बैंकपर सरकारी अधिकार हो गया। इस समय भी बैंक के पास ३५ लाख रुपये थे। बैंक की पास बुकों समेत यह सब धन सरकार ने जब्त कर लिया। आजाद सरकार के सभी विभागों का खर्च यहीं से चलता था और सिपाहियों के वेतन की आखिरी पाई तक चुका दी गई थी। इसी प्रकार नेताजी के विस्तृत प्रभाव के अनेकों उदाहरण पाये जाते हैं। हम पहले ही कह चुके हैं कि नेताजी के कारण ही पूर्व एशिया भारतीय जापानी अत्याचारों से बचे रहे। अब सुभाष बाबू के सम्बन्धमे कुछ अधिक कहने के पूर्व उचित है कि उनके सहकारियोंका परिचय दिया जाय।



झांसी की रानी रेजीमेन्ट की अध्यक्षा

कैप्टन डा० लक्ष्मी स्वामिनाथन्

स्वाधीनता युद्ध के सेनानी

दिल्ली के उस ऐतिहासिक लाल किले में जिसमें आज से २२६ वर्ष पूर्व गैब्रियल हैमिल्टन नामक एक स्काटिश डाक्टर आया था और जिसने शाहंशाह फर्रुशियर को ठीक उसकी शादीके मौके पर इलाज कर चङ्गा कर दिया था। इसके इनाम मे हुगली नदी के तटपर उसे एक कारखाना खोलने की आज्ञा और ३२ सूबो की मन्सबदारी मिल गयी। इसके बाद किस प्रकार अंग्रेज भारतमें आए वह इतिहास का प्रत्येक विद्यार्थी जानता है। १८५७ के गदर का इतिहास भी लाल किले का एक रक्तरञ्जित पृष्ठ है। सितम्बर १८५८ मे ४० दिन के मुकदमे के बाद हिन्दुस्तान के बादशाह बहादुरशाह को आजीवन कारावास का दण्ड मिला। वे रंगून निर्वासित कर दिये गये जहा नवम्बर १८६२ में उनकी मृत्यु हो गयी। उन पर

सम्राट (ब्रिटिश सम्राट) के विरुद्ध युद्ध करने, बगावत करने और यूरोपियनों की हत्या करने का अभियोग लगाया गया था। उस घटना को हुए ८७ वर्ष हो गये। उसी लाल किले की खूनी दीवारों के भीतर भारत के तीन सपूतों पर वही अपराध लगाकर मुकदमा चलाया गया था। सारे भारत का ध्यान दिल्ली की ओर था; क्योंकि इन तीनोंके रूप मे समस्त भारत पर ब्रिटिश अदालत मे मुकदमा चल रहा था। भारत की तीन मुख्य कोमे-हिन्दू मुसलिम और सिखका प्रतिनिधित्व कप्तान सहगल, कप्तान शाहनवाज और लेफ्टिनेंट गुरुबख्श सिंह ढिल्लन दिल्ली के लाल किलेमें कर रहे थे।

कप्तान शाहनवाज

कप्तान शालनवाज का विशाल डील-डौल, गौर वर्ण, बड़ी-बड़ी मूछें और मस्ताना स्वभाव सबका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करता है। उनकी फोटो देखकर बरबस मुंहसे निकल जाता है कि सचमुच वे कप्तान होनेके योग्य हैं। उनका व्यक्तित्व प्रभावोत्पादक है।

रावलपिंडीके एक उच्च परिवार में २४ जनवरी १९१४ को आपका जन्म हुआ था। आपका खानदान सम्राट की सरकार में अपनी अमूल्य सैनिक सेवाओंके लिये प्रतिष्ठित है। आपने भी वंश की परम्परानुसार देहरादून के सैनिक विद्यालय में शिक्षा

ग्रहण की थी। १९३६ में आपने स्थायी कमीशन प्राप्त किया था। फरवरी १९३७ में आप चौदहवीं पंजाब रेजिमेण्ट में नियुक्त कर दिये गये। यह रेजिमेण्ट ब्रिटेन के लिए मलाया और सिङ्गापुर मे लड़ी थी परन्तु १५ फरवरी १९४२ मे जब सिङ्गापुर का पतन हुआ तो अंग्रेज भारतीयों को वहीं उनके भाग्य पर छोड़कर भाग आये थे। भारतीय अफसर और सैनिक जापानियों द्वारा युद्ध बन्दी बना लिए गये। १७ फरवरी को ही जापानियों ने बहुत से भारतीय सैनिकों को छोड़ दिया और कहा कि यदि वे भारत की स्वतन्त्रताके लिए सैन्य संघटन करना चाहें तो उन्हें आजादी है। कप्तान कियानी और कप्तान मोहनसिंह के नेतृत्व मे एक सैन्य संघटन किया गया—जिसका वास्तविक रूप २ सितम्बर १९४२ को बना। कप्तान शाहनवाज खां निसन युद्धबन्दी शिविर के अध्यक्ष थे। आपने अपने साथी अफसरोंको कप्तान मोहनसिंहका आजादीका सन्देश सुनाया और आजाद हिन्द फौजके संघटन में सक्रिय सहयोग प्रदान किया। परन्तु कप्तान मोहनसिंह ओर जापानियों मे अधिक देर तक बनी नहीं-फलस्वरूप वे गिरफ्तार कर लिए गये और भारतीयों का सैन्य-संघटन समाप्त प्रायः हो गया। बाद को श्री रासबिहारी बोस तथा अन्य प्रवासी भारतीयों के सहयोग से जनवरी १९४३ मे दोबारा सैन्य-संघटन प्रारम्भ हुआ। कप्तान शाहनवाज ने पोर्ट डिक्सन, पोट खोटेनहम् आदि स्थानोंसे अपने साथी अफ-

-सरों को समझाकर और उन्हें आजाद हिन्द फौजका उद्देश्य बतलाकर सैन्य संघठन किया था। मई १९४३ में एक सैनिक ब्यूरो बना जिसके आप अध्यक्ष बनाये गये। जून १९४३ में श्री सुभाषचन्द्र बसु ने आजाद हिन्द फौजका नये सिरेसे संघटन किया। और उसे यह नाम दिया। अक्तूबर १९४३ को सिंगापुर में स्वतन्त्र भारतीय राष्ट्रीय सरकार की स्थापना हुई जिसमे कप्तान शाहनवाज भी मन्त्री थे। कप्तान शाहनवाजका व्यवहार अपने सहयोगियोंके साथ बहुत अच्छा था और वे अपने देश-वासियोंके कष्टसे दुःखी होते थे और हर प्रकार से उसे दूर करने की चेष्टा करते थे। उनकी डायरी से पता चलता है कि जापानी आजाद हिन्द फौज के सिपाहियों के लिये पूरा राशन तक नहीं देते थे—शाहनवाज इससे बहुत दुखी हुए और उन्होंने लिखा पढ़ी कर सैनिकोंके लिये खानेका इन्तजाम किया।

कप्तान शाहनवाज अत्यन्त धीर और स्थिर बुद्धि से काम करते हैं। इसका इसीसे स्पष्ट पता लग जाता है कि जब ४ मई १९४५ को जापानी आराकानके मोरचे पर से भाग खड़े हुए और आजाद हिन्द सेना ब्रिटिश सेना से चारों ओर घिर गयी तो भी कप्तान शाहनवाज बिना भोजन पानी तथा युद्ध-सामग्री के लड़ते रहे। २१ फरवरी १९४५ को आप पोपा से अग्रिम मोरचे के लिये रवाना हो गये। २२ फरवरी को कोक पेंडांग में पहुंचकर आप लेफ्टिनेन्ट ढिल्लन और कप्तान सहगल से मिले।

आपने दोनों सेना नायकों को नये आदेश दिये। मई १९४५ में आसाम और आराकान में मोरचे पर जापानी सेना आजाद हिन्द फौज को धोखा देकर भाग गयी। आजाद हिन्द फौज चारों ओर से घिर गयी। कप्तान शाहनवाज कई दिनों तक जंगलों मे अन्न जल विहीन घूमते रहे। उनके चारों ओर गोलियों की बौछारें होती थीं। अन्तमे १७ मई १९४५ की शाम को ६ बजे सीताविनजिक्स नामक गांव मे आप गिरफ्तार कर लिये गये—और पेगू जेल में भेज दिये गये—बाद मे आप दिल्ली लाये गये जहाँ आप पर सम्राट के विरुद्ध युद्ध घोषणा करने के अपराध मे मुकदमा चलाया गया। कप्तान शाहनवाज सुभाष ब्रिगेड के, जो छापा मार सैनिकोंका संघटन था, कमाण्डर थे। यह ब्रिगेड इम्फाल के मैदान में लड़ी थी। एक समय कप्तान शाहनवाज खा को इम्फाल के युद्ध में स्वयं अपने भाई के विरुद्ध लड़ना पड़ा था। इस समय शाहनवाज खा के परिवारके ६२ सदस्य ब्रिटिश भारतीय सेनामे हैं।

कप्तान सहगल

अमर शहीद भगत सिंह की स्मृति करानेवाला कप्तान सहगल का चेहरा अभी नौजवानी के तेज से चमक रहा है। आप अपने दोनों साथियों से छोटे हैं। आपकी अवस्था केवल २८ वर्ष की है। आप लाहौर हाई कोर्ट के भूतपूर्व जज अच्छराम के सुपुत्र हैं।

देहरादून के सैनिक विद्यालय में शिक्षा प्राप्त कर आप १० बलूच रेजिमेण्ट में फरवरी १९४० में नियुक्त किये गये। आप बहुत हंसमुख और जिन्दा दिल हैं। लेकिन देशभक्ति आपमें कूट कूटकर भरी है। अपने साथियों को हिम्मत हारते देखकर आप गुस्से से उबल पड़ते थे और कठोर अनुशासन से काम लेते थे। लेकिन उसी तरह बहादुरी का जौहर दिखानेवालों को आप नेताजी सुभाष से सिफारिश करते थे और उन्हें बहादुरी का मेडल दिलवाते थे। इरावदी के मोर्चेपर जब लेफ्टिनेण्ट ढिल्लन की कमान कमजोर पड़ती दिखायी दी तो आपने फौरन यथा-शक्ति उनकी मदद की। बर्मा-आसाम के युद्ध क्षेत्र में आप पोपोधा पहाड़ी की रक्षा में लगे थे और उसकी तबतक रक्षा करते रहे जबतक लेफ्टिनेण्ट ढिल्लन निरापद नहीं हो गये। आप २८ अप्रैल १९४५ को गिरफ्तार किये गये थे।

स्वतन्त्र भारत सरकारमें आप युद्ध मन्त्री के पदपर थे। आप पर कामाडुक-पेडाग और पोपा के क्षेत्रमे सम्राटके विरुद्ध युद्ध करने तथा चार व्यक्तियो को मृत्युदण्डकी आज्ञा देनेका अपराध लगाया गया था। ६ नवम्बर को लालकिले के मुकदमे में उस समय करुणोत्पादक दृश्य उपस्थित हो गया था जब भैयादूज के दिवस कप्तान सहगल की बहन ने भाई के ललाट पर रोरी का तिलक लगाया था।

कप्तान ढिल्लन

आजादीके इस दीवाने ने सिख होते हुए भी केश नहीं रखे। शायद वे भी उस दिन की स्मृतिमे भेंट चढ़ा दिये गये हैं जब हम सबका प्यारा भारत स्वतन्त्र होगा। लेफ्टिनेन्ट ढिल्लनकी अवस्था ३० वर्ष की है। ४ अप्रैल १९१५ को लाहौर जिलेके अलगों नामक स्थानमें आपका जन्म हुआ था। आप केवल कुशल सैनिक ही नहीं गम्भीर विचारक भी हैं। अपने भविष्यकी जरा भी चिन्ता इस 'जय हिन्द' सेनाके वीरको नहीं—यह मस्त पड़ा लाल किलेमे यही सोच रहा था कि क्यों और किस कारण से वे लोग असफल हो गये। इसमें निराशाकी भावना नहीं, विचारोंका संघर्ष था।

आपने भी देहरादूनके सैनिक विद्यालयमें शिक्षा प्राप्त कर अप्रैल १९४० में स्थायी कमीशन प्राप्त किया था। कप्तान शाह-नवाजकी तरह आप भी प्रारम्भसे ही आजाद हिन्द फौज के संगठनमें दिलचस्पी लेते रहे हैं। तायदिंग और जितरामे अपने साथी युद्ध-बन्दियोंके बीच आपने अपने पवित्र उद्देश्यका बहुत प्रचार किया। आप अच्छे संगठनकर्त्ता हैं परन्तु आपको अनु-शासन इतना प्रिय है कि विश्वासघाती और कायर सैनिकोंसे आप बहुत कठोरतासे पेश आते थे। बहादुर सैनिकों को आप पुरस्कार देते थे। आपकी कमानमे ही इरावदीके कठिन मोर्चे की

रक्षाका भार था। आप अपना कर्तव्य पूरा करने और भारत स्वतन्त्र देखनेके लिये इतने लालायित थे कि असफल हो जाने पर आपको बहुत धक्का लगा। आपने असफलताकी सारी जिम्मेदारी अपने सिर लेकर नेताजीको दुःख भरा पत्र लिखा—कि शब्द नहीं, केवल आंसू ही मेरे हृदयकी व्यथाको प्रकट कर सकते हैं। ये शब्द आपका परिचय स्वयं देते हैं। लेफ्टिनेण्ट ढिल्लन आजाद हिन्द फौजके नेहरू ब्रिगेडके कमाण्डर थे।

आप विवाहित हैं। आपकी पत्नी भी लालकिलेमें पतिका मुकदमा सुनने आती थी। लेफ्टिनेण्ट ढिल्लन पर सम्राट के विरुद्ध युद्धके अतिरिक्त चार व्यक्तियोंकी हत्याका अभियोग भी लगाया गया था।

सारा भारत इन राष्ट्रवीरों पर मुकदमा चलानेके कारण दुःखी और क्षुब्ध था और संतप्त हृदयसे उस दिनकी प्रतीक्षामें था कि जब कप्तान शाहनवाज, कप्तान सहगल और लेफ्टिनेण्ट ढिल्लन सम्मान सहित रिहा होकर फिर देशवासियोंके बीच आ जायंगे।

डा० लक्ष्मी स्वामीनाथन

झांसीकी प्रसिद्ध रानी लक्ष्मी बाई १८५७ में अंग्रेजोंके राज्य को समाप्तकर झांसीपर अपना स्वतन्त्र राज्य स्थापित करनेके लिये लड़ीं। उन्होंने सफलता और असफलताके विविध दृश्य देखे--परन्तु

स्वाधीनता युद्ध के सेनानी

भारतके पुरुषों और स्त्रियोंके दिलों मे अपनी वीरताकी कहानियाँ अमर कर गयीं। पठित और अपठित सभी श्रेणी के भारतीयोमें उनके लिये आदर का भाव बढ़ता ही जा रहा है। उनकी कथाओं से लोगोंको चेतना मिलती है। वे भी स्वतन्त्रताके लिये उनके अनु-सरणकी भावना बनाते हैं। श्रीयुत सुभाषचन्द्र वसुने इस स्वाभा-विक मनोवृत्तिका लाभ उठाकर रानी लक्ष्मी के नामपर आजाद हिन्द फौजका एक स्त्री रेजीमेन्ट बना डाला। सौभाग्य से जलते हुए अंगारे के समान अपने विचारों से साथियोकी टोलीको भट्टी समान तेजस्वी बनाकर आजादी के लिये दीवाना बनानेवाली डा० लक्ष्मी स्वामीनाथन श्री नेताजीको मिल गयीं।

आपके नेतृत्व मे रानी झांसी रेजीमेन्ट दलका संगठन हुआ था। यह दल १९४५ के अप्रैल तक काम करता रहा। आपके दलकी स्त्रियां, सभी प्रकार के आधुनिक अस्त्र-शस्त्रोंका चलाना सीख चुकी थीं। वे युद्ध क्षेत्रमे लड़ने के लिये तैयार थीं, और लड़ी भी थीं। जिसकी रिपोर्ट पिछले पृष्ठों मे पाठक पढ़ भी चुके हैं। रंगून पर ब्रिटिश अधिकार के बाद अप्रैलमे यह दल तोड़ दिया गया और अधिकाश स्त्रियाँ रंगूनसे चली गयीं।

आप भी टागूके जापानी अस्पतालसे पकड़कर रंगून जेलमे रखी गयीं। परन्तु आपके कारण जेलमे और जेल के बाहर भारतीय सैनिकों में भयंकर अशान्ति फैलने लग गयी। अधिकारी वर्ग

तंग आ गये थे और सैनिक विद्रोह की आशंका से डर गये थे—इसके बाद फिर आपको छोड़ दिया गया।

१९४५ की २१ अक्टूबरको आजाद हिन्द सरकारकी स्थापना का दिन था। आपने एक मित्रके घर जाकर थोड़े से लोगोंके सामने भाषण दिया। बस आग भड़क उठी। ५ हजार भारतीय इकट्ठे हो गये और फिर आपने खुले मैदानमें भाषण दिया। आपने कहा कि आजाद हिन्द फौज जिस उद्देश्यके लिये बनी थी—हम उसे अभी तक पूरा नहीं कर पाये हैं। अतः स्वतन्त्रताका हमारा प्रयत्न चालू रहेगा। इस भाषण पर आपको फिर बोलनेसे मना किया गया—पर आपने इस आज्ञा को मानने से अस्वीकार किया। यह वह स्वरूप है डा० लक्ष्मी स्वामीनाथन का जो ब्रिटिश साम्राज्य को कायम रखनेकी चिन्तावालों को भयानक प्रतीत होता है। आप हमेशा बातचीत में मित्रोंमें प्रचार करती रहती हैं। आप उस दिनकी प्रतीक्षा कर रही हैं जब आजादी का कार्य पूरा हो जायेगा। आप चाहे उनसे सहमत हों या न हों किन्तु वह इस खुले विद्रोह से ही भारत स्वतन्त्र होगा—ऐसा मानती हैं। आप हमेशा भारतकी स्वतन्त्रताके लिये उत्साह और साहस के साथ प्रयत्न करनेके लिये लोगोंको तैयार करती रहती हैं। आपकी भावना और प्रयत्नका बहुत गहरा असर पड़ता है। आपके समान वीर, धीर और निडर स्त्री मैंने नहीं देखी—

ऐसा एक ब्रिटिश सैनिक अफसरने कहा था। आपकी ईमानदारी और सत्यनिष्ठाकी सभी ब्रिटिश अफसरों पर छाप है।

आप आजाद हिन्द सरकारके मन्त्रिमण्डलमें भी थीं। आपको समाज-सुधार और चिकित्साका विभाग मिला था। आपका वक्तव्य आजाद हिन्द फौजके लिये सचा और ठीक माना जा रहा है। आपने बताया कि "आजाद हिन्द सरकारने टैक्स लगाकर धन नहीं एकत्रित किया था। न जापानियोंसे सहायता ली थी। सिपाहियोंसे किसी प्रकारका भेदभाव न था। खाना-पीना भी सबका एक साथ होता था। एक ही साथ पकता था और सब खाते थे। हिन्दू और मुसलमानमे भी कोई भेद न था। अब एकता और संगठनके सूत्रमे बर्मा और भारतको मिलानेका प्रयत्न कर रही हू। सरकारी भारत सेनाके आनेसे भारतीय और बर्मी कोसों दूर होते जा रहे हैं। आजाद हिन्द फौजने दोनों देशोंको एक कर दिया था। हम दोनों को अपनी कठिनाइयों में एक साथ रहने की आशा थी।" उनके कमरेमें महात्मा गाँधीका चित्र टंगा रहता है। साथ ही दूसरा चित्र कवीन्द्र रवीन्द्रका रहता है। इस स्त्री में नेतृत्वके लिये महान और आवश्यक गुणों का समुद्र लहरा रहा है। जिसकी माग आजके भारतके संघर्षमें अत्यन्त उत्सुकता से हो रही है। परन्तु खेद है—ब्रिटिश साम्राज्यकी रक्षाके विचारसे बने रक्षा कानूनके अनुसार आपको बर्माके शान स्टेटके कोलावामें पकड़ रखा गया है।

कुछ आपका ऐतिहासिक परिचय भी दिया जा रहा है—

(१) अक्टूबर १९४३ मे श्री सुभाषने रानी झाँसी रेजीमेन्ट का संघटन किया। आप उसकी कप्तान नियुक्त की गयीं।

(२) आप १९३७ में मद्रास विश्वविद्यालयसे डाक्टरीकी डिग्री प्राप्तकर १९४० मे सिंगापुर चली गयीं। वहां प्रैक्टिस कर रही थीं। १९४२ में वहां जापानका अधिकार हो गया। आप मद्रास की प्रसिद्ध कांग्रेस कर्मी श्रीमती अम्मा स्वामीनाथन एम० एल० ए० (केन्द्रीय) की पुत्री हैं।

(३) आपके परिवारमे उनकी माता, दो भाई और एक बहिन है। ये लोग भारतमे ही हैं। आपका पत्र व्यवहार परिवारवालोंसे बराबर होता रहता है। आप स्वयं भारत आने के लिये तड़प रही है।

(४) एक ब्रिटिश अफसरने प्रश्न किया था कि—यदि मैं मोर्चेपर मिलता तो आप क्या करतीं ?

"मैं गोली मार देतीं।"

यह आपका शानदार उत्तर भारतमे विख्यात हो चुका है। आपमें वीरता, ध्येय निष्ठा, सचाई और कर्मशीलता आदि अमूल्य गुण हैं जिनके कारण भारतमे आपके लिये अमूल्य स्थान है। प्रभु, आपको हमारे साथ स्वतन्त्रताकी प्राप्तिमे सफल करे। आजाद हिन्द फौजका सुगन्धमय पुष्प विचित्र है। जो स्वयं बगीचा लगाता है और हजारों पुष्पोंको विकसित करने का सामर्थ्य रखता है।

राजा महेन्द्र प्रताप

भारत के सुप्रसिद्ध क्रान्तिकारी राजा महेन्द्र प्रतापका जन्म संयुक्तप्रान्त के मुरसान स्थानमे १८८६ मे हुआ था। आप मुरसानके राजा बहादुर घनश्याम के सुपुत्र है। आपको हाथीराज राज्यके राजा हरनारायण सिंह ने गोद ले लिया था। १० वर्षकी अवस्थामें आपके पिताका देहान्त हो गया था अतः आपके पिता का राज्य कोर्ट आव-वार्ड्सके अधीन हो गया। आपने अलीगढ कालेजमें उच्च शिक्षा प्राप्त की थी। एक अंग्रेज प्रोफेसर के व्यवहारके विरुद्ध कालेज मे हड़ताल हुई। महेन्द्र प्रताप उसके नेता थे। हड़तालकी समाप्तिपर फिर आप कालेज नहीं गये।

१६ वर्षकी अवस्थामे महेन्द्र प्रतापने जिन्दके राजा की छोटी बहनसे विवाह किया और १८ वर्ष की अवस्थामें आप पत्नी सहित यूरोप-यात्रा को चले गये। यूरोप में आप अनेक शिक्षा संस्थाओं का निरीक्षण करते रहे और लौटने पर वृन्दावन मे अपनी पत्नीके नामपर प्रेम महाविद्यालयकी स्थापना की। आपने इस विद्यालयको पांचगाव, १० लाख रुपये और वृन्दावनका अपना महल दे दिया। १९१२ मे यूरोप की द्वितीय-यात्रासे लौटने पर आप इसी विद्यालय द्वारा राष्ट्रीय जागृतिके उद्देश्यसे रचनात्मक कार्य करने लगे।

१९१४ में प्रथम महायुद्धके प्रारम्भमें आप फिर यूरोप चले गये और वहां विदेशी शक्तियोंकी सहायता से भारतकी स्वाधीनताको

चेष्टामें रत हुए। जर्मन सम्राट कैसरका पत्र लेकर आप तुर्कीकी राह इण्डो जर्मन मिशन का नेतृत्व करते हुए अफगानिस्तान आये और अमीर अब्दुर्रहमान से वातचीत कर फिर जर्मनी चले गये। कैसर ने अमीर को भारत पर आक्रमण करने की सलाह देते हुए अपनी पूर्ण सहायताका आश्वासन दिया था। उसी समयसे आप ब्रिटेन द्वारा बागी करार दिये गये और भारत का दरवाजा आपके लिये बन्द कर दिया गया।

अफगानिस्तान के अमीर अमानुल्ला आपके अभिन्न मित्र थे। आपने अफगानी नागरिकता प्राप्त कर ली और विभिन्न देशोंमें अफगानिस्तानके प्रतिनिधिके रूपमें घूमते रहे। बरलिनसे आपने 'वर्ल्ड फेडरेशन' नामक अंग्रेजी पत्रिका का सम्पादन भी किया था।

बहुत वर्षों तक आप अज्ञातवासमें रहे। मास्को और काबुलमें आपके होनेकी अफवाह सुनी जाती थी परन्तु बादमें आप जापान चले गये। वहां भी ब्रिटिश राजदूतने जब आपको परेशान किया, तब आपने कहा कि आप (राजा महेन्द्रप्रताप) ब्रिटिश नहीं वरन अफगान नागरिक हैं। आपने होनोलूलू में आर्यन सेना की स्थापना की और भारतको स्वतन्त्रता तथा विश्वकी समानता और एकताके लिये लगातार प्रचार करते रहे।

जापान की पराजय के बाद जेनरल मैकआर्थर ने आपकी गिरफ्तारीका आदेश दिया। १५ सितम्बर को जापानी अधि-

कारियोने राजा महेन्द्रप्रतापको अमेरिकनोंके सुपुर्द कर दिया। इस समय यह ज्ञात नहीं है कि आप कहा और किस स्थितिमें हैं।

स्वर्गीय श्री रासबिहारी बोस

भारतीय स्वाधीनता लीग के अध्यक्ष तथा बाद में श्री सुभाषचन्द्र बोस की आजाद हिन्द सरकारके सर्वोच्च सलाहकार श्री रासबिहारी बोसको मृत्यु महायुद्धके बीचमें ही जुलाई १९४४ मे टोकियोमे हुई।

सुदूरपूर्वमे भारतीय स्वातन्त्र्य आन्दोलन के आप अग्रणी थे और सच पूछा जाय तो रासबिहारी ही आंदोलनके जन्मदाता थे। १९१२ मे भारतकी नयी राजधानी दिल्लीमें लार्ड हार्डिंगके जलूस पर श्री रासबिहारी बोस तथा उनके साथियोंने (रौलट कमेटी की रिपोर्ट के अनुसार) बम फेंका था। आपके साथी श्री अवध बिहारीलाल और मास्टर अमीरचन्द को दिल्ली षड़यन्त्र केस मे १९१४-१५ में प्राणदण्ड दिया गया था। श्री रासबिहारी की गिरफ्तारी के लिये १२०००) रुपयेके इनामकी घोषणा की गयी तथा आपके चित्र हिन्दुस्तान भरमें बांटे गये थे। इसके बाद १९१५ तक आप बनारस और लाहौर से षड़यन्त्रकारी आन्दोलनका संचालन करते रहे और फिर जापान चले गये। भारत से बिना पासपोर्ट आपका जापान चला जाना वैसा ही था जैसा श्री सुभापका ब्रिटिश गुप्तचरों के देखते देखते भारतसे बाहर निकल

जाना। आपने चीनसे भारतमें शस्त्र भेजनेकी भी चेष्टा की परन्तु रास्तेमें ही ब्रिटिश जासूसों द्वारा जब्त कर लिये गये। ब्रिटिश अधिकारियों की प्रार्थना पर जापानियोंने आपको पांच दिन के भीतर शंघाई से निकल जानेका आदेश दिया। उसके बाद श्री रासविहारी आठ वर्ष तक अज्ञात वासमें रहे।

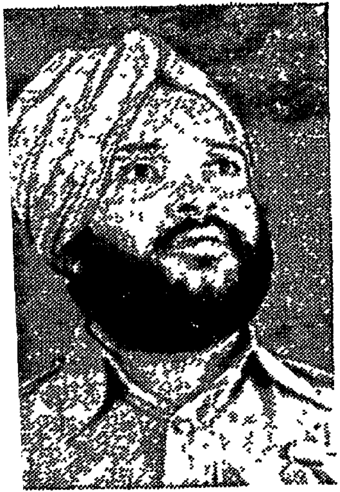
प्रकट होनेके बाद आपने जापानमे भारतीय स्वातन्त्र्य लीग की स्थापना की। आपने भारतीय समस्याओं पर जापानी भाषा में पाच पुस्तकें लिखी हैं तथा श्री सुन्दरलालकी पुस्तक 'भारत में अंग्रेजी राज्य" का जापानी भाषामे अनुवाद भी किया है। आपने जापानी भाषामें भारतीय समाचार पत्र भी निकाला था। और टोकियोमें शिव-मन्दिरकी स्थापनाके लिये चन्दा भी जमा किया था। भारतकी ब्रिटिश सरकारकी ओरसे उनके विरुद्ध यह आज्ञा थी कि वे जब भारत में आयें तो उन्हें फाँसी दे दी जाय। उनकी मृत्युसे भारत का एक सच्चा क्रान्तिकारी दुनियां से उठ गया। आजाद सेनाके अन्य सेनानायकोंमें कैप्टेन मोहन सिंह—आप कपूरथला राजवंश से सम्वन्धित हैं, और कैप्टेन बुरहानुद्दीन—आप चित्राल के मेहतराके भाई हैं, का भी स्थान महत्वपूर्ण है। आप दोनों भी दिल्लीमें बन्द हैं और परिणाम की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

कर्नल भोंसले

कर्नल जगन्नाथ भोंसले का जन्म १६०६ मे सावन्तवाडी राज्यके तिरोडी गावमे हुआ था। आप उस भोंसले वंशके रत्न हैं जिसमें छत्रपति शिवाजी जैसी महान विभूतिका जन्म हो चुका है। सावन्तवाडीमें प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करनेके वाद आप देहरादून के मिलेटरी कालेजमे भरती हो गये। यहाकी ट्रेनिंग समाप्त करनेके वाद आप १६२६ मे इंगलैण्ड के संढर्स्ट कालेजमे भरती हुए। आपकी योग्यता और चातुरी की सभी सम्वन्धित जनोंने प्रशंसाकी है। १६२८ मे आपने क्वेटा स्थित लड्काशायर रेजीमेंट में प्रवेश किया और वहासे एक वर्ष वाद रायल मराठा इन्फेन्ट्री में आपकी वदली हो गयी। १६४० मे आप लेफ्टिनेन्ट एडजूटेण्टके पदपर पहुंचे और कोनूरमे नियत किये गये। यहीं पर उन्होंने तूफानी सागरकी तरंगोमे डूवते हुए दो उच्च पदाधिकारी यूरोपियन सैनिकोंकी प्राण रक्षाकी थी। आपके इस कार्यकी वड़ी सुख्याति हुई और सम्राटने इस वीरताके लिये आपको एक मेडल प्रदान किया। १६३७ से कर्नल भोंसले कप्तान वनाये गये और उसी वर्ष लन्दनमे राजतिलक होने वाले उत्सवमे सम्मिलित हुए। इंगलैण्डसे लौटने पर आप जनरल स्टाफकी ट्रेनिंगके लिये चुने गये। आप पहले भारतीय हैं जो इस कार्यके लिये चुने गये थे। यहांकीशिक्षासमाप्त कर आप वरेली स्थित जनरल स्टाफमे नियत किये गये और वहीं से जनरल स्टाफके अन्तर्गत लेफ्टीनेण्ट कर्नल वनाकर सिंगापुर भेजे

गये। सिंगापुरके पतनके पश्चात् आपने आजाद सेनामें प्रवेश किया और इतनी उन्नति की कि उसके चीफ आफ स्टाफ बनाये गये। उन्होंने आजाद फौजके सहस्रों भारतीय अफसरोंको शिक्षा दी है।

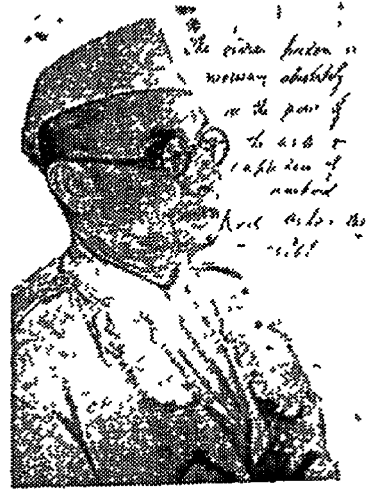
जापानी आत्मसमर्पण के बाद आप बैंकाकमें पकड़ कर भारत लाये गये, किन्तु अभी तक आपपर मामला नहीं चलाया चला। आपके कई भाई बंधु बड़ोदा और सावन्तवाड़ीके सेना विभाग के ऊंचे पदोंपर हैं। आप सिन्धिया राजवंशसे सम्बन्ध रखते हैं। आपकी धर्मपत्नी चन्द्रिका बाई बहुत ही ऊंचे कुटुम्ब की हैं और बड़ोदा, कोल्हापुर और सावन्तवाड़ीके राज्य परिवारोंसे आप घनिष्ठ रूपसे सम्बन्धित हैं। आपके तीन लड़कियाँ हैं जिनमें सबसे बड़ी ११ वर्षकी है। पुत्रियों समेत आपकी धर्मपत्नी का निवास इन दिनों बड़ोदामें हैं। आपका शरीर बहुत ही सुन्दर बना हुआ है और एक सैनिकके सर्वथा योग्य है। आपका स्वभाव बहुत ही सादा और चरित्र उत्तम है। मराठीके अतिरिक्त अंगरेजी, हिंदी और उर्दू पर भी आपका अच्छा अधिकार है। आप क्रिकेटके अच्छे खिलाड़ी हैं। आपकी ८५ वर्षकी वृद्धा माता श्रीमती गङ्गाबाई सावन्तवाड़ीमें अपने दिन अपनी कुलदेवी माता भवानी की प्रार्थनामें बिताती हैं कि जिससे अपने पुत्रके साथ पुनः मिल सकें। परमेश्वर करे उनकी प्रार्थना सफल हो और वे अपने हृदय के टुकड़ेको अपने हृदयमें पुनः लगानेका अवसर पायें।



कैप्टेन जी० गिलानी
जा़द सेना की नींव डालनेवाले



कर्नल जगन्नाथ भोंसले
आज़ाद सेना के चीफ आफ स्टाफ



स्वर्गीय रासबिहारी बोस
स्वाधीन भारत लीग के अध्यक्ष



कैप्टेन गुरूबख्श सिह ढिल्लन

नेहरू ब्रिगेड के नायक



कैप्टेन सहगल



कैप्टेन शाहनवाज

सुभाष ब्रिगेड के नायक

आज़ाद सेना बंधन में

पूर्व परिच्छेदों मे पाठक यह पढ़ चुके हैं कि अगस्त १९४४के अन्तिम सप्ताहमें प्रधान सेनापति नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की आज्ञासे आक्रमणमूलक युद्ध आजाद हिन्द सेनाने बंद कर दिया था। नेताजीने उसी समय यह घोषित किया था कि वर्षा बाद पुनः आक्रमण की तैयारी की जायगी। सितम्बरके प्रथम सप्ताहमे स्वाधीनता संघका सम्मेलन रंगूनमे प्रारम्भ हुआ। बर्मामें इस संघकी ७४ शाखायें थीं और इसके १८० प्रतिनिधि इस सम्मेलनमें उपस्थित थे। इसके बाद २२ सितम्बर को यतीन्द्र दास तथा दूसरे शहीदोंका दिवस मनाया गया। जुबली हाल भलीभाति सजाया गया था। जिसमे भगतसिंह, राजगुरु और सुखदेव जो इन्कलाब जिन्दाबाद के नारेके साथ फाँसी के झूले पर चढ़े थे, चन्द्रशेखर आजाद और

सुनीति, शान्ति जिन्होंने मेदिनीपुरमें मजिस्ट्रेट पर पिस्तौलसे आक्रमण किया था, तथा वीणादास,—जिसने कलकत्ता विश्व-विद्यालयके दीक्षान्त भाषणके समय गवर्नर पर गोली छोड़ी थी और यतीन्द्रदास,जिन्होंने लाहोर जेलमे भूख हडतालके द्वारा प्राण विसर्जित किये थे, आदिके जीवन और देशके लिये कष्ट सहन पर विविध वक्ताओंके भाषण हुए। इसके वाद नेताजीने अपने प्रभावशाली भाषण मे अधिक वलिदान की मांग की और कहा कि तुम मुझे खून दो और मैं तुम्हें आजादी दूंगा। स्वाधीनता आपसे रक्तका दान मांगती है।

जनता ने एक स्वरसे कहा, हम तैयार हैं। हम खून देंगे, अभी ले लीजिये। नेताजीने कहा,—मेरी वात सुनो। मैं आपसे भावुक उत्तर नहीं चाहता हूं। मैं उन वागियों को चाहता हूं जो सामने वढ़कर आये और अपने रक्तसे आत्मघाती दलके प्रतिज्ञा पत्र पर अपने हस्ताक्षर करें। जनताने उत्तर दिया हम तैयार है। नेताजीने कहा, किन्तु मौत के साथ होनेवाले सौदे पर साधारण स्याहीसे हस्ताक्षर नहीं हो सकते। मैं यहां मातृभूमि की स्वाधीनताके लिये आपकी रक्त मुद्राके साक्षी रूपमें खड़ा हुआ हूं। हालमे हलचल मच गयी। हर आदमी आगे वढ़ कर अपने रक्तसे नेताजीके सामने हस्ताक्षर करना चाहता था। छुरियों और दूसरे अस्त्रोंसे लोगोंने अपना अपना रक्त निकाला और नेताजीके समक्ष अपने अपने हस्ताक्षर किये।

इनमें १७ महिलायें थीं जिन्होंने सब से पहले अपने रक्त से हस्ताक्षर किये थे। इसके वाद २ अक्टूवर को गांधी जयन्ती और १७ नवम्बर को पंजाब केशरी लाला लाजपतराय की पुण्यतिथि वड़े उत्साह से मनायी गयी। वड़ी हलचल रही। इसी बीच समाचार मिला कि जापानी सेना टिड्डिमसे भाग खड़ी हुई है और चीनी सेनाएं भामों और ब्रिटिश सेनाएं वुथीडांग पहुंच गयी हैं। नेताजीने तो पहले ही कहा था कि आसाम और वंगालकी सीमा पर ब्रिटिश जोरदार लड़ाई करेगा। वर्मामें ब्रिटिशोंके आनेसे आजाद सेनाको गति-विधिमें वाधा पड़ने लगी और पैसफिकमें जापानी सेना कठिनाईमें फंसी हुई थी इसलिये उधरसे भी आजाद सेनाको कोई सहायता नहीं मिल सकती थी। फिर भी नेताजी आजाद सेनाके पुन संगठनमें उत्साहके साथ लगे हुए थे। कई डिवीजनों के नाम वदले गये। पांचवीं छापामार सेनाका नाम वदलकर दूसरी तोपखाना सेना किया गया। इसी प्रकार और भी कितने ही महत्वपूर्ण परिवर्त्तन किये गये।

जनवरी के प्रथम सप्ताहमें नेताजीने इसका निरीक्षण किया और भाषण देते हुए कहा कि गत वर्ष आजाद सेना पहले पहल लड़ाईके मैदानमें उतरी थी। हमारी सेनाका काम इतना गौरव-मय रहा है कि जिसे मैं आशातीत मानता हूं। हमारे मित्रों और

शत्रुओं दोनोंने ही इसकी बड़ी प्रशंसा की है। शत्रु सेनासे जहाँ कहीं हमारी मुठभेड़ हुई है वहीं हमने उसपर गहरी चोट की है। इम्फाल के मैदानसे हम अपनी सेनाको मौसमकी खराबी और दूसरी असुविधाओंके कारण बिना पराजित हुए चतुराईके साथ पीछे हटा लाये हैं। अब हमने इन सब असुविधाओं पर विजय प्राप्त कर ली है। परन्तु आपमेंसे प्रत्येक को याद रखना चाहिये कि हमारी सेना क्रान्तिकारियों की सेना है। हमारे सिपाही उस प्रकार सुसज्जित नहीं हैं जिस प्रकार हमारे शत्रु सिपाही सुसज्जित हैं। उनके अस्त्र-शस्त्र और राशन हमारे अस्त्रों और राशन से उत्तम हैं क्योंकि वे हमारे साथ युद्ध करनेके विचारसे भारतवर्ष को लूट रहे हैं।

हमारे शत्रुओंने निश्चय किया है कि भारत को ब्रिटिश साम्राज्यमें बनाये रखनेके लिये वे आसाममें पहला मोर्चा लेंगे। भारतके इस हिस्सेको उन्होंने स्टालिनग्राड बना रखा है। यह वर्ष युद्धका निर्णयात्मक वर्ष होगा। इन्फालकी पहाड़ियोंके समीप और चटगावके मैदानोंमें भारतीय स्वतन्त्रता के भाग्यका निपटारा होगा। गत वर्ष हमारे कुछ सिपाही शत्रुओंसे जाकर मिल गये थे। मैं नहीं चाहता कि वैसी ही घटना पुनः दोहरायी जाय। यदि कोई भाई अपनी कमजोरी और बुजदिलीसे समर क्षेत्रमें न जाना चाहता हो तो मैं उसे पीछे लौटा दूंगा। मैं आपके सामने मोर्चे का कोई मनमोहक चित्र नहीं खींचना चाहता। वहा तो आपको

भूख, प्यास और दूसरी कठिनाइयों यहाँ तक कि मृत्यु तकका सामना करना पड सकता है। हमारे शत्रुओंने बड़ी भारी तैयारी की है। अतः हम लोगोंको भी सब साधन जुटा लेने होंगे।

"दिल्ली चलो के नारेके साथ साथ अब हमने खून, खून अधिक खून का नारा भी जोड़ लिया है।"

इसका अर्थ यह है कि चालीस करोड़ भारतवासियों की स्वतन्त्रताके लिये हम अपना रक्त बहा देंगे। और इसी निमित्त शत्रुका भी खून बहाया जायगा। नेताजी के दिल्ली चलो और खून खून और अधिक खूनके नारेका सब ओर से स्वागत किया गया। इसी बीच २६ जनवरी आ गयी। इण्डियन नेशनल कांग्रेस के फैसले के अनुसार भारत भर मे इस तारीख को स्वतन्त्रता दिवस मनाया जाता है। आजाद सेना ने बड समारोह से स्वतन्त्रता दिवस मनाया। इस दिन आजाद सरकार की सहायता के लिये ४० लाख रुपये एकत्र किये गये। बर्मा से कुल संग्रह ८ करोड रुपयों का हुआ। फरवरी १६४५ से फिर नये उत्साहसे आजाद सेना संग्राम मे रत हुई। इस फौजने इस युद्धमे बडा जौहर दिखाया। फरवरीके दूसरे सप्ताहमें १४ वीं सेनाको जिसे अब मलाया कमान कहा जाता है, सुभाष ब्रिगेडके सैनिकोंने कैप्टेन सहगल के नेतृत्वमे आगे बढ़ने से रोक दिया। परन्तु सप्लाईकी त्रुटि, युद्ध सामग्री खाद्य और

यान बाहन तथा विमानों की कमी से इस सेना को फिर पीछे हटना पड़ा। हथियारों की भी बड़ी कमी थी। मलेरियाका बडा जोर था और दवाइयों का स्टाक समाप्त हो चुका था। अतः पीछे हटनेके सिवा कोई और उपाय न था। फिर भी आजाद सेना सहजमें पीछे नहीं हटी।

इरावदी नदीपर दो बार उसने अंगरेजी सेनाको पीछे खदेड़ा था और जब आजाद सैनिक पीछे हटने को विवश हुए तो उनका हृदय दु:खसे इतना भरा हुआ था कि उनमे कितने ही सिपाही बच्चोंकी तरह फूट फूट कर रोये। उन लोगोंने बार बार कहा कि घास और पत्तियोंपर जीवित रहनेके बाद भी आज यह दिन देखना पड़ रहा है। किन्तु युद्धकी परिस्थिति बदल चुकी थी। योरपमें जर्मनी घुटने टेकने के समीप था और पूर्वी मोर्चे पर भी मित्र राष्ट्रोंकी शक्ति बहुत अधिक बढ़ गयी थी। मार्चके ३ रे सप्ताह मे जापानियोंने रंगून खाली करनेकी सूचना दी। नेताजीने बहुतेरा समझाया कि रंगूनको योंही छोड़ना ठीक नहीं है। यहां आजाद सेनाको लड़ते ही रहना चाहिये। बर्मा यदि फिर कभी ब्रिटिशोंके हाथमें जाने दिया गया तो इसका अर्थ यह होगा कि दिल्ली हमसे और भी दूर हो जायगी, और स्वतन्त्रताकी आशा मिट जायगी। परन्तु जापानी अपनी जिद्दपर अड़े रहे। इधर गांधी और नेहरू ब्रिगेड को सम्मुख युद्धमें भारी हानि उठानी पड़ी थी। तथापि ब्रिटिश सेनाको उससे कहीं ज्यादा हानि उठानी पड़ी। धीरे धीरे

आजाद् सेना बंधन में

ब्रिटिश सेना मंडाले और मेमेयो पहुच गई। अप्रैलके प्रथम सप्ताह में मास्को ने सोवियट और जापान मे जो तटस्थता का पैक्ट था उसे भंग कर दिया। यह समाचार आजाद सेना के लिये अच्छा नहीं था। चौविस अप्रैल को सुभाष बाबू रंगून से सिंगापुर चले गये; परन्तु जब तक झांसी की रानी रेजीमेण्ट की सदस्यायें वहा से नहीं हटाई गईं तब तक सुभाष बाबू ने रंगून छोड़ना स्वीकार नहीं किया। जापानी प्रधान सेनापति एक दिन पहले ही रंगून खाली कर गया था। कर्नल लोकनाथ के मातहत ७००० आजाद सैनिक रंगून की रक्षाके लिये छोड़ दिये गये जिससे वहां अराजकता न फैले और धन जन की हानि न हो। साथ ही यह भी निश्चय कर लिया गया था कि ब्रिटिश सेना जब रंगून पहुचेगी तब उससे युद्ध नहीं किया जायगा। यद्यपि यह सैनिक मलाया हटाये जा सकते थे, क्योंकि रंगून घिर गया था। फिर भी यह देखकर कि अब विजय का कोई सुयोग नहीं है आत्मसर्पण का ही निश्चय किया गया।

आजाद् सरकार ने बैंकाक जाने के पहले सब देनदारों का पैसा चुका दिया था। तीन मई को तीन वर्ष २ मास बाद रंगून पुनः ब्रिटिशों के हाथ आ गया। यद्यपि इरावदी नदी में जापानियों ने सर्वत्र सुरंगे बिछा रखी थीं और रंगून में घर घर आसानीसे लड़ाईकी जा सकती थीं। परन्तु अब केवल जापानियों की प्रतिष्ठा के लिये भारतीय जन धनकी हानि

करना उचित नहीं समझा गया। रंगून में आजाद फौज ने अमन चैन की रक्षाके लिये बड़ा सुन्दर कार्य किया था। इस बीच वहाँ चोरी, डकैती और ठगी आदि की कोई रिपोर्ट नहीं मिली। रंगूनपर अधिकार करनेवाली ब्रिटिश भारतीय सेना के ब्रिगेडियर लाउडरने जनरल लोकनाथनको विश्वास दिलाया था कि आजाद सेनाके प्रत्येक नर-नारीको स्वतंत्रताके साथ भारत जाने का अवसर दिया जायगा। इसने उनसे यह अनुरोध किया था कि आजाद सैनिक अपनी यूनीफार्म छोड़ दें और जो अफसर पहले ब्रिटिश भारतीय सेनामें थे वे अफसर अपनी पहली यूनिफार्म धारण करें। ब्रिगेडियर लाउडर ने जनरल श्री लोकनाथन् को यह भी विश्वास दिलाया था कि आजाद सेनाके सैनिकों को सड़क कूटने आदि के काममें नहीं लगाया जायगा। ब्रिटिश भारतीय सेनाके साथ आजाद सेनाके सिपाही आवश्यक कार्यों में बराबरी के साथ सम्मिलित हो सकेंगे। यह भी स्वीकार किया गया था कि आजाद सेना के कैम्पों मे उन्हींका पहरा रहेगा। कैम्पों पर तिरंगा झण्डा फहरायेगा और उनको अपना राष्ट्रीय गीत गानेका अधिकार रहेगा। परन्तु दो ही सप्ताह बाद ब्रिगेडियर लाउडरकी प्रतिज्ञायें छिन्न भिन्न हो गयीं। आजाद बैंक पर सरकारी कब्जा हो गया तथा बैंकका ३५ लाख रुपया सरकारी खजाने में सम्मिलित कर लिया गया; और ज्योंही आजाद हिन्द फौजियोंने हथियार डाल दिये त्योंही वे सब

बन्द करके रंगूनके सेन्ट्रल जेलमे बन्द कर दिये गये और उनपर ब्रिटिश सन्तरियोंका पहरा लग गया। उनसे कैदियों की भांति व्यवहार किया जाने लगा और वे ब्रिटिश भारतीय सिपाहियोंके निरीक्षणमे सड़कोंको कुटाई, सफाई और धुलाई आदिमे लगाये गये। लगभग २०० सैनिकों को बिना मुकद्‌मा चलाये विविध सजायें दे दी गयीं और वे इनसीन जेलमें भेज दिये गये।

सिंगापुर आजाद सेना और आजाद सरकार का पार्श्ववर्त्ती मुख्य केन्द्र था। रंगूनसे आजाद सरकार बैंकाक चली गयी और सिंगापुर मे आजाद फौजके मेजर जनरल कियानी पकड़ कर पर्ल हिल जेलमे और २६००० हजार आजाद सैनिक यहां से हटाकर विदादरी कैम्प मे रखे गये। आजाद सेना के आदि संस्थापक श्री राघवन भी पेनाग मे पकड़े गये। रंगून पतन के बाद ही झांसीकी रानी रेजीमेन्ट तोड़ दी गयी थी।

बर्मा के दूसरे स्थानोंमें जो सेना लड़ रही थी। वह भी धीरे २ गिरफ्तार कर ली गयी जिसमें से ढिल्लन, सहगल और शाहनवाज तथा बुरहानुद्दीन आदि पर दिल्लीके लाल किले में मामला चल रहा था। कैप्टेन लक्ष्मी बर्मा के दक्षिणी शान स्टेटके कालावा में बर्मा सरकार की आज्ञा से नजरबन्द हैं। नेताजी सुभाषचन्द्र बोसके सिंगापुर पहुंचनेका विवरण पहले दिया जा चुका है। इस प्रकार उस गौरवमय परिच्छेदका शोकमय अन्त हुआ जो नेता जीने पूर्व एशियामे भारतीय स्वतंत्रताके लिये प्रारम्भ किया था।

—:*:—

आज़ाद सेनाकी कुछ बिखरी बातें

आजाद सेना सिंगापुर से इम्फाल तक २७७५ मील चलकर आयी थी। कभी कभी इस सेना को ऐसे भी लड़ना पड़ा है जब एक भाई एक ओर और दूसरा भाई दूसरी ओर था। कैप्टेन शाहनवाज अपने भाई से लड़े थे। डा० श्यामाप्रसाद मुकर्जी ने कलकत्ते की एक सभामें आजाद फौजके सम्बन्धमें चर्चा करते हुए कहा था कि "पुत्र ब्रिटिश सेना का कैदी बन गया था और पिता जो पीछे रह गया था, आजाद फौजमें शामिल हो गया। मोर्चे पर जब लड़का पिता को समझाने बुझाने के लिये भेजा गया तो पिताने पहले उसको गोली मार दी। फिर अपने गोली मारकर आत्महत्या कर ली। इसी प्रकार एक दूसरे आजाद हिन्द सैनिक ने ब्रिटिश कैम्पमें इसलिये आत्महत्या कर ली कि उसकी माताने उसके लिये ब्रिटिश सरकार

से क्षमा प्रार्थना कर ली थी।" आजाद सेना जब भारतमें प्रवेश कर रही थी उस समय कर्नल शाहवाजने उसको आदेश दिया था कि भारत पहुंचनेपर जो नर-नारीं हमे मिलेंगे उनमें जो हम से बड़ी हैं उन्हें माता और जो हमसे छोटी है उन्हें बहन और बेटी मानना होगा। जो सैनिक इसकी अवज्ञा करेगा वह गोली से उड़ा दिया जायगा। यदि जापानी सैनिक हमारी माताओं को अपमानित करें तो उन्हें पहिले मौखिक चेतावनी दे दी जाय और यदि वे फिर न मानें तो उन्हें भी गोली से उड़ा दिया जाय। आजाद सेना के सिपाही नेताजी के कैसे भक्त थे यह निम्नलिखित एक मुस्लिम सैनिक के बयान से विदित हो जायगा। लखनऊ सेन्ट्रल जेल से कितने ही आजाद सैनिक हाल में ही छूटे हैं। उनमें से एक मुस्लिम सैनिक ने लखनऊ के नेशनल प्रेस आव इण्डिया के प्रतिनिधि से गर्व के साथ कहा 'हमें तनख्वाह की परवाह न थी। नेताजी की फौज का कोई सिपाही चाँदी के टुकड़ों पर नहीं मरता था, उसकी तनख्वाह तो मुल्क की आजादी है। सुभाष बाबू के प्रति आजाद सैनिकों के दिलमे अपार सम्मान की भावना है। उनमें से अनेकोंने कहा है कि कांग्रेस के अनेक नेता अधिक विख्यात हैं किन्तु नेताजी जैसा शानदार कोई नहीं। हा, पण्डित जवाहरलाल नेहरू में नेताजी की बात जरूर दिखाई पड़ती है। उनके अनुसार नेताजी दिखावे से घृणा

करते थे और एक बार इस सैनिक पर बिगड़ पड़े थे, जो सिंगापुर में एक खुली सभा में उनके भाषणके समय उन्हें धूपसे बचाने के लिये उनपर छतरी तानकर खड़ा हो गया था। इन सैनिकों के अनुसार नेताजी को कांग्रेस पर पूरा यकीन था और आजाद् हिन्द् फौज के सभी सैनिकों को कांग्रेस पर अभिमान है। एक पठान सैनिक ने कहा कि काग्रेस तो हिन्दू मुसलमान सबकी है। जङ्ग के पहिले हमलोग अन्धेरे में थे, लेकिन नेताजीने हमारी आंखें खोल दी हैं। इन सैनिकोंमें से किसी को विश्वास नहीं है कि नेताजी मर गये। उनका कहना है कि वे जीवित हैं और परिस्थितियोंवश उनको अज्ञात वास करना पड़ रहा है तथा उचित अवसर पर वे पुनः उनका नेतृत्व करनेके लिये अवश्य प्रकट होंगे।"

बंगाल में जैसोर जिले के भीकरगाछा में आजाद् सेना के सहस्रों सैनिक बन्दी हैं। उनमें से कुछ लोग सरकारी आज्ञा से हाल मे ही छोड़े गये हैं इनमें चन्द्रप्रकाश नामक सैनिक से एक पत्रकार की वार्ता हुई है। चन्द्रप्रकाश वह व्यक्ति है जिन्होंने सुभाष बाबू को जर्मनी से जापान पहुचाया और पुरस्कार स्वरूप नेताजी से दो वस्तुएं पायीं। एक तो हाथकी घड़ी और दूसरा लचकीला कमरबन्द। श्री चन्द्रप्रकाश ने बातचीत के दौरान में बताया कि सुभाष बाबू सैनिकों में अतिशय लोकप्रिय थे। वे सबके साथ बराबरी का व्यवहार

करते थे। प्रत्येककी सुख सुविधापर ध्यान देते थे। वे सैनिकों के साथ वरावर उठते वैठते और उनके साथ ही खाते पीते भी थे। बर्मा, मलाया और सिंगापुर के भारतीयोंने आजाद हिन्द फौज के कोष में पर्याप्त धन दिया था। जापानियों द्वारा प्राप्त युद्ध सामग्रीका मूल्य सुभाष वाबूने नगद चुकाया था। इन सब कारणों से आजाद हिन्द फौजकी महिमा और भी बढ़ गयी थी।

१९४४ को ४ फरवरीको जो स्वतन्त्रता संग्राम आजाद सेनाने प्रारम्भ किया था उसका वर्णन करते हुए श्री चन्द्रप्रकाशने कहा:—जब यह सेना भारतके उत्तर पूर्व द्वारपर पहुंची तो डेढ़ सौ वर्ष पुराना ब्रिटिश साम्राज्य अपनी जड़ों समेत हिलने लगा। सुभाप वावू स्वयं सेना का नेतृत्व कर रहे थे। उन्होंने अपनी देखरेखमे प्रथम श्रेणी के छापामार और दूसरे प्रकार के सैनिक तैयार किये थे। स्वतन्त्रता की सेना ने जव डटकर हमला किया तो उसके सामने ब्रिटिश, अमरीकी, भारतीय और दूसरे भतखउये ठहर नहीं सके। आजाद सेना द्वारा १७ जवरदस्त लड़ाइयां लड़ी गयीं। छोटे मोटे संग्राम तो अनेकों ही हुए किन्तु देश भक्तों के वढ़ाव के सामने उनके शत्रुओंके पैर उखड़ गये और वे लज्जाजनक रीति से पीछे हटे। मनीपुर संग्राममे जो विजय मिली वह तो बहुत ही महत्वपूर्ण थी। इसका कारण यह है कि आजाद फौज जिस परिस्थिति मे लड़ रही थी वह उसके लिये जान बूझकर कठिन वना दी

गयी थी। सुभाष बाबूने अपने हवाई सैनिकों को यह आदेश दिया था कि वे भारतीय घरों व नगरोंपर बमवर्षा न करें। जहां तक सम्भव हो भारतीय सैनिकों पर प्रहार न करें। बंगाल व आसामके नगरोंपर सुभाष बाबूका बिमान बराबर घूमता रहता था। यह प्रान्त उनकी दयापर पूर्ण रूपसे आश्रित था।

इम्फालका घेरा पड़ चुका था और उत्तर पूर्व भारतकी ब्रिटिश छावनी पर फन्दा मजबूतीसे कसा जा रहा था। किन्तु ब्रिटेन जहाँ असफल होता है वहाँ चाँदीकी गोलियोंसे लडाई करता है। आजाद फौज जिस समय इम्फालमें पूरी ताकतसे आक्रमणके लिये तैयार थी, उसी समय आजाद फौजका लेफ्टीनेण्ट सिंह नामक एक विश्वासघातक पूरी योजनाके साथ ब्रिटिशोंके साथ जा मिला। जब वह विश्वासघातक आगे बढ़ रहा था; तब आजाद सेनाके पहरेदारने उसका रास्ता रोका। किन्तु बेईमान सिंहने उसे भरोसा दिया कि वह आजाद फौजकी अगली टुकड़ीसे मिलनेके लिये आगे जा रहा है और उसके साथ जो नक्शा आदि हैं वे आक्रमणके लिये लाभदायक हैं। पर वह विश्वासघातक फिर नहीं लौटा। नेताजीको दूसरे दिन सवेरे यह खबर मिली। उन्होंने आजाद फौजकी स्थितिमें जल्दी जल्दी परिवर्तनकी आज्ञा दी। पर अब बहुत देर हो चुकी थी। विश्वासघातक का काम पूरा हो चुका था। उसने बहुमूल्य रहस्य शत्रुके सामने खोल दिये और ब्रिटिश तथा अमरीकी सेनाने आजाद फौजपर भयंकर

बमवर्षा प्रारम्भ कर दी। इस प्रकार आजाद फौज की जीत हारमें बदल गयी। ऐसी घटनाओंको रोकने के लिये नेताजी ने आज्ञा दी कि कोई भी सैनिक फिर चाहे वह कितने ही ऊंचे पद पर क्यों न हो। आजाद सेनाकी सीमाके आगे न जाय। अन्यथा वह गोलीसे उड़ा दिया जायगा। ऐसी स्थिति में जापानी सेनाके साथ उनका मतभेद प्रारम्भ हुआ। परिणाम यह हुआ कि उनकी यान-वाहन और विमानों की सहायता बन्द हो गयी, और इस प्रकार आजाद सेना पीछे हटनेको विवश हुई।

नीलगंज कैम्प जेल से हालमें ही मुक्त आजाद फौज के पांच उड़िया नजरबन्दोंके जरिये ज्ञात हुआ है कि करीब २ हजार उड़िया बहादुर भी बरमा और मलाया मे आजाद फौजमे सम्मिलित हुए जिनमें से ५०० युद्ध मोर्चे पर मारे गये। सबके सब नेहरू ब्रिगेड प्रथम पैदल बटालियन के अन्तर्गत थे जो इम्फाल मोर्चे पर लड़ा था। सैनिकोंने बताया कि हमारी वर्दिया अधिकारियों ने ले ली हैं और उसके बदले अङ्गरेजी सेना की फटी पुरानी वर्दी पहननेको दी हैं। बहुतसे गुरखा भी आजाद हिन्द फौजमें शामिल थे तथा वे इस समय लाल किले मे पड़े हुए हैं। बहुतों पर मुकदमा चलाया जाने वाला है। मलाया एवं अन्य स्थानों में रहनेवाली गुरखा महिलायें खुशी खुशी आजाद फौज के झांसी की रानी दस्तेमे शामिल हुई थीं। पता चला है कि प्रसिद्ध गुरखा नायक लेफ्टिनेंट रामसिंह सिंगापुर से आजाद हिन्द

रेडियो पर ब्राडकास्ट किया करते थे। आजाद हिन्द फौज के गुरखा अफसरोंमें, जिनपर मुकद्मा चलाया जाने वाला था, कप्तान रामसिंह तथा तुलबीर बहादुर भी हैं। तुलबीर बहादुर नेताजी सुभाषचन्द्र बोसके अङ्ग रक्षक थे।

कोर्ट मार्शल (फौजी अदालत) के सामने बयान देते हुए कर्नल शाहनवाज ने कहा,—"आजाद फौज में शामिल होने का निर्णय करते ही मैंने इसके लिये अपने सर्वस्वके अर्थात् अपने जीवन, अपने घर, अपने परिवार और सम्राट के प्रति वफादार रहने की अपनी परम्परा सभी के बलिदान का फैसला कर डाला। मैंने अपना विरोध करने वाले अपने भाई तक से लड़ने का निश्चय किया और १६४४ मे जो संगर छिड़ा था, उसमें वास्तव में मैं अपने भाई से लड़ा था। वह घायल हो गया था। चिन पहाड़ियों मे लगभग २ मास तक मैं और मेरा भतीजा प्रतिदिन एक दूसरे का विरोध करते रहे। मेरे सामने राजा अथवा मातृ भूमिके प्रति वफादारी का प्रश्न था और मैंने मातृभूमिके प्रति वफादारीका निश्चय किया।" कर्नल शाहवाजके पिता ३० वर्षों तक भारतीय सेनामें काम कर चुके हैं। इस कुटुम्ब के ८० सदस्य इस समय भी भारतीय सेना विभाग के भिन्न-भिन्न पदों पर काम कर रहे हैं।

लेफ्टीनेण्ट चन्द्रशेखर मिश्रने, जो कुछ समय पहले तक आजाद फौजमें होनेके अभियोगमे जबलपुर जेलमें बन्द थे,

आज़ाद सेनाकी कुछ बिखरी बातें

हाल में ही जेल से छूट कर बताया है कि भारत सरकारने आज़ाद सैनिकों को चार श्रेणियोंमें विभक्त किया है:—

श्वेत—इस श्रेणीमें आजाद सेनाके वे कैदी सम्मिलित हैं जिन्होंने जांच करने वाली अदालतको विश्वास दिलाया है कि उस समयकी असाधारण परिस्थितिसे विवश होकर उन्होंने आजाद सेनामें प्रवेश किया था।

धूसर—इसमें आजाद सेनाके वे सैनिक हैं जिन्होंने स्वेच्छा से सेनामें नाम लिखाया था।

कृष्ण—इसमें वे आज़ाद सैनिक हैं जिन्होंने स्वेच्छा से सेनामें नाम लिखाया था और ब्रिटिश सेना से युद्ध भी किया था।

अतिकृष्ण—इसमें वे सैनिक हैं जो खुलकर कहते हैं कि हमने जो कुछ किया वह ठीक किया और स्वतन्त्र होने पर फिर वही करेंगे।

आज़ाद सेना के मामले में गवाही देनेके लिये जापान सरकारके तीन उच्च पदाधिकारी ब्रिटिश सरकारके अनुरोध पर भारत आये थे। इन तीनोंमें प्रथम रेंजोस्वाडा थे जो आजाद हिन्द सरकारके रंगून स्थित हेडकार्टरमें राजदूत थे। दूसरे तेरू यंग याचियों थे जो आजाद हिन्द सरकारमे जापानके कूटनीतिज्ञ दूत रह चुके हैं। और तीसरे सुनिची मतसुमोतो थे जो जापान सरकार में वैदेशिक विभागके और पूर्व एशियाई काम काजके उप सचिव थे। एक प्रेस प्रतिनिधिसे बातचीत करते हुए मिस्टर

याचिया ने स्वीकार किया कि आजाद सरकार जापान द्वारा बराबरी की सरकार मानी गई थी और इस प्रकार इन के प्रति जापानी वैसा ही व्यवहार करते थे जैसा कि जर्मनी और इटली आदि स्वतन्त्र देशोंकी सरकारोंके साथ करते थे।

जापानी आत्म समर्पण के बाद बैंकाकमें लगभग दो हजार आजाद सैनिक गिरफ्तार किये गये। इसमें उन दोनों डिवीजनोंके बचे हुए सैनिक थे जिन्होंने बर्मामें और वहा से पीछे हटकर स्याम आये थे। इनके पीछे हटनेकी चर्चा करते हुए ब्रिटिश सेना के नायकोंने कहा है कि इन सैनिकोंने उत्तरदायित्वकी अनुकरणीय भावना दिखाई है। जापानियोंने यद्यपि उन्हें निराधार छोड़ दिया था और सप्लाई आदिका सर्वथा अभाव था। फिर भी प्रशंसनीय रीतिसे व्यवस्थापूर्वक पीछे हटे। यहीं पर आजाद सरकारके पाच सदस्य गिरफ्तार किये गये थे। आजाद सेनाके चीफ आफ स्टाफ मेजर जनरल जे० के० भोंसले भी यहां पकड़े गये थे। आजाद सेनाके बर्मासे पीछे हटने पर आजाद सरकारका हेडकार्टर बैंकाक लाया गया था।

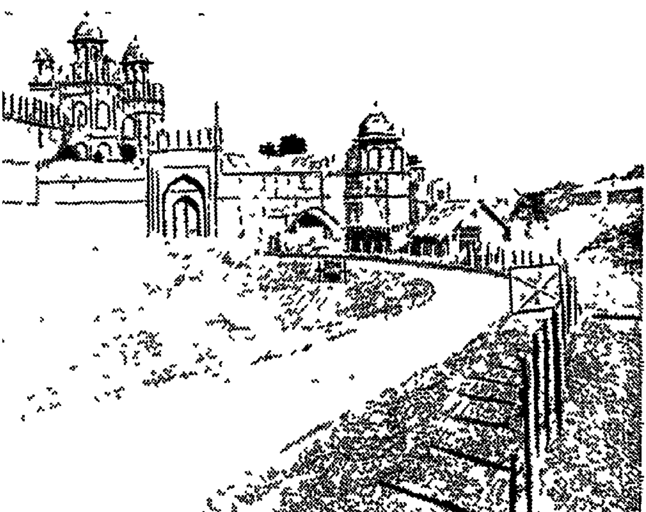
आजाद सेनाके बहादुर ब्रिगेड का नेतृत्व कप्तान बुरहानुद्दीनके हाथों में था। आप चित्रालके मेहतरके भाई है। यह ब्रिगेड युद्धकालमें तोड़ फोड़के काममें लगा रहता था और इसी निमित्त शाही सेनाके पीछे और भारतीय सीमाके अन्दर तक इसके सैनिक घुस आते थे। कभी-कभी

सामने की लडाई में भी यह लोग भेजे जाते थे। रंगून के पतनके समय इस ब्रिगेडके सहायक अफसर राजाराम सिन्देने जो अभी हालमें पूनाके निकटवर्ती दीघो कैम्पसे छोड़े गये थे, एक प्रेस प्रतिनिधिको बताया था कि इम्फाल मोर्चे पर आजाद सेना युद्ध सामग्री, अस्त्र-शस्त्र और खाद्य पदार्थों की सप्लाईके अभावमे पीछे हटी। श्रीयुत सिन्दे रंगूनपर ब्रिटिश सेना के अधिकारके समय जो ७००० आजाद सैनिक रह गये थे उनमे सम्मिलित थे। आप इसी वर्षकी मईमें पकड़े गये और रंगूनसे कलकत्तेके समीप झीकरगाछा कैम्पमें रक्खे गये थे। आपने बताया कि इस कैम्पमें हमारे रुपये पैसे और कपड़े ले लिये गये थे। आपने नेताजीके सम्बन्धमें बताया कि वे मोर्चे पर उपस्थित रह कर सेनाओंको आदेश देते थे। वे सैनिक वेशमें पिस्तौल और तलवारसे सुसज्जित रहते थे। वे बहुधा अपना राशन अन्य अफसरोंकी भाँति अपनी पीठ पर लाद कर लाते थे। यह खाद्य १० दिनों तक चलता था। नेताजी अपने मन्त्रिमण्डलके सदस्योंके साथ यात्रा करते थे। सिन्दे आजाद सेनामें भरती होनेके पहले ६ वर्ष तक भारतीय सेनामें काम कर चुके हैं। उन्होंने कहा कि आजाद फौजमें हम लोगोंको ६ मास तक जंगली युद्ध, टामी बन्दूकके व्यापार तथा मशीनगन आदि चलनेकी शिक्षा दी गई थी। और फिर मोर्चे पर भेजा गया था। यह हथियार वही थे जो अंगरेज सेना जापानियोंसे परास्त होते समय वहीं छोड़ कर भाग आयी थी।

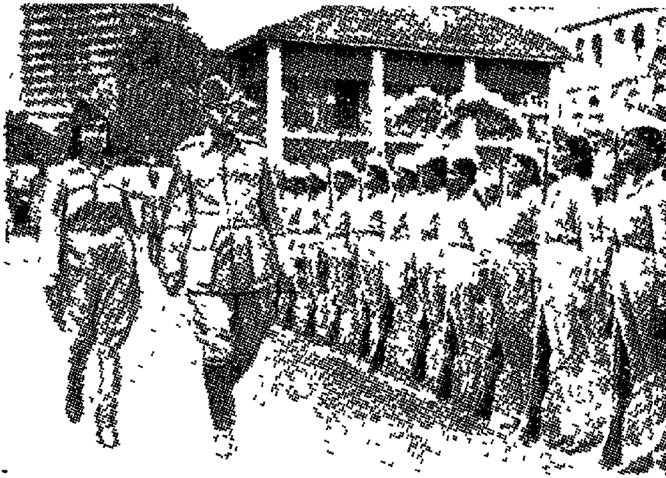
आजाद हिन्द फौजके अफसर जिनपर मुकद्दमा चल रहा है या चलनेकी सम्भावना है, दिल्लीके लाल किलेमे मौजूद हैं। कर्नल लोकनाथन, कर्नल एन०एस० गिल, कर्नल भोंसले, मेजर एन०एस० भगत, मेजर रियाज, विशन सिंह, कैप्टन गुरुमुख सिंह; कैप्टन सुन्दरम, कैप्टन अब्राहम, कैप्टन कयूम, कैप्टेन जहांगीर, कैप्टन बहरानुद्दीन, कैप्टन अब्दुल रशीद, कैप्टन अजीज अहमद, कैप्टन आर० के० अर्शद, कैप्टेन ईशान कादिर, कैप्टन मंगल सिंह, कैप्टन हबीबुर रहमान, सेकण्ड लैफ्टनेन्ट लिमू सिंह, काकर सिंह केहर सिंह, ब्रह्मदेव पाठक, सोहनसिंह, एम० एन० चोपड़ा; जी० एस० फागवन, पी० डी० शौढ़ी, आत्मा सिंह, माल सिंह, कर्तार सिंह परदेशी, हवलदार मेला सिंह हवलदार मेजर ओंकार सिंह, हवलदार होवियार सिंह (१७ वीं डोगरा रेजीमेण्ट) जमादार बी० जी० गोडा (मैसूर पैदल सेना) नायक सुलतान खान, कनवल सिंह, जमाजार केसरीचन्द्र शर्मा, दरपू सिंह, हवलदार बहादुर गुरखा, निक्काराम, शिवचरण सिंह, डोगरा, जमादार उत्तम सिंह बंगाल, जमादार फतेहखान; सूबेदार सिंगरा सिंह कुछ नागरिक भी मुकद्दमेके लिये रोके गये हैं। आजाद हिन्द सैनिकोंमेंसे कर्नल भोंसले महाराजा बड़ौदाके सम्बन्धी हैं। कैप्टन बरहानुद्दीन चित्रालके शासकके भाई हैं। काकर सिंह और केहर सिंह सुभास बसुके अङ्गरक्षक थे। इनमें १० लालकिलेमे है। दूसरे लोग अन्य स्थानों पर कैम्पोंमे है। उनके साथ २०० आजाद हिन्द सैनिक लालकिलेमें कैद हैं।



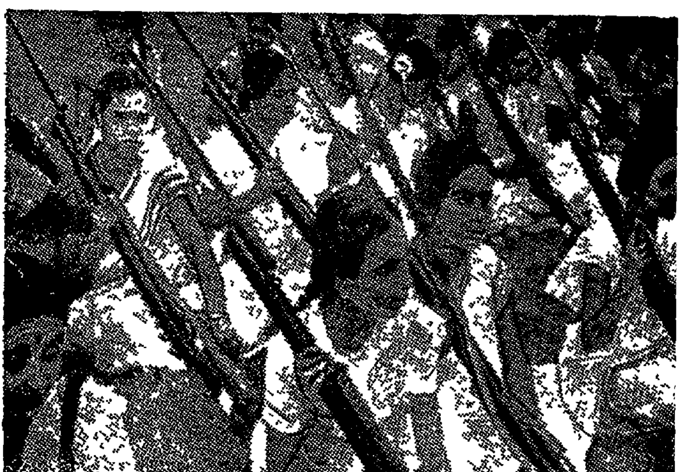
प्रेम पूजारी देशभक्त राजा महेन्द्रप्रताप



दिल्ली का ऐतिहासिक लाल कीला



नेताजी और कैप्टेन डा० लक्ष्मी द्वारा झांसीकी रानी रेजिमेण्टकी निरीक्षण



झांसी की रानी रेजीमेण्ट की सदस्याएं

नेताजी कहाँ हैं ?

आजाद रेडियो सिंगापुरसे सुभाष बाबूने अपना जो भाषण ब्राडकास्ट किया था वह उनका अन्तिम ब्राडकास्ट कहा जाता है। इस भाषण मे सुभाष वाबूने, दक्षिण पूर्व एशियामें रहने वाले भारतीयोंके त्याग और बलिदान की बड़ी प्रशंसा की और कहा,—क्षणिक असफलताओं से हमें निराश नहीं होना चाहिये। सुभाष बाबूके निकटस्थ मित्र भी इसके बाद केवल यही जानते हैं कि वे महत्वपूर्ण परामर्शके लिये बैंकाक होते हुए टोकियो गये हैं।

टोकियो न्यूज एजेन्सी ने २३ अगस्तको प्रचार किया कि सुभाषचन्द्र बोस १८ अगस्त को हवाई जहाज की दुर्घटना से बुरी तरह घायल होकर एक अस्पताल मे उसी रात को इस संसार से चल बसे। इस संवाद को भारत वर्ष मे रायटरने २६ अगस्त

की दोपहरमे प्रचारित किया। जिससे देशभरमें विशेषतः कलकत्ते में भारी शोक छा गया। सर्वत्र बाजार बन्द हो गये। कलकत्ता कार्पोरेशनकी सभा उनके सम्मान मे स्थगित रही।

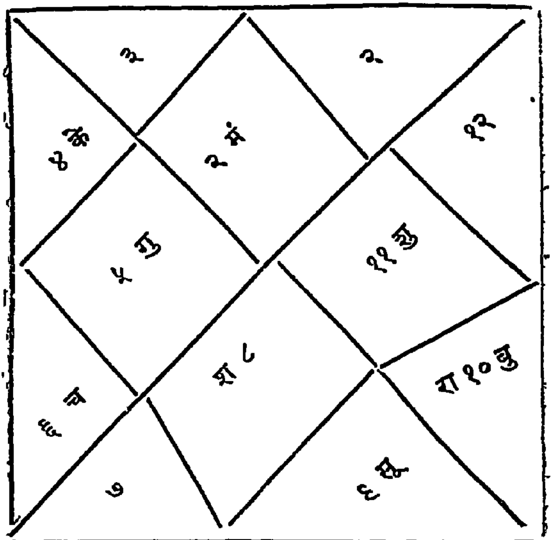
किन्तु १६४२ की फरवरी में भी रायटर सुभाष बाबू के सम्बन्धमें इसी आशयका मिथ्या समाचार विश्वभरमें फैलाने का अपराधी हो चुका था,—अत. इस सम्वाद पर यद्यपि पूर्ण रूप से सबका विश्वास नहीं जमा; फिर भी सम्पूर्ण देश में गम्भीर शोक छा गया। महात्मा गांधी तथा सरदार पटेल आदि नेताओं ने सहानुभूति सूचक तार श्री बोस के कुटुम्बियों को भेजे, पण्डित जवाहरलालजी नेहरू तो सुभाष बाबू की मृत्यु सुनकर एक सभा में भाषण देते हुए रो पड़े; किन्तु बाद को अमरीकी यूनाइटेड प्रेस के सम्वाददाता ने इसका खण्डन करते हुए कहा कि सुभाष बाबू इन्दु चीन में देखे गये हैं। तबसे अब तक यह प्रश्न विवादास्पद बना हुआ है। गत २२ से २४ सितम्बर तक बम्बईमें आल इण्डिया कांग्रेस कमेटीका जो अधिवेशन हुआ था; उसमें जिन देशभक्तों की मृत्यु पर शोक प्रकट किया गया था; उनमें सुभाष बाबू का नाम नहीं था। इसपर कुछ प्रतिनिधियों ने बड़ी आपत्ति की। उत्तर में आचार्य कृपलानी ने कहा कि सुभाष बाबू की मृत्यु पर वे ही शोक प्रकट कर सकते हैं जो उन्हें

मृत समझते हैं। हम तो यह मानते ही नहीं कि वे मरे हैं। सुभाष बाबू के बड़े भ्राता श्री शरत्चन्द्र बोस ने भी एक प्रेस-भेंट में यह स्वीकार किया कि सुभाष बाबू के जीवित होने में उनका विश्वास है। पं० जवाहरल नेहरू भी इसी आशय का मत एकाधिक बार प्रकट कर चुके हैं। परन्तु झाँसी को रानी रेजीमेन्ट की अध्यक्षा कैप्टेन डा० लक्ष्मी का मत है कि सुभाष बाबू अब इस लोकमें नहीं हैं। सिन्ध के अनेको व्यापारियोंने भी जिनमे अधिकाँश हांगकांग से आये हैं, इसी मतका समर्थन किया है। कहा जा चुका है कि जापानके आत्मसमर्पण के समय सुभाष बाबू सिंगापुर मे थे। किन्तु यह सम्बाद पाते ही वे विमान द्वारा बैंकाक चले गये और वहा से टोकियो जा रहे थे कि विमान आग लगकर ईंट के पजावा में गिर पड़ा। सुभाष बाबू के सिर में गहरी चोट लगी और उनके कपड़ों में आग लग गयी। कर्नल अब्दुर रहमान नामक उनके साथी का उनके बचाने की चेष्टा में हाथ और मुंह बुरी तरह झुलस गया। दुर्घटना के ६ घण्टे बाद सुभाष बाबू ने इस संसार का त्याग कर दिया और बर्मा के थैकोकू स्थान मे उनका दाह संस्कार किया गया। कर्नल रहमान कोर्ट मार्शल के सामने गवाही देनेके लिये दिल्ली लाये गये थे। यहाँ उन्होंने सुभाष बाबूका ऊपर लिखी परिस्थिति मे स्वर्गवास होना स्वीकार किया

था। वे सुभाष बाबूकी हाथकी घड़ी अपने साथ लाये थे, जिसे उन्होंने दिल्लीमें नेहरूजी के सुपुर्द कर दिया। नेहरूजीने कलकत्ता पधारनेपर गत ५ दिसम्बर को श्री शरत्‌चन्द्र बोसको यह घड़ी दे दी है। संवाद है कि उनकी शरीर की भस्म को भारत लाने का प्रयत्न हो रहा था। पर यह प्रश्न अन्तिम रूपसे सुलझा नहीं।

समाचार पत्रोंमें अभी तक इस सम्बन्ध में उभय प्रकार के सम्वाद प्रकाशित होते रहते हैं। इधर कई ज्योतिषियोंने सुभाष बाबू की जन्म पत्री से यह सिद्ध किया है कि वे अभी जीवित हैं और फिर भारत वापस लौटेंगे। उक्त लेखोंका सार मर्म यह है:—

श्री शम्भुसेन गुप्त लिखते हैं, सुभाष बाबू से हमने एक बार उनकी जन्म तिथि और समय के लिये याचना की थी। सन् १९४० के जून की बात है। कलकत्ते में डलहौजी स्क्वायर में अन्धकूप स्मृति (ब्लैक होल मनूमेन्ट) को हटाने के लिये आन्दोलन चल रहा था। उन्होंने हम से कहा—शनिवार २३ जनवरी १८९७ मे १२ बजकर १३ मिनट पर मेरा जन्म हुआ था। उस समय का राशि चक्र हम नीचे दे रहे हैं।



उन्होंने मुझसे कहा—"मेरी आयु कबतक है देखियेगा" और कुछ दिन वाद उनकी जन्मकुण्डली वनाकर मैं उनसे मिलने गया। मैंने उनसे कहा, आपने मुझे अपना जो जन्म समय दिया है उसमें यदि दो मिनट और जोड़ दिये जायं अर्थात् १२ बजकर १५ मिनट कर दिया जाय तो आपके अतीतकी घटनाओं के साथ मिल जाता है। आपका जीवन दीर्घ है। विश्व कवि रवि वावू की जन्मकुण्डली मे जिस प्रकार दीर्घायु पायी जाती है, उसी भांति आपकी भी है। मैंने ७२ वर्ष तक आपकी आयु पायी है। जन्म कुण्डली में शुक्र ग्रह के साथ ऐसे सुयोग

से बैठा है कि ७२ साल के पहिले आपकी मृत्यु कभी नहीं हो सकती। आपके वर्तमान के विषयपर एक भविष्यवाणी कर रहा हूं;—"शीघ्र ही आपको जेल जाना पड़ेगा और १६४१ के जनवरी मासमें आपको समुद्र यात्रा या सुदूर भ्रमण करना ही होगा।" उन्होंने मुझसे पूछा कि यदि जेल हुई तो सुदूर यात्रा या समुद्र भ्रमण किस प्रकार सम्भव होगा? मैंने कहा,—उस समय इस प्रकारकी कोई न कोई घटना अवश्य होगी, जिससे आपको समुद्र यात्रा या सुदूर भ्रमण करना ही पड़ेगा।

इसके बाद जुलाई १६४० में सुभाष बाबू गिरफ्तार हो गये। जेलमें अनशन करने के फलस्वरूप दिसम्बर मासमें उन्हें उनके एलगिन रोड वाले मकानमें नजरबन्द किया गया। १६४१ की २६ जनवरी को अचानक कलकत्तासे वे फरार हो गये।

सुभाष बाबू कहां और किस प्रकार हैं, ऐसा प्रश्न मुझसे सदा ही पूछा जाता है। उनकी जन्मकुण्डली से फल इस प्रकार पाया जाता है। सन् १६४५ के २७ अगस्त के पहले की रात में वे जहाँ थे वहाँसे ६७० मील दूरके एक पर्वतीय गुप्त स्थानमें चले गये हैं। उनके साथ ५ और सहकर्मी भी हैं। कितने ही प्रयत्न करने पर भी १६ दिसम्बरके पूर्व उनका पता नहीं लगेगा। इसके बाद ही उनके गिरफ्तार होनेकी सम्भावना है। १६४६ के जनवरी मास में उनके भारत आनेकी सम्भावना है। उस समय अगर वह नहीं लौटे तो १६४७ के २३ मार्च से अप्रैल के अन्त तक अवश्य

लौटेंगे। १९४७ में भारत पूर्ण स्वतन्त्र हो जायगा। सुभाष ही स्वतन्त्र भारत के निर्वाचित सभापति होंगे। बंगाल के अन्य ज्योतिषियो के अतिरिक्त प्रयाग के सुप्रसिद्ध ज्योतिषाचार्य पं० इन्द्रनारायण द्विवेदी ने भी सुभाष बाबू के जन्म पत्र के आधार पर उन्हें दीर्घजीवी बताया है। इधर प्रबल अफवाह है कि सुभाष बाबू इन दिनों रूस में विद्यमान हैं। जो भी हो, सुभाष बाबू अपने अनुपम कार्यों के कारण अखिल भारत में आज देवता की भांति पूजित हैं। २४ अप्रैल का रंगून से सिंगापुर हटते समय सैनिको और सेनायकों के नाम आपका आदेश इस प्रकार था:—

आजाद हिन्द फौजके बहादुर अफसरों और सिपाहियों !

भरे हुए हृदय से मैं आजाद सेना के उन नायकों और सैनिकों की याद करता हूं जो आजादी के लिये शत्रुओं से अलग-अलग मोर्चोंपर लोहा ले चुके हैं और अभी तक लड़ रहे हैं तथा इम्फाल और बर्मा के मोर्चों पर काम आ चुके हैं,— उन सबकी याद करता हूं। पर यह तो स्वाधीनताके युद्धकी पहली झपट है। मैं जन्मसे ही आशावादी हूं और पराजय स्वीकार करने के लिये तैयार नहीं। आराकान के जंगलों और आसाम के तैल क्षेत्रों में आपने जो वीरता प्रदर्शित की है, वह स्वाधीनता संग्रामके इतिहासमे अमिट रहेगी।

आज़ाद हिन्द फौज

इनकलाब जिन्दाबाद

आज़ाद हिन्द जिन्दाबाद

जय-हिन्द

सुभाषचन्द्र बोस

२४ अप्रैल १९४५

इस प्रकरण को समाप्त करने के पूर्व हम अपने पाठकों को सरदार बल्लभ भाई पटेल के उन शब्दों की याद दिलाना चाहते हैं जो उन्होंने गत ८ दिसम्बर को कलकत्ते के देशप्रिय पार्क की सभा में नेताजी सुभाषचन्द्र बोस को श्रद्धांजलि देते हुए कहे थे। सरदार पटेल ने कहा:—

"नेताजी कुछ लोगोंकी दृष्टिमें देश-द्रोही हो सकते हैं, पर हम सबके लिये तो वे परम देशभक्त हैं। हम उनकी वीरता की पूजा करते हैं,—हम उनके बलिदानकी पूजा करते हैं। हम उनकी हिम्मत की पूजा करते हैं।"

★★
★

उपसंहार

आजाद सेना के मामले पर भाषण देते हुए पण्डित जवाहरलालजी नेहरू ने दिल्ली में कहा था कि यह मामला केवल कानूनी उलझनका ही नहीं है। यह तो उससे कहीं बड़ी बातों से सम्बन्धित है। इसने सम्पूर्ण राष्ट्र की भावना को स्पर्श किया है। आजाद सेना का लक्ष्य भारत की स्वतन्त्रता रहा है। और इस दिशामें उसने भारतीय भावनाओं और आकांक्षाओं का ठीक-ठीक प्रतिनिधित्व किया है। इसके अति-रिक्त देशकी सभी संस्थायें जैसे लीग, महासभा और अकाली दल आदि कांग्रेस के साथ इस बात पर सहमत हैं कि आजाद सेना के अफसर और सिपाही छोड़ दिये जायं। भारतीय जनता को ही इस मामले की अन्तिम अदालत और इस मुकद्दमें का

पंच होना चाहिये। नेहरूजी की यह वाणी भारत के कोने 'कोने में गूंज रही है और हिमालय से कन्या कुमारी तथा अटक से कटक तक आजाद सेना की मुक्ति की मांग प्रतिध्वनित की जा रही है।

लाहौर में तो इसीलिये दिवाली तक नहीं मनाई गई। रावल-पिण्डी, कैम्पवेलपुर, लखनऊ, मदुरा, कलकत्ता और बम्बई आदि में बड़े उत्साह से आजाद सेना दिवस मनाये गये। मदुरा में तो नवम्बरकी सात तारीख को गोली भी चली। लखनऊ में हिन्दू मुसलमान विद्यार्थियों पर लाठी वर्षा की गई। भिन्न भिन्न स्थानों में कितने ही व्यक्ति गिरफ्तार किये गये। सबसे बडी घटना कलकत्ता की है। यहां २१ नवम्बर को आजाद सेना दिवस के उपलक्ष में छात्रोंने बड़ा भारी जलूस निकाला था। यह जलूस जब वेलिङ्गटन स्क्वायर से धर्मतल्ला पहुंचा तो पुलिस ने इसको आगे बढ़नेसे रोक दिया। जब छात्रों ने आगे बढ़ने के लिये अधीरता दिखाई तो उन पर गोली चलाई गई। घटनास्थल पर पहले दिन तीन व्यक्ति मारे गये और लगभग १०० घायल हुए। फिर भी छात्र आगे बढ़ने की माग पर डटे रहे। घटनास्थल पर बङ्गाल के गवर्नर मि० केसी भी पहुंचे। श्री शरतचन्द्र बोस के अतिरिक्त बङ्गाल के प्रायः सभी नेता वहां पहले से ही उपस्थित थे। सबने विद्यार्थियों को जलूस भंग करनेकी सलाह दी पर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा। जलूस

रात भर वहीं बैठा रहा। दूसरे दिन समस्त कलकत्ते में जबरदस्त हड़ताल हुई। हिन्दू मुसलमान सबकी दूकानें बन्द रहीं। शहर भरमें उत्तेजना का जोर था। इस दिन कलकत्ते का दृश्य अभूतपूर्व था। कलकत्ते के इतिहास में यह पहली बात थी कि पुलिस पहरे से हटा ली गई थी। ट्राम, बस, रिक्सा और घोड़ा गाड़ी आदि का चलना बन्द था। यहां तक कि साइकिल भी नहीं निकलती दीखती थी। दूसरे दिन कई स्थनोंमे फिर गोलिया चलीं और कितने ही मारे गये। पुलिसपर भी इतस्ततः पत्थर फेंके गये। बहुत सी सैनिक लारिया जलाई गईं। परतु अन्त में छात्रों की विजय हुई और जिस रास्तेसे पुलिस इसे नहीं जाने देना चाहती थी उसी रास्तेसे जलूस दिल्ली चलो और आजाद सेनाको छोड दो की प्रचण्ड ध्वनि के साथ विजयी बनकर निकला। इस दुर्घटनामें ४० से अधिक व्यक्ति मरे और ५०० से अधिक घायल हुये। कलकत्ते की इस घटना की देश भरमें गहरी प्रतिक्रिया हुई। जगह जगह हडतालें हुईं और बम्बईमें तो छात्रों पर गोली भी चलाई गई।

इस प्रकार स्पष्ट है कि आजाद सेनाके प्रति प्रत्येक भारतीयके हृदय मे गम्भीर सहानुभूति है। आजाद सेनाके जो सैनिक जेलों से छूटते हैं जनता उनका जलूस निकालती है। उनको पुष्प मालायें अर्पित करती है और उनके निवास तथा आहारका प्रबन्ध करती है। आजाद सेनाकी सहायताके लिये कांग्रेस की

कार्य समितिने सरदार पटेल के नेतृत्व में एक समिति बनाई है। ऐंग्लो इण्डियन पत्रोंने आजाद सेनाको देशद्रोही बताया है। यू० पी० के गवर्नर सर मारिस हैलेटने भी इन सैनिकों पर इसी प्रकारका आक्षेप किया था। यू० पी० पुलिसको इन मुक्त सैनिकों पर निगाह रखने तकका आदेश दिया गया है। इससे भारतीय जनता घोर असन्तुष्ट और क्षुब्ध हुई है। कहनेका अभिप्राय यह है कि अपने इन बहादुर भाइयोंके विरुद्ध कुछ भी सुननेके लिये वह तैयार नहीं है, क्यों यह अब सूर्य्यके प्रकाश की तरह स्पष्ट हो चुका है कि इस सेनाका उद्देश्य भारतको स्वतंन्त्र करनेका था। जापानियोंकी सहायता करना इसके ध्यानमें भी नहीं था। भारत सरकारने गत ३० नवम्बर को प्रकाशित एक विज्ञप्ति के द्वारा इसकी वर्त्तमान स्थिति पर जो प्रकाश डाला है, उसका सार नीचे की पंक्तियोंमें दिया जाता है:—

सुदूरपूर्वके युद्ध में ६० (साठ) सहस्र भारतीय सैनिक जापान के कैदी बने थे। शत्रु द्वारा विविध भांति के कष्ट दिये जाने पर भी इनमे ४० (चालीस) हजार राजभक्त बने रहे। शेष २० (बीस) हजार आजाद फौज में भर्ती हुए; जिनमें ६००० (६ हजार) अभी तक भारत नहीं पहुंचे। १००० (एक हजार) का पता नहीं लगा। शेष १४००० (चौदह हजार) में २५०० तो भारतीय सेना में पुनः अपने पूर्वके पदों पर लिये जा रहे हैं। ११५०० में ६ (छै)

हजार ऐसे हैं जो शत्रु के प्रचार कार्य और वहां की परिस्थिति से विवश होकर आजाद सेना में गये थे। इनको जापान द्वारा युद्ध बन्दी बनाये गये अन्य सैनिकों की भाँति अबतक पूरा वेतन दिया जा रहा है, और अब उन्हें ४२ दिनका वेतन और देकर बिदा किया गया है जिससे वे समाजमें अपना अपना स्थान बना सकें। बाकी बचे ५५०० मे १७०० की जांच-पड़ताल अभी प्रारम्भिक अवस्था में है। शेष ३८०० ऐसे हैं जो शत्रु को भारत आक्रमण में सहायता देना चाहते थे। ऐसे सैनिक सेना से निकाल दिये जायेंगे और उनको वेतन नहीं मिलेगा। हा, लगभग ५० सैनिक, इनकी संख्या घटकर २० भी रह सकती है, ऐसे हैं जिन पर क्रूरता, हत्या आदि के गम्भीर अभियोग हैं। केवल इन्हीं पर मामला चलेगा; परन्तु इनमें भी सबको अपने बचाव की पूरी सुविधा दी जायगी। सरकार बदले की भावनासे कोई काम नहीं करना चाहती।

जापानी साक्षियों के विचार

लाल किलेमें कोर्ट मार्शल के सामने आजाद फौजके सम्बन्ध में गवाही देते हुए जापानी वैदेशिक विभागके भूतपूर्व उपाध्यक्ष मि० रेंजू स्वाडाने बताया कि मि० हचिया आजाद हिन्द सरकारमें जापान के प्रतिनिधि बनाकर भेजे गये थे। जापान के सरकारी गजट मे यह घोषणा की गयी थी कि मि० हचिया

आजाद हिन्द सरकार में जापानका प्रतिनिधित्व करेंगे। मि० हचिया रंगून पहुंचकर आजाद सरकार के वैदेशिक विभाग में कर्नल चटर्जी और श्री एस० ए० अय्यर से मिले। परन्तु उनके पास राजचिह्न नहीं थे। अतः नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने उनसे मिलना स्वीकार नहीं किया। इस पर मि० हचिया ने टोकियो को सूचित किया—जहां से उनको दूत के राज चिह्न भेजे गये। इनपर जापान-सम्राट् के हस्ताक्षर थे।" इसी कोर्ट मे मि० स्वाडा के बाद मि० हचिया और वर्मा स्थित जापानी सेना के प्रमुख केन्द्रके सर्वाधिकारी मि० तादाशी कटाकुराकी भी गवाही हुई। मि० हचियाने स्वीकार किया कि जापान सरकार के दूत होकर वे रंगून आये और कर्नल चटर्जी तथा मि० अय्यर से मिले थे। राजचिह्न न होनेसे नेताजी से वे मिलनेमें असमर्थ रहे और राजचिह्न के लिये टोकियो तार देना पड़ा। टोकियो से उत्तर मिला कि राजचिह्न भेजे जा रहे हैं। मि० कटाकुरा ने कहा कि जापानी सेनाको दक्षिण पूर्वी कमान और आजाद हिन्द सरकारके बीच यह समझौता हो गया था कि जापानी सेना भारतके जितने क्षेत्रपर अधिकार करेगी,—उतना सब स्थान आजाद हिन्द सरकार को सौंप दिया जायगा और उस पर आजाद हिन्द सरकार ही शासन करेगी। भारत प्रवेश के पूर्व उभय पक्षसे इस सम्बन्धमें साफ साफ घोषणा भी की गयी थी। जापान की घोषणा थी कि हम ब्रिटेन से लड़ेंगे, भारतीयों से

नहीं। जीत में हमें जो भी धन-सम्पत्ति या भूमि मिलेगी, हम वह सब आजाद हिन्द सरकार को देंगे।" नेताजीने घोषित किया था कि,—"हमलोग हिन्दुस्तान की आजादी के लिये लड़ रहे हैं। जापानियों द्वारा अधिकृत सम्पूर्ण इलाका भारतीयों को दे दिया जायगा।" जनरल कटाकुरा ने अपनी गवाही में यह भी खलासा किया कि जापानने आजाद सेना से माल ढ़लाने, सड़के कूटने और अन्य प्रकार के मोटे काम कभी नहीं लिये आजाद सेना अपने ही सेनापति के नेतृत्व मे लड़ती थी। जापानी सेना और आजाद सेनामें बराबरी का दर्जा था। इसी फौजी अदालत मे जापानी वैदेशिक विभाग के भूतपूर्व अफसर मि० ओहता और मि० मात्सुमोता की भी गवाही हुई। मि० ओहता ने स्वीकार किया कि १९४३ के २१ अक्तूबर को आजाद हिन्द सरकार की स्थापना घोषित की गयी और २३ अक्तूबरको जापानी सरकार ने इसे स्वीकार करते हुए घोषणा की कि श्री सुभाषचन्द्र बोसके नेतृत्व मे स्वाधीन भारत की प्राथमिक सरकार कायम हुई है। जापान सरकार को विश्वास है कि यह एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक कदम है जो भारतीयों से अपने देश की स्वाधीन बनने की चिर प्रतीक्षित आकाक्षा की ओर उठाया गया है। अतः जापान सरकार इसे स्वीकार करती है और इसे अपने उद्देश्य की पूर्त्ति में सब प्रकार की सहायता प्रदान करेगी। ६ नवम्बर को टोकियो में जो वृहत्तर ईस्ट एशिया के देशों का

सम्मेलन हुआ था। उसमें भाषण देते हुए जापान के तत्कालीन प्रधान और समर सचिव जनरल तोजो ने कहा कि आजाद हिन्द सरकार बन चुकी है। भारतीय देशभक्त इस सरकारके अधीन अपने महान् लक्ष्य को पूरा करना चाहते हैं। जापान सरकार इन्हें सब प्रकार की सहायता देना स्वीकार कर चुकी है। वह अपनी सत्यता के प्रमाण में शीघ्र ही अन्डमन और निकोबार टापू आजाद हिन्द सरकार को लौटा देना चाहती है। आपने फिर कहा कि जापान स्वतन्त्रता के युद्धमे भारत को सब प्रकार का सहयोग देने के लिये कटिबद्ध है। जनरल मत्सुमोता ने कहा कि आजाद हिन्द सरकार जर्मनी, इटली, मंचुको, कोरिया, नानकिंग, थाईलैंड और फिलिपाइन आदि द्वारा स्वीकृत थी। सुभाष बाबू इसके प्रधान थे। वे जापान सरकार की व्यवस्था से जर्मनी से टोकियो आये थे। जापान सरकार का भारतके सम्बन्धमें युद्ध उद्देश भारत को स्वतन्त्र करना था।

स्फुट बातें

आजाद हिन्द सरकार तथा बैंकके संबंधमे पिछले पृष्ठोंमें कुछ प्रकाश डाला जा चुका है। बैंकके श्रीदीनानाथ नामक डाइरेक्टरने फौजी अदालत के समक्ष गवाही देते हुए बैंक तथा आजाद हिन्द सरकार के सम्बन्धमें कुछ और भी बातें बतलाई हैं जिनसे पता चलता है कि बैंक का मुख्य कार्यालय रंगून के ६४ पार्क स्ट्रीट में था। यह बर्मा में प्रचलित रजिस्ट्री कानून के अनुसार रजि-

स्टर्ड किया गया था। आजाद् हिन्द् सरकार के अर्थ विभाग और नेताजी फण्ड के रुपये इसमे रखे जाते थे। बर्मा से १५ (पन्द्रह) करोड और मलाया से ५ (पाच) करोड़ रुपये संग्रह किये गये थे। सरकार के अतिरिक्त जनता भी इसके द्वारा अपना काम करती थी। बैंक १९४४ के अप्रैल से १९४५ के मई मास के मध्य तक चलता रहा। रंगून पर अधिकार करने के पश्चात् ब्रिटिशों ने इसे बन्द् कर दिया। उस समय बैंक में आजाद् सरकार के ३५ (पैंतीस) लाख रुपये संचित थे। बैंक के शेयर होल्डर भी थे जिनके ५० लाख बैंक मे थे। ब्रिटिश अधिकार में आने के पहले डाइरेक्टर प्रतिमास बैंक की स्थिति पर विचार करते थे।

आजाद् सरकार के सम्बन्ध में श्री दीनानाथने कहा कि रंगून के समीप जियाग्वाड़ी इस्टेट में आजाद् हिन्द् सरकार का हेड क्वार्टर था। यह पूरी भारतीय वस्ती है जिसकी जनसंख्या १५००० हजार है। यह स्थान किसी भारतीय का ही है और इसके मैनेजर श्री परमानन्दने इसे आजाद् सरकार को दिया था। इस ५० मील विस्तृत इलाके में आजाद् हिन्द् सरकार का पूरा अधिकार था। इस पर आजाद् हिन्द् सेना का पहरा था। यहां जापानी और वर्मा सरकार की कुछ भी नहीं चलती थी। आजाद् सरकार बनने के पहले जापानी कितने ही भारतीयों को ब्रिटिश गुप्तचर होनेके सन्देह मे कठोर

दण्ड दे चुके थे। बर्मी लुटेरे भी कितने ही भारतीयों को लूट और मार चुके थे। आजाद सरकार के बनते ही भारतीय नागरिकों के कष्ट मिट गये। इस क्षेत्र में एक बड़ी चीनी की मिल और सूत, कम्बल और हेशियन बनाने के कई कारखाने थे।

आजाद सरकार के प्रकाशन और प्रचार विभाग के अध्यक्ष श्री एस० ए० अय्यर की गवाही से ज्ञात हुआ कि आजाद सरकार की ओर से १६४३ के बंगाल दुर्भिक्ष के समय श्री सुभाष बाबू ने १ लाख टन चावल भेजने का आफर दिया था। आजाद सरकार स्वाधीन बनाये गये क्षेत्रोंमें शासन करती थी। वहां जापानी बैंके कारबार नहीं कर पाती थीं। केवल आजाद बैंक ही वहाँ काम करती थी। आजाद सेना में भर्ती स्वेच्छा से होती थी। जापानियों का हस्तक्षेप सहन नहीं किया जाता था।

राजा महेन्द्र प्रताप की जनरल मैकार्थर द्वारा गिरफ्तारी का विवरण पाठक पहले पृष्ठोंमें पढ़ चुके हैं। उनके सम्बन्धमें पूछने पर जापानी वैदेशिक विभागके मि० ओहताने एक प्रेस प्रतिनिधि को बतलाया कि जापान सरकार ने जनरल मैकार्थर के आदेश से राजा महेन्द्र प्रताप को गिरफ्तार कर अमरीकी अधिकारियों को सौंप दिया था। मि० ओहताने पुनः कहा कि जापान से भारत आने के पूर्व यह सम्वाद उन्होंने सुना था कि राजा महेन्द्र

प्रताप अमरीकी सरकार द्वारा ब्रिटिश सरकार को सौंपे गये हैं और भारत भेज दिये गये हैं।

कैप्टेन आर० एम० आर्शद ने फौजी अदालत के सामने गवाही देते हुए आजाद सेना के अन्तिम दिनों को स्थिति पर अच्छा प्रकाश डाला। आपने बताया कि आजाद सेना में सीनियर भारतीय अफसरों के सम्मिलित होने का कारण यह भावना भी थी कि भारतीय सेना मे ब्रिटिश अफसरों और भारतीय कमीशंड अफसरों के साथ होने वाले व्यवहार में बड़ा पक्षपात किया जाता है। भारतीय कमीशंड अफसरों को वह व्यवहार नहीं मिलता जो कि ब्रिटिश अफसरों को मिलता है। भारतीय सीमा में प्रवेश करनेके पश्चात् आजाद सर-कारके प्रधान श्री बोस ने यह घोषणा की थी कि स्वतन्त्र बनाये गये क्षेत्रोंका प्रबन्ध आजाद हिन्द सरकार करेगी। जापानी कमाण्डर ने अपनी घोषणा द्वारा इसका समर्थन किया था। जिस समय मणिपुर मे युद्ध जारी था, उस समय मेजर एम० जेड कियानी आजाद हिन्द दलकी सहायतासे स्वाधीन बनाये इलाकों का शासन करते थे। उस समय मारेह से कोहिमा विभाग के पालेल तक १५००० वर्ग मील भूमिपर आजाद सरकार का शासन था।

रंगून पर ब्रिटिशों के पुनः अधिकार की चर्चा करते हुए आपने बताया कि जापानी २३ अप्रैलसे रंगून खाली करनेमें

लगे थे। नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने २४ अप्रैल को रंगून छोड़ा। जाने के पूर्व आपने कर्नल लोकनाथन् को आजाद सेना की बर्मा कमान का—जनरल कमाण्डर और मुझे कर्नल लोकनाथन् के स्टाफ का मुखिया नियुक्त किया और रंगून स्थित भारतीय नागरिकों की देखरेख करनेका आदेश दिया। नेताजीने हमलोगोंको ब्रिटिश सेना के आने तक रंगून की व्यवस्था करने और तत्पश्चात् युद्ध बन्दी बन जानेकी आज्ञा दी थी और तदनुसार हमने रंगूनका शासन प्रारम्भ कर दिया। अबतक जापानी यहां से हट चुके थे। बर्मा रक्षा-वाहिनी के सैनिक या तो छिपे हुए थे या रंगून से दूर थे। उस समय आजाद सेना की संख्या वहां ५ से ६ हजार तक थी। आजाद सेना अलग अलग कैम्पों मे बिखरी हुई थी। पर हमने सबको एकत्र किया और रंगून में, गश्त, पहरा और संरक्षण का नक्शा बनाया। जापानियों के जाने के बाद रंगून में शासन नाम की कोई वस्तु नहीं रह गयी थी। हां, बर्मा सरकार का काम-चलाऊ एक मन्त्री था, परन्तु उसके पास पुलिस नहीं थी। आजाद सेना ने उसको स्वेच्छा से शासन प्रबन्ध मे सहयोग दिया। जाते समय जापानी यहां के चावल के गोदाम तथा और खाद्य-भण्डार खोलकर छोड़ गये थे। आजाद सेनाने वहां पहरे की व्यवस्था की जिससे दङ्गा-फसाद न हो जाय और इससे बर्मा सरकार को सूचित भी कर दिया।

उप संहार

२५ या २६ अप्रैल को मैं रंगूनके सेंट्रल जेल में पहुंचा— वहा शाही गगन सेना के विंग कमांडर हडसन और उनके १००० साथी युद्ध बन्दी थे। जापानी जाते समय जेल का दरवाजा खुला डाल गये थे। मैंने कमाण्डर हडसन को आजाद सेना के उद्देश्य और कार्य की रिपोर्ट दी और आगे के लिये उनकी आज्ञा माँगी। उनकी प्रेरणा का ही यह परिणाम था कि वर्मा रक्षा-वाहिनी ब्रिटिशों के अनुकूल होकर भी रंगून के शासन का अधिकार नहीं पा सकी। जापानियों द्वारा रंगून खाली करने के ६ दिन बाद तक मित्र सेना वहाँ नहीं पहुची। उसे भय था कि जापानी अभी वहां छिपे बैठे हैं। इसी बीच आजाद सेना रंगून का पूरा प्रबन्ध करती रही। सन्देह के कारण ब्रिटिश विमान वहाँ बम बरसाते थे। ब्रिटिश सेना ४ मई को तो भयानक बमवर्षा के द्वारा रंगून को वर्बाद करने की योजना भी बना चुकी थी। अन्त में बड़ी कठिनाई के बाद मैं सारी परिस्थिति ब्रिटिश सेनापति को बतला सका। तब कहीं जाकर ३ मई को ब्रिगेडियर लाउडर सेना समेत चले और ४ मई को रंगून पहुंचे। उन्होंने भी पहले आजाद सेनाकी पहरा आदि व्यवस्था जारी रहने दी। अन्त में ब्रिगेडियर लाउडर ने कर्नल लोकनाथन् को आज्ञा दी कि वे आजाद सिपाहियों से हथियार रखवा लें और उन्हें आजाद सेना के चिह्न छोड़कर रंगून सेन्ट्रल जेल तथा इनसीन जेल के

अहाते में एकत्र होनेका आदेश दें। जेल आजाद सेनाकी छावनी रहेगी, जहां आजाद सैनिक कैदी बनाकर नहीं, स्वतन्त्र रहेंगे। उन्होंने यह भी खुलासा कर दिया कि बाहर उपयुक्त स्थान न होने के कारण ये सैनिक जेल के अहाते में रखे जा रहे हैं। बैरकों के भीतर सैनिकों पर कोई प्रतिबन्ध नहीं रहेगा। कर्नल लोकनाथन् पहले की भांति उनके सेनापति बने रहेंगे। चिह्न छोड़नेके सम्बन्धमें जनरल ब्रिगेडियरने यह कहा कि आजाद सेना मित्रराष्ट्रों द्वारा स्वीकृत नहीं है। अतः यदि इनके सैनिक और अफसर आजाद सेना के चिह्न लगाकर बाहर निकलेंगे तो उनके प्रति मित्रराष्ट्रों के अफसर सम्मान प्रदर्शित नहीं करेंगे। इससे उपद्रव की आशंका रहेगी।" पर हथियार छोड़ते ही आजाद सेना जेल के भीतर बन्दी बना ली गयी और बाहर ब्रिटिश संतरियों का पहरा बैठा दिया गया।

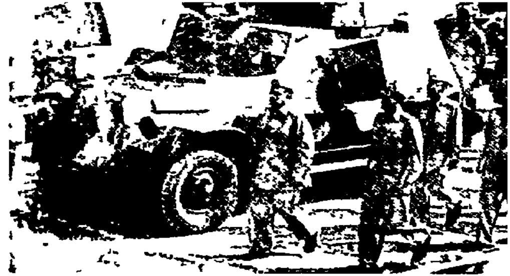
★★
★



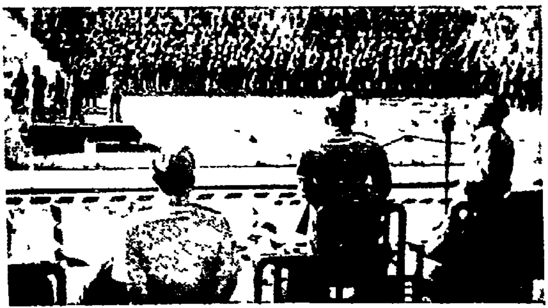
झांसी की रानी रेजीमेन्ट की कुछ सदस्याएं कैप्टेन लक्ष्मी बीच में बैठी है ।



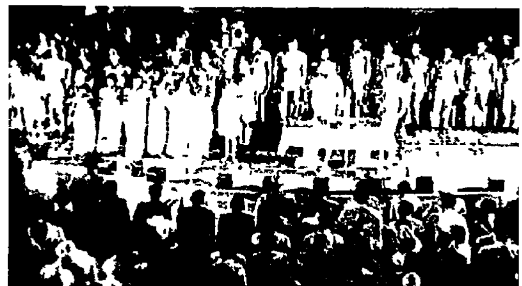
आज़ाद फौज युद्ध भूमि में ।



आज़ाद सेना की कूच



नेताजी परेड करा रहे हैं ।



नेताजी भाषण दे रहे हैं

दो ऐतिहासिक पत्र

नेताजी का मेजर ढिल्लन को पत्र

सरदार दफ्तर आला कमान

आजाद हिन्द फौज

रंगून १२ मार्च, १९४४

मेजर, जी० एस० ढिल्लन,

जय हिन्द !

मैं आपकी रेजिमेण्ट द्वारा किये गये कार्यों को ध्यान पूर्वक पूर्ण लगन के साथ देख रहा हूं और विपत्ति में जिस साहसके साथ आपने कठिनाइयों का सामना किया है उसके लिये आपको बधाई देता हू। वर्तमान विपत्ति मे मुझे आप पर पूरा भरोसा है।

इस ऐतिहासिक संघर्षमे हमारे साथ चाहे जो कुछ हो परन्तु पृथ्वी पर अब कोई ऐसी शक्ति नहीं है जो हिन्दुस्तानको और अधिक देर तक परतन्त्र रख सके। चाहे हम जीवित रहें और कार्य करें, चाहे हम लड़ते हुए मर जायं, हमे प्रत्येक स्थितिमें

यह पूर्ण निश्चय और विश्वास रखना है कि जिस उद्देश्य के लिए हम लड़ रहे हैं वह अवश्य सफल होगा। भारत की आजादी के मार्ग की तरफ यह ईश्वर का संकेत है। हमें केवल अपना कर्तव्य पूरा करना है और भारत की स्वाधीनता का मूल्य अदा करना है। मौजूदा लड़ाईमें, जो राष्ट्रीय स्वतन्त्रता का पथ प्रदर्शन कर रही है, हमारा हृदय आपके और आपके साथियों के साथ है। आपके और आपके मातहत अफसरों तथा सैनिकोंके प्रति मेरी आन्तरिक शुभकामना है। ईश्वर आपको शक्ति दे और आपको विजय का मुकुट पहनाये।

जय हिन्द

(हस्ताक्षर) सुभाषचन्द्र बसु

मेजर ढिल्लन का नेताजी को उत्तर

बर्मा, २० मार्च, १९४४

श्रद्धेय नेताजो

'जय हिन्द'

आपका १२ मार्च १९४४ का पत्र प्राप्त हुआ। शब्द नहीं केवल आंसू ही मेरी हृदयगत भावनाओं को प्रकट कर सकते हैं।

आपने मेरे तथा मेरे साथियों के प्रति जो विश्वास प्रकट किया है उसके लिए मैं आपको हार्दिक धन्यवाद देता हूं। नेताजी, मैं आपको अपनी रेजिमेण्ट की ओर से विश्वास दिलाता हूं कि हमारे रास्तेमें चाहे जो कुछ आवे हम आपके आदेशानुसार

लड़ाई जारी रखेंगे और भारतमाता की आजादी के लिए तब तक प्रयत्न करते रहेंगे जब तक इस रेजिमेण्टका एक भी सैनिक जिन्दा रहेगा। अपने सम्बन्धमें रंगूनमे कहे अपने अन्तिम शब्द, 'मैं आपकी आँखें किसी के सामने नीची न होने दूंगा'—मेरे कानों में, जब से मैं आपके पास से आया हूं और विशेष कर जब से मैं नयाऊंगू से लौटा हूं, लगातार गूंज रहे हैं। मैं पूरी तरह महसूस करता हूं कि उन परिस्थियों के बावजूद जो सामने आयीं, मैं वह करनेमें असफल रहा, जिसका मैंने वचन दिया और मै यही एकमात्र ऐसा रेजिमेण्टका कमाण्डर हूं जिसके कारण आपको और आजाद हिन्द फौजको नीचा देखना पड़ा। मैं मुंह दिखाने के योग्य नहीं, केवल मेरे कार्य ही इसका प्रतिकार करेंगे। आपके पत्र ने मेरे अन्दर नयी प्रेरणा भर दी है। मैं और सब अफसर तथा सैनिक जो यहाँ उपस्थित हैं, हृदय से, आपकी शुभकामनाएं स्वीकार करते हैं। हमें पूर्ण विश्वास है कि ईश्वर की कृपा और आपके आशीर्वाद से सफलता हासिल करना कठिन काम न होगा।

हम आपके चिरायु और स्वास्थ्य के लिए प्रार्थना करते हैं ताकि आप इस 'धर्मयुद्ध' मे हमारा पथ प्रदर्शन करते रहें।

जय हिन्द

आप महानुभाव का आज्ञाकारी,

जी० एस० ढिल्लन

कांग्रेस और आजाद हिन्द फौज

(लेखक—आचार्य जे० बी० कृपलानी)

(प्रधान मंत्री, आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी)

आज अहिंसात्मक, जापान विरोधी कांग्रेस वीर, देशभक्त किन्तु जापान के साथी आजाद हिन्द फौज के सदस्यों की सहायता क्यों कर रही है? स्वतन्त्र भारत ही सफलता पूर्वक जापान का मुकाबिला कर सकता है। इस विश्वास पर भारत छोडो आन्दोलन जापानी हमले की आशंका होने पर भी क्यों १९४२ में छेड़ा गया था? क्या, आज और तब के विश्वास और नीति में फर्क नहीं पड़ा है? ऐसे भाव कुछ कम गहराई से सोचने वाले प्रकट करते हैं।

प्रचलित नीति और कांग्रेस

ऐसे प्रश्नों को समझने के लिये गांधीजी के नेतृत्व में विकसित कांग्रेस का इतिहास देखना चाहिये। गांधीजी की नीति और सिद्धान्त को स्वीकार कर कांग्रेस शांतिपूर्ण वैध उपाय ही अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिये मान सकती है। न वह प्रचलित युद्ध नीतिको मानती है—न हिंसा को राष्ट्रीय आजादी के लिये मान सकती है। अन्तर्राष्ट्रीय युद्ध और शांति मे प्रचलित नीति को भी नहीं मानती। क्योंकि इस नीति के द्वारा हिंसात्मक युद्ध और विजय के लिये हर प्रकार के अस्त्र शस्त्रों का व्यवहार अनुचित नहीं।

कांग्रेस २० वर्ष से देशको गांधी नीति पर शिक्षित कर रही है। यह अहिंसात्मक प्रतिरोध की नीति है। स्पष्ट और ईमानदारी की नीति है। इन विचारों को अपनाने मे सच्चा रहने के लिये वह विदेशी सशस्त्र सहायक की मांग नहीं कर सकती। न जापान और जर्मनी से गुप्त संधि कर सकती है। क्योंकि ये सब बातें सशस्त्र प्रतिरोधके साथ ही हो सकती हैं।

युद्ध के साथ साथ भारत की जनता का भाव उसको अंग्रेजों से दूर करता जा रहा था। ये भाव बडी तेजी से बढ़ रहे थे। इस भाव के कारण ब्रिटिश प्रतिरोध के साथ भारतके कमजोर होने का भय था। तब बर्मा और मलाया की तरह इसके निस्सहायावस्था हो जाने की आशंका थी।

कांग्रेस की नीति और सर्वमान्य नीति

कांग्रेस ने पुरानी नयी सभी विदेशी दस्तंदाजियों को भारत के मामले में दूर करने के लिये प्रतिरोध की शक्ति बढ़ाने का उपाय किया। "भारत छोड़ो" प्रस्ताव इसी भाव का पोषक था। काग्रेस का विश्वास था कि यदि भारत बची हुई ब्रिटिश स्वेच्छाचारिता का विरोध नहीं कर सकता—तो युद्ध के समय और बढ़ जायेगी। नये आक्रान्त के योग्य भी न रह जायेगी। तब हमारी हालत बर्मा और मलाया की तरह होगी। जनता हतोत्साह हो जायेगी—वे उत्साहित हो जायेंगे। इस लिये काग्रेस प्रतिरोध की शक्ति को बढ़ाकर भारत को स्वतन्त्र कर लेना चाहती थी। क्योंकि उसका विश्वास था—कि जाग्रत और प्रतिरोध करने की शक्तिको बढ़ाकर स्वतन्त्र हुआ भारत ही जापानी हमले का सफलता पूर्वक सामना कर सकेगा। साम्राज्यवादी प्रतिरोध असमर्थ साबित हो चुका था।

सर्वमान्य नीति के उदाहरण

यदि काग्रेस अन्तर्राष्ट्रीय जगत् में प्रचलित सदाचार का अनुसरण करती—तो वह इंगलैंड पर पड़े खतरेसे लाभ उठाती। उसके दुश्मनोंसे छिपी संधि कर लेती। यह युगों की प्रचलित नीति की पुनरावृत्ति होती। राष्ट्रीय स्वतन्त्रता के लिये सभी देशोंने विदेशियों का साथ पाकर स्वतन्त्रता प्राप्त की है।

कॉंग्रेस और आज़ाद हिन्द फौज

कमजोर प्रबल का मुकाबिला करने के लिये उसके शत्रुओं से मिल जाता है। जैसे काटे को कांटा निकलता है। सामान्य शत्रुता मित्रता की यह सामान्य आधारभूत नीति है जिसके कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं:—

१—अमेरिकाने अपनी स्वतन्त्रताकी प्राप्तिके लिये मातृ-देश विरुद्ध फ्रासका साथ प्राप्त किया।

२—१६ वीं सदीमे इटालियन देशभक्त आजादीके लिये सभी यूरोपके देशोंसे आस्ट्रियाके विरुद्ध सहायता माग रहे थे।

३—पिछले १६१४ के युद्धमें फ्रांस और बेलजियमने ब्रिटिश सेनाको जर्मनीसे अपनी रक्षाके लिये बुलाया था।

४—स्पेनके घरेलू युद्धमें दोनों दल विदेशी सहायता खोज रहे थे। परन्तु स्पेनको कोई दल परतन्त्र नहीं देखना चाहता था। और विदेशी सेनाके आनेसे स्पेनके परतन्त्र होनेका भय नहीं समझता था।

५—फ्रांसने इस युद्धमे भी ब्रिटिश सेना बुलायी। इसे अनुचित नहीं माना गया।

६—विरुद्ध सिद्धान्त वाले होने पर भी रूस और ब्रिटेन मे सन्धि हो गयी। दोनों सामान्य शत्रुका मुकाबिला करनेके लिये मिल गये। वे जरूरतपर सेना भी एक दूसरेके देशोंमे भेजते रहे।

७—डा० बेनसने चेकोस्लोवाकिया की रक्षाके लिये विदेशी मदद ली।

८—जनरल डिगाले द्वारा फ्रांसके उद्धारके लिये फ्रांसिसियों के विरुद्ध विदेशी मदद लेने वाले जर्मन भक्त पीटेन और लावेल ही गोलीके शिकार बनाये गये हैं। यही वह सर्वमान्य नीति है—जो युगोंसे चालू है। लालकिलेके जज इसी नीतिके पक्षपाती हैं। अतः उस सदाचार के आधारपर आजाद हिन्द फौज निर्दोष हैं।

१९४२ में सुभाष बाबू देशके बाहर निकल गये। आप जेलके भयसे नहीं—किन्तु बेनम और डिगालेकी तरह विदेशी मदद देशकी आजादीके लिये पानेके लिये निकले। यह उतना ही देशभक्ति पूर्ण काम था—जितना किसी यूरोपियन देशभक्त का। जो यूरोपियन देशभक्त जेलसे या अपने देशसे इसी निमित्त भाग गये उनके इस काम की प्रशंसा ही की गई। शिवाजी अपनी बुद्धिमानीसे औरंगजेबके पंजेसे निकल भागे। कोई उसे राजनैतिक भूल नहीं कहता। बोवर युद्धमें चर्चिल भी पकड़े गये थे—वे भी भाग निकले। क्या उसे कभी धोखा और छल कहा गया है? क्योंकि वहा कैद ही अनुचित और सदाचार विरुद्ध थी। हम सुभाष बाबू को कांग्रेस की नीति से नहीं जाँच सकते। क्योंकि राष्ट्रोंने इसे नहीं माना है। केवल कांग्रेस संगठन ही एक ऐसा राजनैतिक संगठन है—जिसने इसे अभी तक माना है। संसार अभी उसी मान्य नीति पर चल रहा है। जो इस कांग्रेस नीतिको मानते हैं वे ही इस नीतिसे जांचे जा सकते हैं। दूसरे अपनी स्वीकृत मान्य नीतिसे ही जाचे जा सकते हैं। यदि

ऐसा न होता—तो पोलैण्ड, चीन और रूसके प्रति गांधीजी सहानुभूति क्यों प्रकट करते ? इसलिये सुभाष और उनके साथी आजाद हिन्द सैनिक भी उसी प्रकार माने जायंगे। उन वीर देशभक्तोंके प्रति जो आसामकी घाटीमे मर गये आज भी फांसी देनेकी सजाके लिये मुकद्दमेके फेरमे पड़े हैं। यह अन्याय होगा कि हम उनको कांग्रेसकी नीति से जांचें। लालकिलेके जज और अभियुक्त एक ही नीतिके मानने वाले हैं। व्यवहारके लिये हरेक का एक ही मापदण्ड सदाचारका नहीं होता—अध्यापकके समान वनियाका सदाचार नहीं होता। वनिये और वकील अपने पेशे के मापदण्डसे ही मापे जायेंगे। इस प्रकार कांग्रेस और राष्ट्रोंकी नीतिमें फर्क है। सुभाष वाबू और उनके साथी काग्रेसके मापदण्ड से नही नापे जा सकते। वे राष्ट्रों के अन्दर प्रचलित सदाचार की कसौटी को मानते थे। अतः वे वैसे ही देशभक्त है—जैसे दूसरे देशोके देशभक्त। जो अच्छा और देशभक्तिपूर्ण सदाचार इङ्गलैण्ड, फ्रांस और अमेरिकामें है—वह भारतमे क्यों नहीं रहेगा ? देशसे प्रेम, उसके लिये त्याग सभी देशोंमें मान्य गुण हैं। सदाचार या गणितके नियम देश २ मे वदलते नहीं रहते। दो और दो भारतमे भी चार ही रहेंगे।

वे जापानी खतरा भी समझते थे। अतः उन्होंने अपने पैरों पर अपनेको खड़ा किया। भारतमे गुलामीमे जो नहीं हो सका—वह आजाद भारतमें आसानीसे हो गया। हमे अंग्रेज और

जापानी अपनी सेना में नहीं रखने पड़े। भारत में आज तक सेनाका भारतीयकरण नहीं हो सका है। न सरकारी औफिसों का ही भारतीयकरण हो सका है।

राजनीतिमें प्रतिज्ञाका विशेष मूल्य राष्ट्रोंमें नहीं माना जाता। विची गवर्नमेन्टके अफ्रीकाके सरकारी कर्मचारियोंने भी प्रतिज्ञा तोड़ दी थी। राजाके प्रति भक्तिका अर्थ उसके व्यक्तित्वके प्रति नहीं माना जाता, किन्तु उसका अर्थ राष्ट्रप्रेम माना जाता है। राजा राष्ट्रकी मूर्ति माना जाता है। आस्ट्रेलिया-कनाडा, अफ्रीका ने इसी भावमें राजभक्ति की शपथ ली है। यदि राजा के प्रति शपथ मतलब होता—तो अष्टम एडवर्ड को मन्त्रि-मण्डल गद्दी त्यागने के लिये नहीं कह सकता था। इंगलैंड में "राजा चिरंजीवी हो—" यह कहते हुए देश-प्रेमियोंने राजाका शिर उतार लिया। अतः राजभक्तिकी शपथका अर्थ देशप्रेम ही होता है। इस अर्थमें आजाद हिन्द सैनिक ही सच्चे राजभक्त हैं। जिन्होंने देशके प्रति द्रोह किया है—राजद्रोही हैं। क्योंकि राजाके नामपर उन्होंने लोगोंको धोखा दिया है।

इस प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय और राजभक्तिके अर्थोंमें वे निर्दोष हैं। हम आजाद हिन्द फौजको नमस्कार करते हैं।

"जय हिन्द"

॥ समाप्त ॥